परमात्मने नमः ।

स्वर्गीय कविवर कुँअरलालजी कृत-

समवसरण पूजन विधान ।

JHALRAPATAN CITY

दोहा ।

पंच परमगुरु कों नमों, मन वच शीस नवाय ।
देहु बुद्धि मोकों सरस, पल पल करहु सहाय ॥ १ ॥

अडिल्ल-ज्ञानावरणी कर्म विनाश भयो सही,
नाश दर्शनावरणी निज आतम गही ।

मोह कर्म नस गयो महा दुखदाय जू,
अंतराय क्षय कियो परम पद पाय जू ॥ २ ॥

दोहा--श्रीजिनवर चौवीस को, समोसरन सुखदाय ।
पूजा सरस सुहावनी, वरनों जिन गुण गाय ॥ ३ ॥
प्रथम माँड़ने कों रचो, ताकी विधि सुखकार ।
सुनहु भव्य मन लायके, जिन शासन अनुसार ॥ ४ ॥

सुंदरी छंद ।

रचहिं माँड़नो जे बुधिवंत जी । प्रथम काम करें इम संत जी ॥
पाठ आदि रु अन्त विलोक कें । करहिं भ्यास भली विधि घोखिकें
सरस बुद्ध अनूप विचार कें । परम प्रीति सु उर में धार कें ॥
सफल नर भव जे नर करत हैं । करम पुंज सवै विधि हरत हैं ॥
तहाँ सो माँडनो सुंदर सोहनों । वनहिं या विधि सो मन मोहनों ॥
रचहिं माँड़नों जे नर संग जी । बुधि वढ़ावन जानि अभंग जी ॥

अथ चौसठ रिद्धि वर्णन ।

दोहा—पंच परम गुरु को नमों, नमों शारदा माय ।
चौसठ रिद्धि सहावनी, वरनन भाखों गाय ॥ ८ ॥

अडिल्ल—वज्र वृषभ नाराच संहनन जानिये,
सम चतुर संस्थान शरीर प्रमानियो ।
होय जवे छदमस्थ अवस्था पेखिये,
प्रापति रिद्धि जु आठ नैन भर देखिये ॥ ९ ॥
तिनके भेद जु चौंसठ भाखे सारजू,
कहे ग्रंथ में गाय सु नैन निहार जू ।
स्वल्प भेद यह भाखो सरस सुहावनों,
वाँचें पंडित लोग हरष उर लावनों ॥ १० ॥

सोरठा—प्रज्ञा केवल ज्ञान, भेद अठारह जानियो ।

इन आदिक परमाँन, देख हरख उर आनियो ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञा केवलज्ञानादि अठारह रिद्धिप्राप्ताय जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपा० ॥११॥

ऋद्धि विक्रिया सार, अनमा आदिक जानिये ।
ग्यारह भेद निहार, पाय परम सुख मानिये ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं विक्रिया अणिमादिग्यारह भेद ऋद्धि प्राप्ताय जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपा० ॥१२॥

रिद्धि सुवल सुखदाय, तीन भेद गनि लीजिये ।
मन अरु वचन सुकाय, गनिके पूरन कीजिये ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं तीन भेद लिये बल ऋद्धि प्राप्ताय जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपा मीति स्वाहा ॥१३॥

दोहा--जंघा चारन आदि दे, भेद सु नव पहिचान ।
क्रिया रिद्धि के जानिये, आगम देख बखान ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं जंघा चारणादि क्रिया ऋद्धि प्राप्ताय जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपा मीति० ॥१४॥

सोरठा---सात भेद सुखदाय, दीप्ति रिद्धि आदिक कहे ।
तप बिन मोक्ष न पाय, अष्ट कर्म तताक्षिन दहे ॥१५॥

ॐ ह्रीं तपऋद्धि दीप्तिऋद्धि आदि सात भेद लब्धि संयुक्ताय जिनेन्द्राय अर्घं० ॥१५॥

रिद्धि औषधी सार, आदि अमर सी पेखिये ।
भेद सु वसु सुखकार प्रापति सरस सुदेखिये ॥१६॥

ॐ ह्रीं औषध रिद्धि अमरी आदि वसु भेद संयुक्ताय जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपा० ॥१६॥

भेद सु छह परमान, रिद्धि सुरस के जानिये ।
आदि जान क्षीरान, परम प्रीति उर आनिये ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं रस ऋद्धि क्षीर अवनादि षट् भेद संयुक्ताय जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपा० ॥१७॥

दोहा—रिद्धि अक्षीन महानसी सब जीवन सुखकार ।
भेद दोय भाषे प्रभू भली भांति सुविचार ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं अक्षीण महानसर्द्धि दोय भेद संयुक्ताय जिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ॥ १८ ॥

अष्टादश ग्यारै गिना, तीन सु नव सुखकार ।
सात आठ छह जुगल गनि, चौंसठ रिद्धि विचार ॥१९॥

ॐ ह्रीं चौंसठ रिद्धि संयुक्ताय सर्वज्ञदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

अडिल्ल-चार घातिया घात प्रगट केवल भयो ।
जय जय जय जिनदेव करम रिपु कों जयो ॥
इन्द्र सुरग सौधर्म सभा मंडप कही ।
वैठो आँनन्द पाय सिंहासन पर सही ॥ २० ॥
अकस्मात तब मुकुट आप ही सों नयो ।
अवधि विचारी इन्द्र सु जिन केवल भयो ॥
धनद जक्ष कुं बुलाय पास अपनो लयो ।
श्री जिनवर पद पूज हुकुँम एसो दयो ॥ २१ ॥
त्रिभुवन पति जिनराज सु केवल निधि लही ।
समव सरण तुम जाय परम रचियो सही ।
इन्द्र हुकुँम को पाय धनद आवति भयो ।
जिनपद कमल विलोक भ्रमर ह्वै कें रम्यो ॥२२॥

श्री जिनवर को प्रथम शीस नावत भयो।
दे प्रदाक्षिना तीन परम सुख कों लयो॥
फेर नवत सिर नाय हरष उर लाय कें।
समव सरण की रचना रचत बनाँय कें॥ २३॥
नाना विध पुदगल परमाणू मणिमई।
जगमग जगमग जोति होत जग जे लई।
सूत कार है सार कुवेर बुलाय जी।
भाषे वर्णन कौन करे भवि लाल जी॥ २४॥
भक्ति लीन कछु भाषत भक्ति उपाय के।
हस्यो मती बुधि वंत छिमा उर लाय के॥
श्री जिन के गुनसार पार को लहतु है।
पूजत जे भव पाय कर्म अघ दहतु है॥ २५॥

सोरठा—समवसरण जिन ठाठ, योजन बारह आदि के ।
आधो आधो घाटि, बाइस लों मुख वादि के ॥२६॥
द्वै जिनवर शुभ ध्यान, समवसरन लक्ष्मी धरें ।
जोजन पाव सुपाव, कोटि सु दरशन अघ हरें ॥२७॥

आडिल्ल—समवसरण जिन वृषभ, तनो वरनन भनों ।
तेइस के क्रम हानि जानि मन में गनो ॥
योजन बारह माप भाग एते कहे ।
गनो पाँच से सत्तर छह ऊपर लहे ॥ २८ ॥
देख बड़ो विस्तार तथा छोटो सही ।
ता जाँगे की सूची इतनी ही लही ॥
सूची का विस्तार भाग से पाँच है ।
गिनों छिहत्तरि ऊपर मन धर साँच है ॥ २९ ॥

गोलाकार वनाय परम सुख सोहनों।
थूल परिधि तिगुना लखि भवि मन मोहनो ॥
तीस भाग ऊँचाई मन में मानियें।
शोभे चारों तरफ सिवान सुजानिये ॥ ३० ॥
दोहा---गनों पाँच से वीर तुम, अरू छिहत्तरि जानि।
सूची को व्योरो सुनो, परम प्रीति उर आनि ॥ ३१ ॥
मध्यभाग सेती लई गणती परम विशाल।
सूची वंध निहारियो यो जग दीन दयाल ॥ ३२ ॥
अड़िल्ल--श्री जिन मंडप मांहि भाग चौबीस ही।
तिसकी परिधि विशाल तहाँ वेदी कही ॥
पूरव पश्चिम भाग दोय मोटी ठिनों।
दोय तरफ के भाग मिलाय सवै गिनों ॥ ३३ ॥

आभ्यंतर के भाग वीस अरु च्यार हैं।
ए छव्वीस सु भाग परम सुखकार हैं॥
प्रथम सभा की भूमि तासु आगे कही।
दोय तरफ के भाग वीस जानों सही॥ ३४॥
भये छियालिस भाग परम सुखदाय जू।
ताक आगे कोट वज्र मय गाय जू॥
दोय तरफ के भाग दोइ शुभ लीजिये।
स्वेत वर्ण सुखदाय द्रगन लख लीजिये॥ ३५॥
आभ्यंतर छयालीस दोइ ए जानियो।
भये सु अड़तालीस जोरि मन आनियो॥
ताके आगे भूमि दूसरी राखिये।
सोहें मंदिर सार भाग तहां भाखिये॥ ३६॥

सूची गिनहु चवालिस शोभा सार है।
आभिंतर सो जोड़ करो निरधार है॥
भए वाँनवे भाग सरल शोभा लहें।
ताके आगे वेदी सुंदरता लहें॥ ३७॥
दोइ तरफ के भाग चार शुभ जानिये।
आभ्यंतर सो जोड़ि धरो मन आनिये॥
भये छ्यानवे भाग सहित वेदी कही।
कल्पवृक्ष की भूमि सु आगे है सही॥ ३८॥
दोऊ तरफ सु सूची भाग विचारिये।
भये अठासी भाग सु मन में धारिये॥
आभिंतर की सूची भाग मिलाइये।
भये एकसौ असी चार सुभ गाइये॥ ३९॥

स० ताके आगे कोट दूसरी दीखियें। वि०
सूची भाग सु आठ और दो लेखिये ॥
६ आभिंतर की सूची सों जु मिलाइये।
भये भाग सौ एक बाँनवे गाइये ॥ ४० ॥
धुजा भूमि चौथी के भाग सुजानिये।
गिनों अठासी सार तरफ दो मानियें ॥
आभ्यंतर सूची सों माप सु कीजिये।
भाग सु द्वै से असी जोड़ि के लीजिये ॥ ४१ ॥
तीजी बेदी सार तास आगे कही।
सूची भाग सु आठ तरफ दोऊ सही ॥ ६
आभ्यंतर की सूचि सों जु मिलाइ कें।
भाग सु द्वै से असी आठ धरि गाइ कें ॥ ४२ ॥

ताके आगे उपवन भूमि जु सोहनी।
सूची भाग अठासी दो दिस मोहनी ॥
आभ्यंतर की सूची भाग मिलाय के।
भाग तीन से सत्तरि छह भये आय के ॥ ४३ ॥
कोट तीसरो ता आगे विस्तार जू।
सूची भाग सु आठ दुतरफा धार जू ॥
आभ्यंतर की सूची जोड़ि गिनों सही।
भाग तीन सै असी चार गनि के लही ॥ ४४ ॥
पुष्प वाटिका छठी भूमि मन आनि कें।
भाग अठासी दोई तरफ के जान कें ॥
आभ्यंतर सूची सों माप सु ले गिनों।
भाग चार सौ सत्तरि द्वै मुनि नें भनों ॥ ४५ ॥

चौथी वेदी सरस भाग वसु लेखिये ।
द्वै तरफा की सूची भाग विसेखिये ॥
आभ्यंतर का सूची भाग मिले तहां ।
भये चार सौ असी जोड़ि दीनों जहां ॥ ४६ ॥
भूमि सातई सार खातिका जानिये ।
सूची भाग चवालिस दो दिस आनिये ॥
आभ्यंतर का सूची भाग मिलाय के ।
भाग पांच से चौबिस पूरे गाय के ॥ ४७ ॥
वेदी पंचम जान सरस शोभा धरें ।
सूची भाग सु चार दुतरफा विस्तरें ॥
आभ्यंतर की सूची भाग मिलाइये ।
भये पांच से भाग अठाविस गाइये ॥ ४८ ॥

चैत्य भूमि आठई नयन भर पेखिये ।
सूची भाग चवालिस दोउ दिस लेखिये ॥
आभ्यंतर सूची तें जोड़ वखानिये ।
भाग बहत्तरि गिनों पांच से धारिये ॥ ४९ ॥
ताके आगे धूली साल निहारिये ।
शोभा सरस विशाल सो उरमें धारिये ।
सूची भाग सु चार दोइ दिस की कही ।
आभ्यंतर की सूची भाग मिले सही ॥
भये पांच सौ सत्तरि छह सु प्रकार जू
रचौ माँडनों सार वरो शिवनार जू ॥ ५० ॥
कोट चार के भाग सु ग्यारै लीजिये ।
एक चार गनि चार दोय गनि लीजिये ॥

वेदी पांच विशाल भाग तेरह सही ।
एक दोय गनि चार चार दो यों कही ॥ ५१ ॥

दोहा–भूमि आठईं के जहां, भाग गनों मन लाय ।
द्वै से बावन मानियो श्री जिनवर सुखदाय ॥ ५२ ॥

आड़िल्ल–दश वाईस चवालिस सोहें सारजू ।
गिनों चवालिस सरस चवालिस धारजू ॥
लेहु चवालिस वाईस बाईस जानियों ।
भये सु द्वै से वीस जु बांवन मानियों ॥ ५३ ॥
कोट सु वेदी भूमि भाग सब लीजिये ।
भये छिहत्तरि बीर सु द्वै से कीजिये ॥
धरो पांच से बांवन द्वै विसतार जू ।
मध्य गनो चौवीस परम सुखकार जू ॥ ५४ ॥

दोहा—भये पांचसे सोहने, और छिहत्तरि जानि ।
रच्यो मांड़नों शुभ घरी, शुद्ध लगन हिय आनि ॥५५॥
समवसरण के पाठ को, रचौ मांड़नो धारि ।
ऐसी विधि अवलोक कें, रचना रची विचार ॥ ५६ ॥

इति श्री समवशरण माड़नो मूची भाग पांच सो छिहत्तरि विधि सम्पूर्णम् ॥

पंडित लक्षण [सवैया इकतीसा]

वालक न होय नहिं वृद्ध नहिं हीन अंग क्रोधी न अजान नहिं मूरख गनीजिये ।
दुष्ट नहिं होय नहिं विसन विषें सुरत पूजा पाठ वांचनें में बुद्धि सार लीजिये ।
दयाकर भीजि रह्यो होय सुहिरदो जास सुंदरसरूप पायदान सदा दीजिये ।
मीठे हैं वचन मुख अक्षर सु पुष्ट कहे गहे विनय गुरू की सुपंडित कहीजिये ॥५७॥
दोहा—सम्पूरन जामें सही कला, होय सुखकार ।
पंडित ताकों जानियें, पुन्यवंत सुविचार ॥ ५८ ॥

इतने जीवन को पूजा मने है । (सवैया इकतीसा)

२ कॉंनों अंध धूंध देर फूली आँख में सुजान कान कटे नाक कटी भँग अंग ठानिये ।

खोहो कुब्ज पंगु तोतुला सु भंग अंगुली न होय पेद गाँठि गूँगा श्वाँसा ओ प्रमानिये ॥
फोरा कोढ़ कच्छ दाद चवंसी अदाँठ जानि वहिरा भंगदर सु स्वेत दाग आनिये ।
चिमुन ओसात कान सीक रोग नाक वहै एते नर जीवन कों पूजा मने जानिये ॥

अथ नव तिलक वर्णन—

अडिल्ल--शिखा सीस की जानि लिलाट सु लीजिये ।
कंठ हृदय अरु कान भुजा सु गनीजिये ॥
कूँखि हाथ अरु नाभि सरस शुभ कीजिये ।
तव जिनवर कों जजो तिलक नव दीजिये ॥६०॥

आभूषण वर्णन ।

दोहा—श्री जिन की पूजा करें, सो नर इन्द्र समान ।
आभूषण पहिरे इते, सोलीजे पहिचान ॥ ६१ ॥

सुन्दरी छन्द ।

धरहि सीस सु मुकट सुहावनों, भुजन में वाजू वंद लावनों ।
करन कुंडल मणिमय सोहहीं रतन जड़ित कड़े मन मोहहीं ॥ ६२ ॥

सरस कंठ विषे कंठी कही, धुक धुकी अरु हार सु लह लही।
परम पहुँची पहिर सुहावने, जग मगाँत सो जोति कहा भने ॥६३॥
पहिर के सो जनेऊ सार जू, सरस कंधौनी मन धार जू।
रतन मय कटि मेखला जानिये, परम छुद्र सु घंटिक मानिये॥६४॥
पहिर अँगुरिन में दस मूँदरी, कनक रतन समूहन सों जरी।
रतन साँकल घुँघुरु पाँय में, झुन झुनात श्रवन सुखदाय में॥६५॥
दोहा—आभूषण ए पहिर के, पूजे जिनवर देव।
पाप पुंज सब नाशके, सुख पावे स्वयमेव॥ ६६॥

सामग्री वर्णन। सवैया छन्द॥

जल चंदन अक्षत प्रसून ले नेवज दीप धूप फल जानि।
धरती धरी गिरि धरती पर नाहि उठावत जे बुधिवान॥
पग सों लगी दुष्ट कोइ छूवे बहुत लोग सपरश नहिं ठान।
नीची कर करि लन चले सो मलिन वस्त्र नहिं ढकें सुजान॥६७॥

दोहा–इह विपरीत वचाय के सुद्ध द्रव्य सो धोय ।
ले जिनवर पूजा करें शिव तिय वल्लभ होय ॥ ६८ ॥
आडिल्ल–समवसरण की रचना सुदर कर तहाँ ।
धनद देव मन माहि विचार करै जहाँ ॥
में अपनी निज सकत जान रचना करी ।
फिर श्री जिनकीथुति निजमुखतें उच्चरी ॥ ६९ ॥

इति पाठ सम्पूर्णम्

अथ श्री धनपति द्वारा समवसरण रचकर पूजन करना ।

स्थापना (सुन्दरी छंद)

परम पावन सुंदर सोहनो । जगत जीव तने मन मोहनो ॥
चतुर वीस जिनेश्वर देव जू । चरण पूज करों नित सेवजू ॥

ॐ ह्रीं. चतुर्विंशतिजिनेन्द्रा अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रा अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रा अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं० ।

पद्म द्रह को नीर सु उज्ज्वल लीजिये ।
श्री जिन सन्मुख जाय सुधारा दीजिये ॥
चौवीसों जिनदेव जजूँ मन लायकें ।
हरष हिये में धार सु जिन गुण गायकें ॥७१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः तृषारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन केशर गारि कटोरी में धरों ।
श्री जिन चरन चढ़ाय सु शिवनारी वरों ॥ चौवीसों० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

देव जीर सुख दास आदि चांमर खरे ।
चन्द्र किरण सम उज्जल जिन आगें धरे ॥ चौवीसों० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कमल केतुकी पुष्प गुलाब सु लाइये ।
धारि प्रभु के आगे अति सुख पाइये ॥
चौवीसों जिनदेव जजों मन लायकें ।
हरष हिये में धार सुजिन गुण गायकें ॥७८॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गोझा फेनि सो हाल पुवा पापर खरे ।
देखत क्षुधा विलाय सु जिन आगे धरे ॥ चौवीसों० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मणिमय दीप अमोल सु जग मग जोति है ।
श्री जिन सन मुख धारि सुज्ञान उद्योत है ॥ चौवीसों० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कृष्णागरु वर धूप दशांगी खेइये ।

अष्ट करम भज जाँहि सु जिन पद सेइये ॥ चौवीसों०॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्री फल दाख वदाम सु पिस्ता लायकं ।
जिनवर चरण चढ़ाय सु शिवफल पायकें ॥ चौवीसों० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जल फल वसु विधि द्रव्य सु सुन्दर लायके ।
नाचें गाय बजाय सु अर्घ चढाय के ॥ चौवीसों० ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

राग द्वेष भय शोक क्षुधा चिन्ता घनी ।
व्याधि बुढापा जनम मरण निद्रा घनी ।
मोह पसीना खेद सु मद आरति हनी ।
विस्मय तृषा न जानि जानि त्रिभुवन धनी ॥७९॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय जिनेन्द्राय महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाल ।

अडिल्ल छंद ज्ञानावरणी घाति ज्ञान पायो महा ।
नाशि दर्शनावरणी अनंत दर्शन लहा ॥
मोह कर्म क्षय जानि परम सुख पाय जू ।
वीर्य अनंता भासि नासि अंतराय जू ॥८०॥

दोहा----समवसरण लक्ष्मी सहित चौवीसों जिनराय ।
जिनके गुन छियालीस शुभ सुनियो भवि मन लाय॥८२॥

॥ पद्धरी छंद ॥

जय चौवीसों जिनराज देव, जय सुरनर मिल नित करत सेव।
जय जनमत दश गुण धरे ईश, जय तिनकूं सुर पति नमतशीश॥
तन रहित पसीना मल न जानि, उज्जलसु दूध सम रुधिरआनि।
सम चतुर धरें संस्थान देव, तन वज्र मई शोभित सु एव ॥

सुंदर सु जगतमे और नाहिं । शुभगंध अधिक वपु जिन सु माहिं ॥
इक सहस आठ लक्षण जु सार । परकों हितकारी वचन धार ॥३॥
जय बल जु अनंत धरैं शरीर । दश अतिसय जानो भविक बीर ॥
जय केवल उपज्यो जगत देव । दश अतिशय प्रापति भई एव ॥४॥
दुरभिक्ष न वसुसै कोश जान । जय चलैं गगनमें इह प्रमान ॥
बध जीव न कबहूं होय सार । आहार रहित जिनवर विचार ॥५॥
उपसर्ग्ग न जिनकों होय धीर । चतुरानन दर्शन कहो वीर ॥
सब विद्याके ईश्वर महान । वपु छाया रहित हृदयँसु आन ॥६॥
पलसों न पलक लागै जिनेश । नखकेश न कबहूं बढ़ैं लेश ॥
केवल अतिशय दश भए सार । चौदह देवन रचियो विचार ॥७॥
जय मागधिभाषा प्रथम गाव । सब जीवनके मैत्री सु भाव ॥
सबऋतु फल फूल फले अपार । दरपन सम भूमि भई निहार ॥८॥

नीचेके पेजमें पाठ पढ़िये।

उपदेशोंसे भरी हुई श्रीपद्मनंदिपंचविंशतिका स्वाध्याय कीजिये।

यह संस्कृत ग्रंथ श्री पद्मनंदि आचार्यका बनाय हुआ जिसकी अनेक टीकायें मौजूद हैं परंतु वे सब टीकायें वर्तमानकी भाषा जानेवालोंकी समझमें नहीं आती उन्हीं लोगोंके हित वास्ते सुगम हिंदी भाषानुवाद सहित सुंदर देशी कागजपर मोटे अक्षरोंमें ५३० पृष्ठ खुलेपत्र शास्त्राकारगत्तों सहित तैयार है इसके विषयोंकी गणना तो नामहीसे प्रगट होती है इसलिये ज्यादह लिखना फजूल है विशेष आप ग्रंथ देखेंगे तो प्रसन्न होंगे न्योछावर ५) मात्रही है।

चारुदत्त चरित्र भाषा छन्दबन्द

जिस कविभूषण भारामलने शील कथादि उत्तमोत्तम पुस्तकें रचकर जैन साहित्यको गौरवान्वित किया है उन्हींकी कृति यह चारुदत्त चरित्र है। यह पुस्तक बिल्कुल ही अशुद्ध थी, हमने बड़े परिश्रम से और द्रव्य व्ययसे इस अमूल्यरत्न को शुद्ध करके धार्मिक भव्यजनो के हितार्थ सुवाच्य और बड़े टाईप में छपवाकर प्रकाशित किया है इसकी कथा इतनी प्रसिद्ध है कि उसका परिचय देना वृथा है। कपड़ेकी जिल्दकी न्योछावर १।) और सादीकी १)

पुस्तकें मिलनेका पता-श्री जैन भारतीभवन, पो०बनारस सिटी।

सब जीव परम आनंदकार, जय पवन गंध संजुक्त सार।
कंटक अरु धूल उड़े न वीर, गंधोदक बरषा होत धीर॥
जय दो से पाचिस कमल लाय, सुर रचित बहुत आनंद पाय।
धानादि अठारह जाति भेद, फल फूल सहित राजित उछेद॥
निरमल आकाश लसं अपार, दश दिशा सु निरमल दिपे सार।
जय जय जय देव करें अलाप, भवि जीव चले आवत सु आप॥
जै धर्म चक्र आगूँ सु जाय, देवन कृत चौदह कहे गाय।
जै प्रातिहार्य वसु सुनों सार, भवि जीवन को आनंद कार॥
जै वृक्ष अशोक दिपै अनूप, जै वृष्टि कुसुम की होई भूप।
जै बानी बरसे मेघ धार, जै चौसठ चमर ढुरै सु सार॥
जै सिंहासन उन्नति विशाल, भामंडल भव दीसें जु साल।
जै दुँदुभि शब्द बजै सु घोर, जै छत्र तीन शोभित सु जोर॥

जै प्राति हार्य वसु कहे गाय, अवनंत चतुष्टय सुनो भाय ।
श्री जिनकूँ ज्ञान अनंत जानि, दरशन तैसाही भी बखानि ॥
प्रभु सुख अनंत धारे सुधीर, वीरज सु अनंतो लखें वीर ।
दश दश चोदह वसु चार जानि, छ्यालीस जिनेश्वर गुन बखानि।
ऐसे गुन कर शोभित विशाल, तिन कूँ पूजत जिन कुँवर लाल।
सो करो कृपा हम पर विशाल, भवसागर पार करो दयाल ॥

दोहा-श्री जिन गुन छ्यालीस की माला रची बनाय ।
जो पहिरे भवि कंठ मे नित नित मंगल दाय ॥ ९९ ॥

ॐ ह्रीं जिनचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल–जो बाँचे यह पाठ सरस मन लायकें ।
सुनहु भव्य दे कान सु मन हरषाय कें ॥
धन धान्यादिक पुत्र पौत्र सम्पति धरें ।
नर सुर के सुख भोग बहुरि शिव तिय वरें ॥१००॥

इत्याशीर्वादः ॥

पूजा कर परदक्षिन तीन दये तहाँ ।
फिर फिर रूप विलोक शीस नायो जहाँ ॥
इन्द्र सुरग सौधर्म पास सो जायकें ।
विनय सहित कर जोर नमत सिर नायकें ॥
ठाड़ो कर जुग जोरि सु सनमुख इन्द्र सों ।
विनती करत बनाँय सु भाष-सुरिन्द्र सों ॥
समवसरण जिन राज तनी रचना रची ।
नाना विधि चित्राम रतन जड़ कें खची ॥॥ १ ॥
सुने वचन जब इन्द्र धनद के कानदे ।
बोल्यो अमृत वैन सरसता मान दे ॥
अवधि विचारी इन्द्र सरस शोभा लखी ।

तव लग आई शची वहुत सँग हैं सखी ॥ ३ ॥
सिंहासन ते उतर पेंड चल सातजू ।
सीस नाय मुख जै जै भाषत जातजू ॥
ततछिन सभा समेत महाँ सुख पाय जू ।
सव मिल नावत शीश हियें हरषाय जू ॥ ४ ॥
चल श्री जिनवर की पूजा कीजे जहाँ ।
इह विचार सव त्यार भये ततछिन तहाँ ॥
कर कर सव शृंगार परम सुखकार जू ।
हरष धारि के जै जै नाम उच्चार जू ॥ ५ ॥

॥ सुदरी छंद ॥

सरस शोभा कर सो जानिये । इन्द्र पुन्य विशेष प्रमानिये ।
पहिर आभूषन इतने गनों । इन्द्र आप परम सुन्दर वनों ॥

मुकट माँथेपर धारे सही। निकस ज्योति दसों दिश में लही।
लसत रत्न सु जग मग सार जू। श्रवन में कुंडल सुखकार जू ॥
हियें हार सु पहिर वनाँयके। कंठ में कंठी रही छायकें।
रतन जड़त कडे कर में लसें। सरस बाजू बंद भुज में वसें ॥
कटि विषें कंधोनी जानिये। परम छुद्र सु घंटक मानिये।
पहिर अँगुरि में दस मूदड़ी। कनक रतन समूहन सों जडी ॥
पहिर वस्त्र मिली कोंमल तहाँ। करत जै जै कार जु सुर जहाँ ॥
देख इन्द्र मनों इह जानिये। भूषनांग सु तरुवर मानिये ॥
प्रथम सुरग सु इन्द्र निहारिये। मन विषें वर धर्म सुधारिये ॥
परम पुन्य उदै को पायके। साजिय सैन सभी सुर जायकें ॥

अडिल्ल छंद—द्रव्य आठ परकार सु उज्जल जानिये।
कल्प वृक्ष सुरगनके तिनते आनिये ॥

महाँ पुनीत सु सुन्दर उज्जल लीजिये ।
सुवरन मय मणि जडित थार में कीजिये ॥ १२ ॥
झारी रतनन जडी वहत शोभे तहाँ ।
झिही वस्त्र सों द्रव्य ढाँकि सुन्दर जहाँ ॥
धारि उत्तम थल माँहि सुमन हरषायकें ।
करी तयारी तुरत सु मनवचकाय कें ॥ १३ ॥
आठ प्रकार सु द्रव्य ले सुन्दर सार जू ।
ऐरावत हाथी पर है असवार जू ॥
उज्जल चन्द्र समान सु नाग निहारिये ।
लालवरन नख जान हिये में धारिये ॥ १४ ॥

अथ इन्द्रविभूति ।

आडिल्ल छंद–नाग देव है नाग कियो सिंगार जू ।
नाना विधि आभूषन पहिरें सार जू ॥

घंटा अरु किंकिनी गले में जानिये।
रतन जड़ित तन पाखरि पहिर प्रमानिये ॥ १५ ॥
पाँयन में रतनन की साँकल पेखिये।
मस्तक सुडादंड विचित्र विशेखिये ॥
दंत सुफेद सु कोमल थल जु निहारिये।
कंचन रतन जड़ाव कड़े बहु धारिये ॥ १६ ॥
ऐसो हाथी सुन्दर तापर जानिये।
ह्वै असवार सु इन्द्र हरष हर आनिये ॥
इतनी सैन निहार संग लेके चले।
तीस वरन सु विशाल जानि भाख्यो भले ॥ १७ ॥
तीन प्रकार सभा के देव विचारिये ।
धरें काँति तन सार सु नैन निहारिये ॥

आभूषन सब पहिरें वस्त्र मिहीन जू।
परम हरष उर धारि भक्ति में लीन जू॥ १८ ॥
आभ्यंतर की सभा विषे सुर जानिये।
बारह सहस प्रमान हिये में आनिये॥
सूरज नाम सुदेव सभा नायक गनों।
मध्य सभा को वरनन अब सुंदर भनों॥ १९ ॥
चौदह सहस सुदेव धरें तन सारजू।
नायक देव प्रमान चन्द्र सुर धार जू॥
सोलह सहस सुदेव सभा तीजी कही।
जदपि नाम सुर जान सभा नायक सही॥ २० ॥
इन्द्र पास सो बैठे मन हरषाय कें।
देव जान सामान्य सु मन में लायके॥

चौरासी सु हजार जानि मन पेखिये ।
आभूषन सब पहिरें नैनन देखिये ॥ २१ ॥
सुरपतिके तन रक्षक देव विचारिये ।
तीन लाख छत्तीस सहस सु निहारिये ॥
इन्द्र आस अरु पास लिये हथियार जू ।
खड़े रहें कर जोरि इहै निरधार जू ॥ २२ ॥

. भुजंगप्रयात छंद ।

महाँ आठ देवी करें इन्द्र सेवी । रहें संग जेवी कही पट्टरानी ॥
शची और पद्मा शिवा जानि स्यामी ।
कलिंदा जु सुलसा भई षट प्रमानी ॥
कही सातमी नाम अजुका सु देवी ।
लसे सारभा नाम करे इन्द्र सेवी ॥

स० सु सोले हजारं हिये माँहि धारं ।
करें सेव सारं तनी एक देवी ॥ २३ ॥ वि०
दोहा–अब वल्लभिका सुभग सब देवी कहूं बखान ।
१७ एक लाख मर्याद है सबही गुनकी खान ॥ २४ ॥

सुंदरी छंद ।

देव तेतिस सुंदर जानिये, दृगन देख परम सुख मानिये ।
लगत प्यारे सुरपति कों सही, भाखि सार सिद्धान्त विषें कही २५
लोक पाल सु देव निहारिये, सभा नायक चार बिचारिये ॥
सोम जम अरु वरुन सु जानिये। गनि कुवेर सु नाम प्रमानिये २६
सात सेना वृषभ सु पेखिये, अश्व रथ हाथी द्रग देखिये ॥
जानि प्यादे गंधर्व सार जू, नृत्यकी ये सात विचार जू ॥ २७ ॥ १७
एक सेना वर्णन मानिये, कोटि एक छै लाख सु जानिये ॥
सहस अरसठि भाषे गायके, अब सु जोड़ो सात मिलायके ॥२८॥

सात करोड़ छियालिस लाखजू, सहस जान छिहैतर भाखजू॥
अब सु सेना एक निहारिये, वृषभ कक्ष सु सात विचारिये॥२९॥
प्रथम कक्ष सु संख्या आनिये, लसत दूनी दूनी जानिये॥
सबहिं दूना दून निहारिये, सातहीं कक्षा लग धारिये॥३०॥

सवैया ३१ मात्रा।

वृषभकी सैन सार सैना पति नाम धार दम इष्ट सुखकार नैननि सों देखिये।
चौरासी हजार जानि स्वेत बैल आदि मान एक लाख अरसठि हजार दूनी पेखिये॥
फूल दुपहरिया को रंग नैन देख ताको तीन लाख छत्तिस हजार तीजी लेखिये।
वृषभ सुरंग सार कंजी की सी उनहार लाखि छह बहत्तरि हजार चौथी विसेखिये॥
रंग जान हरो तन कांति बैल धरो लाख तेरह चवालिस हजार मन धारिये।
कंचन के रंग जान लाख ही छब्बीस मान अठासी हजार आनि छठई विचारिये॥
अंजनके रंग सार प्रेपन सु लाख धार सहस छिहत्तरि सो टेसू रंग आनिये।
जानि छहों ऐसे ही विचार मन वैसेही सुदेख नयन जैसे ही सु सात सेन जानिये॥

दोहा—या विधि सों सातों अनी गणती लेहु विचार ।
चले इन्द्र महाराज के संग सु नेन निहार ॥ ३२ ॥
सर्व वृषभ तहँ जोरिके एक किरोर सु जानि ।
अड़सट सहस सु लाख छह गनि कीजो परमानि॥३३॥

चाल विजै सेठ की ।

बने वृषभ सो जी, नाना विध सुंदर सही ।
रतनन की जी, पाखरि सुंदरता लही ॥
घंटा अरु जी, किंकिर्ना पहिरें सोहने ।
कोमल अति जी, आसन ऊपर को गिने ॥ ३४ ॥
तिन ऊपर जी, देवी देव सु पेखिये ।
कर जिन के जी, पटहा तूरज देखिये ॥
किनहू ने जी, कुसुम माल कर में लई ।
काहू के जी, हाथ रतन माला भई ॥ ३५ ॥

सिर मुकुट सु जी, धारें देव सुहावनें ।
सब भूषन जी, पहिरें तन मन भावनें ॥
नाना विध जी, नृत्य होय शुभ जानिये ।
ता थेई थेई जी, ताल देत परमानिये ॥ ३६ ॥
कौतूहल जी, करत देव भारी तहाँ ।
नाना विधजी, साज बजावत हैं जहाँ ॥
इक सेना जी, वरनन ऐसो जानिये ।
सातों को जी, याही विधि परमानिये ॥ ३७ ॥
बढती गनि जी, वरनन सरस सुपेखिये ।
भली भांति सु जी, सिद्धान्त सार में देखिये॥
बड़ो पुन्यसु जी, या जग माहिं निहारिये ।
सुरपति को जी, निज मन माहिं विचारिये॥३८॥

सुन्दरी छंद चाल ।

अश्व सेना सकल निहारिये, सात कक्ष सु देख विचारिये ।
१९ चलत बाँजि पवन गति धार हैं, बजत खुर मिरदंग निहारहैं॥३९॥
एक कोड़ छह लखि प्रमानिये, सहस अरसठ नायक जानिये ॥
देव हरदम नाम विचारिये, परम सुंदरता तन धारिये ॥ ४०॥

अडिल्ल छंद चाल—सेना रथ की जान कक्ष गनि सात जू ।
गनती ऊपर कही जान हरषात जू ॥
सेनापति मातुल शुभ नाम विचारिये ।
पहिया चार लिये रथ देख निहारिये ॥ ४१ ॥
कोइयक छतुरी धरें तीनि कोई जानिये ।
ऊपर कलशा सार धुजा परमानिये ॥ १९
बने सरस सुखकार सु रथ तहाँ पेखिये ।
जिन गुण गावत देवी देव सु देखिये ॥ ४२ ॥

सुन्दरी छंद चाल।

सेन गजकी सोभा सोहनी। कक्ष सात सु मनको मोहनी ॥
पूर्ववत संख्या सो देखिये। सेना नायक गजकी पेखिये ४३
सरस अम्बारी करि सोहने। गजमनोहर मन को मोहने ॥
रतन जड़ित सुपाखर सार जू। गले घंटा लटकत धार जू ४४
रतन साँकल पग विच जानियो। चित्र खचित सु मस्तक मानियो।
करत गुड गुड शब्द चले तबे। झिलत चवँर चलगज गन सबे४५
झरत मद मस्तक सु निहारिये। फिरत सूँड दशों दिस धारिये ॥
मनहु नील सु गिर यह जानिकें। जिन सु पूजत हर्ष सु आनि कें४६
लसत प्यादे सरस सुहावने। सैन एक सु मन में ल्यावने ॥
कक्ष सात सु सुंदर जानियो। पूर्व-वत संख्या सब मानियो।४७।
चले जात सु प्यादे पेखियो। रतन दँड धरे कर देखियो ॥
धुजन में ए चिन्ह सु जानियो। सिंह वृषभ सु दरपन मानियो॥४८॥

स० मोर सूरज सार निहारियो, गरुड़ चक्र सुमनहिं विचारियो। वि०
सभा नायक देव विजै सही, परम सुंदर शोभा तिन लही ॥
२० गान करत सु गंधर्व सेन जू, सात कक्ष लिये शुभ ऐन जू।
प्रथम गिनती भाषी गाइके, सप्त सुर धर गावत जायके ॥
षडज रिषभ गँधार सु जानियो, गनि सु सुंदर मध्यम मानियो।
गणि सु पंचम धौत रसाल जू, सुर निखात सु गावत लालजू ॥
आडिल्ल--शोभे सभा सु नायक सुरी निहारिये।
नीलांजना सु नाम देख सु विचारिये ॥
एक कोड़ि छह लाख सहस अरसठ सही।
हावभाव सों नृत्य करत शोभा लही ॥ ५२ ॥
सवैया ३१ तीसा। २०
विद्याधर कामदेव अर्ध राज धारी नृप सर्व पंडलेश राजा जानि गुण गावतीं।
बलदेव वासुदेव प्रति वासुदेव जान चक्रवर्ति विभौ वर्नन गावती बजावतीं ॥

चरम शरीरी देव इन्द्र विद्या धर सार गनधर सु देव रिद्धि धारी मुनि ध्यावतीं।
पंचहू कल्यानक जिनेन्द्र देव के सुजानि जिन गुण गाय सातों कक्ष। सुख पावतीं॥

अडिल्ल छंद-इन्द्र सुरग सौधर्म सैन वरणन करयो।
जानि लेहु बुधिवान वरन सुंदर धरयो॥
और इन्द्र के विभौ न इतनी पाइये।
इह लखि हर्ष बढ़ाय सु जिन गुण गाइये॥५४॥
बारह इन्द्र कलपवासी सु निहारिये।
वितर इन्द्र भवनवासी सु बिचारिये॥
और जोतिषी इन्द्र चले हरषाय कें।
सात अनी करि लीन विभूति सु पाइ कें॥ ५५॥
अपने अपने वाहन ह्वै असवार जू।
चले सु जै जै करत हरष उर धार जू॥

इन्द्र सुरग सौधर्म चल्यो आपुन जबै ।
सब सुर गण प्रति इन्द्र इन्द्र धाये सबै ॥ ५६ ॥
दशों दिशा नभ माहिं रहे सुर छायकें ।
जय २ कार उचार करें सुर गायकें ॥
देव चार प्रकार सरस शोभा लही ।
चम चमाति तन क्रांति परम सुन्दर सही ॥५७॥
धरें सीस सुर मुकट रतन जड़िकें सही ।
तिनतें निकसी किरन पूरि नभ में रही ॥
जग मगात आकाश कहा शोभा कहें ।
देख्यो जिन वह समय सुफल पद तिन लहें ॥५८॥
विद्याधर वँताड़ बिषें नृप जानिये ।
दोऊ सैंना जानि सरस परमानिये ॥

अपनी सेना सजे चले आवें तहाँ ।
जै जै मुख सों भाषत आवत है जहाँ ॥ ५९ ॥
आभूषण सिंगार करें तहाँ देखिये ।
नभमें चलें विमान सु बैठे पेखिये ॥
रतन जड़े सु विमान धुजा कलशा लसें ।
सुरगन वासी देव मनहुँ तिनकों हसें ॥ ६० ॥
सुर विद्याधर विभौ चले आकाश में ।
पटहा बीन मृदंग बजावत जासु में ॥
जिन गुण गान करत तन मन हरषायकें ।
जय २ कार करत कौतूहल धायकें ॥ ६१ ॥
ऐसी बिभौ सहित सब आयो जानियो ।
इन्द्र सुरग सौधर्म हरष उर आनियो ॥

स०

ऐरावत तें उतरि सीस तहां नाय कें।
समवशरण परदाक्षिण दीनी जाय कें ॥ ६२ ॥

इति इन्द्रविभूतिवर्णन सम्पूर्ण।

अथ मानस्थंभसम्बधी सिवाननके अर्घ लिख्यते [१२]

सुंदरी छंद।

दिस सु पूरव सुंदर पेखिये विजये। दरेवाजा सुविशेखिये ॥
चौक ता आगे जु सिवान है। करत वरनन परम प्रवान है ॥

ॐ ह्रीं पूर्वदिस विजय दरवाजे के आगे चौक ता आगे सिवान संयुक्त समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं ॥ १ ॥

बिजे बैजयंत सु दूसरो। गनि जयंन सु अपराजित धरो
नाम दरवाजे के जानिये। चौक और सिवान प्रमानिये ॥२॥

ॐ ह्रीं चार दिस चार दरवाजे चौक सिवान संयुक्त समोसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

वि०

गाणि हजार सु बीस सिवान जू। हस्त एक सु ऊँचे जानजू।
कोस एक लंबाई भाषिये। हस्त एक सो चौड़े राखिये॥

ॐ ह्रीं वृषभ देवके बीस हजार हाथ ऊँचे एक हाथ चौड़ एक कोस लम्बे सिवान संयुक्त समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं॥ ३॥

और तीर्थंकर तेईस के। भाषियो क्रम हानि सु ईश के।
चाहिये सो जहां जैसी कही। सरस बुद्धि विचार गहो सही॥

ॐ ह्रीं तेईस तीर्थंकरके क्रम हानि सिवान संयुक्त समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

धनुष पांच हजार प्रमानिये। हाथ बीस हजार सु जानिये।
तुर्य हाथ सु धनुष गनीजिये। सम सु भूमि उँचाई लीजिये॥५॥

ॐ ह्रीं चार हाथ धनुष प्रपाण पांच हजार धनुष समभूमतें समोसरणकी ऊँचाई विराजमान संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं॥ ५॥

दोई तरफ सिवानन के बनी। सरस वेदी सुंदर सोहनी।
धनुष साड़े सात से देखिये। गाणि मोटाई नैनन पेखिये॥६॥

ॐ ह्रीं वृषभदेवके साढ़े सातसै धनुष मोटी सिवान वेदी संयुक्त जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

बनी बैठक सुंदर सोहनी । परम वेदी ऊपर मोहनी ।
सरस शोभा करसु विशाल जू । खचित मणिमय मोती माल जू ॥

ॐ ह्रीं वेदीकी चौड़ाई ऊपर बैठकें नाना प्रकारकी शोभा सहित समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

अडिल्ल छंद—वेदी ऊपर कोठ सु गोल विशेषिये ।
मूल बिषैं गन सूची धनुष जु देखिये ॥
गनों सात सै साढ़े परम प्रमानिये ।
ऊपर गनों सु सूची छोटी जानिये ॥ ८ ॥
ऊपर कमलाकार पांखुरी सार जू ।
ता ऊपर शुभ बैठक सरस सु धार जू ॥
जग मग जग मग जोति होत सुखकार जू ।
नाचत देवी देव लहैं भव पार जू ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं वेदी ऊपर कूट गोलाकार मूल विषें सूची धनुष साढ़े सात सै की ऊपर छोटी तहां देव देवी बैठकें जिन गुण गावते समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं

गोल विराजे सार पहल तहँ जानिये ।
खंभा सहित सु छतुरी ऊपर मानिये ॥
ऊपर कलशा सरस विराजे सार जू ।
सुवरण माणि मंय जड़ित परम सुखकार जू ॥१०॥

ॐ ह्रीं खंभा पहल संजुक्त ऊपर छतुरी ता ऊपर कलशा युक्त बैठक सहित समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

बैठक दूजी को वर्नन अब जानिये ।
बैठकमें दरवाजे आठ सु मानिये ॥
तीन तीन दरवाजे सुंदर देखिये ।
आमूँ सामूँ एक एक सु विशेखिये ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं दूजी बैठकमें दरवाजे आठ तीन २ दर्वाजे एक एक आमूं साम्हें दर्वाजे सहित बैठक संयुक्त समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ११ ॥

वसु दरवाजे भाखे सुंदर गायकें ।
खंभा भी वसु जान बने शुभ लायकें ॥
ऊपर गुमठी तीन रहीं सुखकार जू ।
तिनपर कलशा ग्यारैं सुंदर धार जू ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं वसु दरवाजे वसु खँभा लिये तीन गुमटी ऊपर ग्यारह कलशा सहित बैठक संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

ऐसी दूजी बैठक कुं जु निहारिये ।
वेदी ऊपर बैठक बहुत बिचारिये ॥
बनी सु शोभा सार वरन कविको करै ।
रची आप धरणेन्द्र परम छबि को धरै ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं वेदी ऊपर बहुत बैठकें संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं ॥ १३ ॥

धनुष हजार सु पाँच उँचाई जानिये ।
प्रथम भूमि तें चढ ऊँचे परमानिये ॥
विजै नाम दरवाजो सुंदर सोहनों ।
ता आँगे चौक परम मन मोहनों ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं समभूमितें पांच हजार धनुष ऊंचा विजय दरवाजा ता आगे चौक सँयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

सरस चौक के दोऊ बगल सु जानियो ।
बनी बैठकें सुंदर मणि मय मानियो ॥
बीच रह्यो सू चौक सरस शोभा लियें ।
चित्र बने सु विशाल परम छवि कों कियें ॥१५॥

ॐ ह्रीं चौक के आगे दोई बगल बैठकें बनी हैं बीच में चौक नाना चित्राम कर संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

स० सरस बैठक और सिवान जू । गनि सु वेदी मणि मय मान जू । वि०
लसत छज्जे ताकिया देखिये । परम दल परदा सु बिशेखिये ॥
२५ ॐ ह्रीं इस भांति शोभा सहित समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घनिर्व० ॥ १६ ॥

सरस बंधन माल विसाल जू , रतनमाल सु मोतीमाल जू ।
लखि धुजा ऊपर फहरात हैं, मनों भव्यनकुँ जु बुलात हैं ॥
ॐ ह्रीं ऐसी शोभा कर संयुक्त बैठकें सहित समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं ॥ १७ ॥

दोहा--ऐसी बैठक में जहाँ देवी देव निहार ।
नर नारी जिनराजके जिन गुण गावें सार ॥ १८ ॥
ॐ ह्रीं ऐसी बैठकन विषें देव देवी नर नारी जिन गुण गावते संयुक्त
समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

आडिल्ल छंद--उपजे नाहीं खेद सिवानूपर चढ़े । २५
छिनक माहिं चढ़ जाय सु जिन आतिसे बढे ॥

इन्द्र नील मणि गोल सिला तहाँ देखिये ।
वृषभ देवके बारह योजन पेखिये ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं जिन अतिसय छिनक माहिं बिना खेदके सिवानन ऊपर सब जीव चढ़ि जाहिं वृषभदेवके नील मणि बारह योजन गोल सिला संयुक्त समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

तेइस के क्रम हानि जान लीजो सही ।
समोसरण की रचना ता ऊपर कही ॥
निर्मल शिला बिसाल झलक बहु तास में ।
सब विभूति प्रति बिंबित दीसत जास में ॥२०॥

ॐ ह्रीं समवसरणकी रचना झलक रही है जा विषें ऐसी निर्मल और जिनके क्रमहानि सिला संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति २०

समवसरण की विभव घेर कर जो रह्यो ।
धूली साल सु कोट परम सुंदर कह्यो ॥

स० मानों मानपोत्र गिर मन हरषाय के। वि०

सेवत जिन के चरन सु आपुन आइके ॥२१॥

ॐ ह्रीं--धूली साल कोट संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति २१

२६ पंच वरन के रतन चूर कर जो बनों।

इन्द्र धनुष की क्रान्ति धरें सुंदर मनों॥

कहूँ श्याम कहुँ हरित झलक पन्ना जिसी।

कहुँ कंचन कहुँ विद्रुम हीरा द्युति तिसी ॥२२॥

ॐ ह्रीं--पंच प्रकार के रतन चूरि कर बनाया, आकाश में फैलि रही है जोति जाकी ऐसी धूलि साल कोट संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं २२

काव्य छंद--श्री जिन को जु शरीर जानि चोगुनि ऊँचाई।

जोजन एक प्रमान भाग वसु चालिस गाई॥

दोय भाग मोटी सु मूल ऊपर घट जानों। २६

याविध ऊँचो धूल सु धूलीसाल बखानों॥ २३॥

ॐ ह्रीं—जिन शरीर तें चौगुनी ऊँची भूमि विषें भाग दोई मोटी ऊपर क्रम हानि धूलि साल कोट संयुक्त समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं ॥२३॥

दरवाजे हैं चार कोटके नाम सुनीजै।
विजै जान वैजयंत जयंत अपराजित लीजै।
बनें कँगूरा गुरज बैठके सब सुखदाई।
भव्य जीव जहां बैठिविलोकें दश दिस भाई॥२४॥

ॐ ह्रीं—चारों दिसा चार दरवाजे कँगूरा गुरज बैठकें सहित धूलिसाल सँयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

तीन लोक आकार कहूं दीसै सु निहारें
अधो लोक चित्राम नरक दुख तहां विचारें।
भविक देख चित्राम पाप सु तुरतहिं भागे।
तीन लोक में धर्म सार तासों चित लागे ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं-नाना प्रकार कर चित्राम संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २५ ॥

छप्पै-छंद—सिला बनी जु विशाल सिढीतें सूधी जानों।
चार गली दिस चार वृषभ जिन के इम मानों ॥
चौंड़ी कोस जु एक कोस तेईस जु लावी ।
दोई तरफ़ सु जान गली के वेदी भावी ॥ २६ ॥

दोहा—दो वेदीके बीचमें गली चौड़ाई आन ॥
ताको वर्नन अब करूं शोभे फटिक समान ॥ २७ ॥

ॐ ह्रीं सिला सिंघाननकी चार गली वृषभदेवके कोस एक चौंड़ी तेईस कोस लम्बी गलीकी दोई तरफ़ फटिक मणिमय वेदी संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २७ ॥

अडिल्ल छंद—चौंड़ी वेदी जान धनुष उर धार जु ।
गनों सातसे साढ़े बहु सुखकार जू ॥
वेदी गली सु जान लंबाई एक सी ।
तेइस के क्रस हानि जान लीजो सही ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं--वेदी साढे सात सै धनुष चौड़ी तेईस का क्रम हान वेदी संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २८ ॥

चार गलिनके बीच चार अंतर परे।
चार कोट अरु वेदी पांच बने खरे ॥
इन नव के अंतर वसु भूमि निहारिये।
मिला अंत में धूलीसाल विचारिये ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं- चार गली के बीच ४ अँतराल भूमि तामें चार कोट पांच वेदी इननव के अंतराल ८ भूमि मिला के परजंत धुलिसाल कोटकर सँयुक्ताय समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २९ ॥

वेदी कोट में इतना फरक विचारिये।
वेदी भीत समान सु मन में धारिये।
कोट तले चोड़ी सु घाट ऊपर लह्यो।
गनो चौगुनो ऊंचो जिन तनतें कह्यो ॥ ३० ॥

ॐ ह्रीं पांच वेदी भीतवत चार कोट मूल तें ऊपर क्रम हान जिनतन सें चौगुने ऊंचे वेदी कोट संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३० ॥

२८

वेदी पाँचों कँचन वर्ण सु जानियो ।
बने कँगूरा मंदिर ऊपर मानियो ।
लहकें धुजा बिशाल और रचनाघनी ।
वरनन को कवि कहे सरस शोभा बनी ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं—पाँच वेदी कँचन वर्ण कँगूरा मँदिर धुजा कर शोभायमान समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३१ ॥

सवैया इकतीसा ।

भूमि चैत्य परसाद प्रथम सुवेदी जान भूमि खातिका प्रमाण दूजी वेदी आनिये ।
पुष्प वाटिका सु भूमि आठों कोट दूसरो सु चौथी उपवन भूमि तीजी वेदी ठानिये ॥
पाँचई धुजा सु भूमि कोट तीसरो निहार कल्प वृक्ष भूमि छठी वेदी चौथी मानिये ।
सातई सु भूमि मंदिरन की सु चौथा कोट फटिक क रंग आठों सभा भूमि जानिये ३२

दोहा—वेदी पाँचम जानिये, तोक आँगू सार ।
चारि कोट वेदी सू पुन अंतराल वसु धार ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं-वेदी ५ कोट ४ अंतराल ८ इन विषें नाना प्रकार चित्राम कर संयुक्त अनेक रचना कर पूर्ण समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निवपामीति स्वाहा ॥

आडिल्ल छंद—चार कोट अरु वेदी पाँच प्रमानिये ।
एक तरफ के दरवाजे नव जानिये ॥
चार दिशा के छत्तिस दरवाजे कहे ।
शोभें परम बिशाल क्रांतिकर लह लहे॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं चारों दिस के ४ कोट वेदी ५ दरवाजे ३६ कर संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३४ ॥

प्रथम कोट अरु वेदी प्रथम निहारिये ।
तिन द्वारन में गली सु प्रथम विचारिये ।

ऐसेही दरवाजे और सु जानिये ।

तिन के बीच गली की भूमि प्रमानिये ॥ ३५ ॥

२९ ॐ ह्रीं प्रथम कोट प्रथम वेदी के द्वारन के बीच प्रथम गली की भूमि अन्य द्वारन के बीच द्वितीयादि गलिन की भूमि संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ॥ ३५ ॥

आठ भूमि सम्बन्धी आठ गलीं सहीं ।

दोई पारसुन विषैं फटक वेदीं कहीं ।

तिनके दरवाजे सु कपाट लगे तहाँ ।

झल झलात सुखकार लगे हीरा जहाँ ॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं आठ भूमि संम्बन्धी आठ गली तिनके दोइ पारसन विषै फटक मई वेदी दरवाजे अनेक वज्र मई कपाट संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ॥ २९

तिन गलीन तें भूमि विषैं जावे सही ।

तो इन द्वारन विषैं मनुष आवे तही ।

तिन पर बैठक बनी बहुत शोभा धरें।
राजत कलशा तुंग मनहुँ शिव को बरैं ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं आभ्यंतर गली दरवाजे संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं॥

सुन्दरी छंद।

कोट धूली साल सु जानिये, चार दरवाजे परमानिये।
वर्न कंचन मय सुखकार जू। झल झलात सु जगमग सार जू ३८॥

ॐ ह्रीं सुवर्ण मय चार दरवाजे कर युक्त धूली साल कोट समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३८ ॥

बीच के द्वै कोट सु जानिये, सरस वेदी चार वखानिये।
लसत दरवाजे चौवीस जू, बर्न स्वेत कहे मुनि ईस जू ॥३९॥

ॐ ह्रीं द्वै कोट चार वेदी चौवीस दरवाजे रूपामय संयुक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३९ ॥

फटक कोट सु सुंदर सार जू, तासु आभिंतर सु निहार जू।
लसत वेदी आठ सु द्वार जू, हरित बर्न किवार सु धार जू॥

ॐ ह्रीं फटक वर्ण मय कोट आभ्यंतर वेदी आठ द्वार हरित वर्ण कपाट संयुक्त
समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४० ॥

अडिल्ल छंद--दरवाजे सुंदर छत्तीस निहारिये ।
जिनवपु तें बारह गुन तुंग बिचारियें ॥
जानों ऊँचे वीर सु चौड़े अब भनों ।
जिन शरीर से जान चौगुना इम सुनों ॥४१॥

ॐ ह्रीं छत्तीस दरवाजे जिन शरीर तें बारह गुने ऊँचे चौगुने चौड़े संयुक्त
समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दरवाजे के दोई भाग सु देखिये ।
बनी बैठकें सुंदर नैनन पेखिये ॥
दरवाजे ऊपर बैठक तिहरी कही ।
तिनके ऊपर खंभा बहु शोभा लही ॥ ४२ ॥

ॐ ह्रीं दरवाजे के दोई भाग बैठक तिहरी कर संयुक्त स० स्थित जि० अर्घं ॥

तिनके ऊपर गुमटी बहुत बिचारिये।
छोटी छोटी जान अनेक निहारिये॥
ऊपर कलशा धुजा विराजे सोहने।
बैठे देवी देव सुजिन गुन को भने॥ ४३॥

ॐ ह्रीं ऐसी शोभा कर युक्त द्वार सहित समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं॥

तिनमें रतन मई तोरन शोभे तहाँ।
रतन माल अरु फूल माल घंटा जहाँ।
इनकी पंकति बनी सरस शोभा रची।
नाना बिध चित्राम सु रचना है खची॥ ४४॥

ॐ ह्रीं रतनमाल फूलमाल घंटा की पंकति दरवाजे कर युक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४४॥

तिन दरवाजिन में जु किवार रतन जड़े।
नाना बिध के जाल बंदरूमी कड़े॥

तिन में वृक्षाकार फूल फल्ली जड़ी।
जगमग जोत विलोक सुरी नाचें खड़ी ॥ ४५ ॥

ॐ ह्रीं दरवाजे अनेक शोभा युक्त समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं ॥

नव द्वारनके द्वारपाल ठाड़े भले।
तीन द्वार में जोतिषी दंडा लिये रले ॥
विंतर गुरज सु लियें दोय दरमें खड़े।
वासी भुवन सु द्वै दर मुदगर लै अड़े ॥ ४६ ॥

दोहा—गदा धरै द्वै दरन में ठाढ़े सुरवरवीर।
वासी कलप सु जानिये बड़ी बुद्धि धर धीर ॥

ॐ ह्रीं- द्वारपाल संयुक्त द्वार सहित समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं

सवैया ३१ सा--

चमर छत्र कारी अरु कलशा वने विशाल धुजा बीजना अठोना आरसी सु जानिये
मंगल सु द्रव्य सार नाम कहे हैं सु धार एकसो आठ एक २ को प्रमानिये

छत्तिस द्वारन की जु पारखें भई कितेक एकसो चवालीस प्रमान हिये आनियें।
सहस सु पन्द्रह विचारि और पाँच से बावन छह भये एक द्रव्य ठानिये ॥४८॥

दोहा—छत्र जु अष्ट गुने करो एक लाख परमान।
चौबिस सहस सु चारि से सोलह भये सु जान ॥ ४९ ॥

ॐ ह्रीं छत्तीस दरवाजे तिनकी मंगल द्रव्य एक लाख चौबीस हजार चारसो सोलह युक्त समोसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घं निर्व ॥ ४९ ॥

पांडु काल महाकाल ये मानव पदम सुजान ॥
पिंगल रत्न सु शंखसव नैसरपण परमान ॥ ५० ॥

सवैया ३१ सा--

पहली अन्न सारदेय जोग वस्तु दूजी जान भाजन सु तीजी चौथी आयुध सु जानिये। वस्त्र देव पंचमी सु छठी आभरन सार साँतई सु बाजे देत बाजत बखानिये ॥ आठँई सु रत्न देत नवमी सु ग्रेह देय देत सब सुखकार ऐसे परमानिये ॥ ऐसी निधै सार सु तो गाड़ा के आकार खड़ी लगे पहिया सु चार धन में न ठानियो ॥ ५१ ॥

दोहा—दरवाजे छत्तीस की भई पारखे सार ।

अधिक चवालिस एक सो परम प्रीत उर धार॥५२॥

पाँडु निधि पंद्रह सहस पाँच सै बावन जानि ।

इनको करो जु नौ गुनी कितनी भई सुमानि॥५३॥

उनतालीस हजार गनि एक लाख वर वीर ।

नव सै अरसठ कीजिये सब पारखनि में धीर॥५४॥

ॐ ह्रीं निधि सहित छत्तीस दरवाजे संजुक्त समोसरन स्थिति जिनेंद्राय अर्घ १८

आडिल्ल छंद—सोहे दरवाजे छत्तीस सुहावने ।

तिनके दोऊ पार्श्वें चौचौलाखने ॥

भए एकसौ चालिश चारि सुजानिये ।

गनौ पारखे वीर सुमन में आनिये ॥ ५५ ॥

तहा कंचन मनि जडित सुपरधा देषिये ।

ता ऊपर घटजाणि धूपकौपेषिये ॥

धूप सुगंध प्रवाह सु निकसत धायकैं। मानू मेघघटा झुक रही सु आयकैं।
उठी धूमकी घटा चलीआकाशकों। रहे सु अलिगन भूमि लहैं सुभ वासको
नाना विधि सुभ गंध धुआँ सु लिये सही कर्मकाठ जिन दहत मनो निकसी वही
ॐ ह्रीं धूपघट सहित द्वार संयुक्त समवशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ नृत्यशाला वर्णन। अड़िल्ल।

पहिली चौथी अंतर गली निहारियै। छट्टी अंतर गली सु मनमें धारियै॥
तहाँ नृत्यशाला सुंदर सु विशाल जू। नाचत देवी सुंदर दै दै ताल जू॥५८॥ ५

ॐ ह्रीं पहिली चौथी छट्टी गलीकी अंतर गली नृत्यशाला सहित दोऊ पार्श्व संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सवैया इकतीसा।

प्रथमगलीके दोऊ पारश्वैं विलोकि वीर ऊपर सु तिखने बने हैं सोभादार जू
एक नृत्यशाला विषैं बत्तिस अखाड़े जानि सोभैं धूपघटा दोय सुंदर सुधारजू

एक जो अखाड़ो तामे नाचतीं बतीस सुरीं नाचैं भवन वासिनी करैं कटाक्ष सारजू
बतीसको बतीसगुनो करौ हो सम्हारि बीर सुरी एकसहस सु चौबिस बिचारजू॥

दोहा—चारि दिशाकी जानियों, सोलह शाला आनि।
सोलह सहस सु तीनसौ, चौराशी सु बखानि ॥६०॥

ॐ ह्रीं सोलह नृत्यशाला सहित चारि दिशाके चारिद्वार संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल।

चौथी अंतर गली नृत्यशाला कही। कल्पवासिनी देवी नाचत हैं सही॥
एक सहस चौबीस एक पारस भनो। चारि पार्श्वैं जोड़ जानि कितने गनो॥
भए हजार सु चार छयानवे जानियों चारौ दिशा मिलाय जोड़ मनआनियों
सोलहसहस सुधार तीनसै सार जू। गिन चौरासी सरब परम सुख कार जू ६२

ॐ ह्रीं चौथीगलीमें कल्पवासिनी नृत्य करैं तथा और बरनन पूर्ववत् नृत्यशाला संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सवैया इकतीसा ।

छटई जु अंतरगलीकेविषैंजानि भई नाटशालाबत्तिस विराजत विशाल जू
सोहत सु पचखने नृत्य करैंज्योतिषिनी नानाविधिगान करैं देत समताल जू
बत्तिस हजार सातसै सुरीं विलोकि वीर नाचत जु अरसठ गावत सु ख्याल जू
बर्ननकरोबनाय नृत्यशालाको सुगाय परमसु प्रीतिलाय भाषतसु लाल जू

ॐ ह्रीं छट्टीगली विषैं अंतर गली बत्तीस नृत्यशाला सहित द्वार संयुक्त समवशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा—नृत्य करैं हरषाय, पैंसठि सहस सु पाँचसै।
छत्तिस सुरीं सु गाय, चौंसठिशालाके विषैं ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं पहिली चौथी गली विषैं अंतर गली चौंसठि नृत्यशाला सहित द्वार संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अड़िल्ल ।

फिर सिवान पर चढ़ि सुरपति तहँ पेखियै।धूलीसाल सुकोट नैन भर देखियै

विजै नाम दरवाजे भीतर जायकैं। पूजत मानस्थंभ सरस सुख पायकैं ॥६५॥

दोहा– मानस्थं सु मूलमें, प्रतिमा श्रीभगवान।
दे प्रदक्षिणा तीन जो, पूजत इंद्र समान ॥ ६६ ॥

अथ पूरवदिशाके मानस्थंभ स्थित जिनेंद्र प्रतिमाकी इंद्र पूजा करैं हैं।

अडिल्ल।

मानस्थंभ अनूपम सुंदर सोहनो। मान रहित सब होंहि देखि मन मोहनो॥
पूरब दिशिकों जानि परमसुखदायजू पूजत मनबचकाय भविकसुखपायजू

ॐ ह्रीं पूरवदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं पूरवादिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं पूरवदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक-अडिल्ल।

पदमद्रहको नीर सु उज्वल लीजियै। सनमुख ह्वै जिनराज धार शुभ दीजियै
पूरब मानस्थंभ जिनेश्वर पूजियै। नाचत गाय बजाय सु हरषित हूजियै॥१॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व० स्वा०
चंदन केसर गारि कपूर मिलाईयै। श्रीजिनचरनचढाय परम सुख पाइयै॥
पूरब मानस्थंभजिनेश्वर पूजियै। नाचत गाय बजायसु हरखित हूजियै॥२
ॐ ह्रीं पूरवदिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यः संसारातापविनाशनाय चंदनं निर्व० स्वा०
चंद्रकिरन सम उज्वल तंदुल पावने। पुंजधरों जिनअग्र परम मन भावने॥
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजियै।नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजियै ॥३
ॐ ह्रीं पूरवदिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥
कमल केतुकी बेल चमेली वास है। श्रीजिनके पदपूज काम सब नाश है॥
पूरब मानस्थंभ जिनेश्वर पूजियै। नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये४
ॐ ह्रीं पूरवदिसि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यःकामबानविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० स्वा०
गोझाफेनि सुहाल सु मोदक साजहीं। पूजजिनेश्वरपांय छुधादुख भाजहीं॥
पूरब मानस्थंभ जिनेश्वर पूजियै नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजियै॥५॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशिमानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं निर्व० स्वा०

मनिमय दीपक जोय सु जग मग जोति है,मोहतिमिरकोनाशि सुजैजे होतिहै
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजियै,नाचत गायबजाय सुहरखित हूजियै ॥६॥

ॐ ह्रीं पूरवादिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप सुगंध सुलैकरि जिनपद सेइयै। अष्ट कर्म ह्वै नाश अगिनमें खेइयै॥
पूरव मानस्थंभजिनेश्वर पूजियै । नाचत गायबजाय सु हरषित हूजियै॥

ॐ ह्रीं पूरवादिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफललौंगसुपारीपिस्तालावहीं प्रभुकेचरनचढ़ायसुसिवफलपावहीं॥
पूरव मानस्थंभजिनेश्वर पूजियै, नाचतगायबजायसुहरषितहूजियै॥८॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलचंदनइत्यादिकअर्घसँजोयकैं,जिनपूजतभविलालसुहरषितहोयकैं॥
पूरव मानस्थंभजिनेश्वर पूजियै। नाचत गाय बजाय सु हरषित हूजियै॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ दक्षिणदिशा मानस्थंभास्थित जिनप्रतिमाकी पूजा ।

अडिल्ल ।

मनस्थंभ अनूपम सुंदर देखियै । सुर नर मुनि मनहरत सु नैनौं पेखियै ॥
समोशरणमेंदक्षिणदिसासुहावनी।पूजतभविजनलोगसुजिनगुनगावनी ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्थंभास्थित जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक सुंदरी छंद ।

सरस उज्वल नीर सु लीजियै । धार श्रीजिन चरन सु दीजियै ॥
त्रिविधि योग सु उज्वल हूजियै । थंभ मानस दक्खिन पूजियै ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्थंभास्थित जिनेंद्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्व०स्वा०

मलयसार सु केसर गारियै । पूजि जिन भवदाह निवारियै ॥
त्रिविधि योग सु उज्वल हूजियै । थंभ मानस दक्षिण पूजियै ॥२॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्थंभास्थित जिनेंद्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व०स्वा०

चंद्र जोति समान सु अछतं। पुञ्ज देत अखयनिधि गच्छतं ॥
त्रिविधि योग सु उज्वल हूजियै। थंभ मानस दक्षिण पूजियै ॥३॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वा०

कमल कुंद गुलाब सु लाइयै। मदन नाश सु हर्ष उपाइयै ॥
त्रिविधि योग सु उज्वल हूजियै। थंभ मानस दक्खिन पूजियै ॥४॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यः कामबानविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० स्वा०

सरस मोदक व्यंजन साजहीं। छुधारोग सु देखत भाजहीं ॥
त्रिविधि योग सु उज्वल हूजियै। थंभमानस दक्षिण पूजियै ॥५॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०स्वा०

दीप मनिमय जग मग जोति है। मोह नाशि सु जैजै होति है ॥
त्रिविधि योग सु उज्वल हूजियै। थंभमानस दक्खिन पूजियै ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वा०

अगरु कुंकुम गंध मिलावहीं। खेय कर्म सु अष्ट जरावहीं॥
त्रिविधि योग सु उज्वल हूजियै। थंभमानस दक्खिन पूजियै॥ ७॥

ॐ ह्रीं दक्षिण दिशि मानस्थंभस्थित जिनेंद्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वा०

फल सु उत्तम सुंदर लै धरों। जिन सु पूजत शिवनारी वरों॥
त्रिविधि योग सु उज्वल हूजियै। थंभमानस दक्खिन पूजियै॥ ८॥

ॐ ह्रीं दक्षिण दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वा०

धरत भव्य सु अर्घ बनायकैं। सफल करत सु नरभव पायकैं॥
त्रिविध योग सु उज्वल हूजियै। थंभमानस दक्खिण पूजियै॥ ९॥

ॐ ह्रीं दक्षिण दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पश्चिम दिशा मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा पूजा। सुंदरी।

सरस सुंदरता कर देखियै। परम पावन सुंदर पेखियै॥
लसत मानस्थंभ सुहावनो। दिशि सु पश्चिममें मन भावनो॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टक-सोरठा ।

उज्वल नीर सु आनि, रतन जड़ित झारी भरों ।
मानसथंभ महान, पश्चिम दिशि पूजा करों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन केसर गारि, जिन पूजत भव तप हरों ।
मानसथंभ महान, पश्चिम दिशि पूजा करों ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यश्चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुल चंद्र समान, पुंज सु जिनआगें धरों ।
मानसथंभ महान, पश्चिम दिशि पूजा करों ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल केतुकी आन, देखत काम सु थरहरो।
मानस्थंभ महान, पश्चिम दिशि पूजा करौं॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभास्थित जिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वा०।

बहुत भांति पकवान, छुधारोग देखत डरो।
मानस्थंभ महान, पश्चिम दिशि पूजा करौं॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभास्थित जिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीप प्रकाश, मोह देखि आपुहि डरो।
मानस्थंभ महान, पश्चिम दिशि पूजा करौं ॥ ६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभास्थित जिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांग सुजान, खेवत आठ करम जरैं।
मानस्थंभ महान, पश्चिम दिशि पूजा करौं॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभास्थित जिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फल सुखदाय, पूजिजिनेश्वर शिवबरौं ॥
मानस्थंभ महान, पश्चिम दिशि पूजा करौं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठौ द्रव्य सु ठान, अर्घ चढ़ाय सु जग तरौं ।
मानस्थंभ महान, पश्चिम दिशि पूजा करौं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिम दिशा मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथोत्तरदिशा मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा पूजा ।

दोहा—श्रीजिन मानस्थंभके, पूजत मनबचकाय ।
उत्तर दिशा सुहावनी, जे जे जे जिनराय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशामानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कंचन झारी उज्वल जल लै श्रीजिन चरन चढ़ाऊं।
भाव सहित श्रीजिनपद पूजौं जनमजनम सुखपाऊँ॥
मानस्थंभके उत्तर दिशिमें श्रीजिनबिंब सुहावें।
देखत हरष होत भविजीवन पूजत सुर शिव पावैं॥ १॥

ॐ ह्रीं उत्तर दिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुम केशर सरस सुवासी खासी लै कर गारौ।
भव आतप निर्वारन कारन श्रीजिनपद पर धारौ॥
मानस्थंभके उत्तरदिशिमें श्रीजिनबिंब सुहावें।
देखत हरष होतभविजीवन पूजत सुरशिव पावें॥ २॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभास्थित जिनप्रतिमाभ्यश्चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल उनहार सु तंदुल कांति चंद्रकी धारैं।
पुंज करों जिनवर पद आगें अक्षय पद विस्तारैं॥

मानस्थंभके उत्तरदिशिमें श्रीजिनबिंब सुहावें।
देखत हरष होत भविजीवन पूजत सुरशिव पावैं॥ ३॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतुकी बेल चमेली भ्रमर गुँजारैं जापै।
पूजत श्रीजिन चरन मनोहर काम न आवै तापै॥
मानस्थंभके उत्तरदिशिमें श्रीजिनबिंब सुहावें।
देखत हरष होत भविजीवन पूजत सुरशिव पावैं॥ ४॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी घेवर तुरत सु घीके लाडू गोझा लावैं।
रोगछुधा निरवारन कारन श्रीजिनचरन चढ़ावैं॥
मानस्थंभके उत्तरदिशिमें श्रीजिनबिंब सुहावें॥
देखत हरष होत भविजीवन पूजत सुर शिव पावैं॥ ५॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मनिमय दीप अमोलक लैकें कनक रकावी धारौं ।
मोहतिमरके नाशन कारन जग मग जोति उजारौं ॥
मानस्थंभके उत्तरदिशिमें श्रीजिनबिंब सुहावें ।
देखत हरष होत भविजीवन पूजत सुर शिव पावें ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप सुगंध समूह अनूपम खेय अगिनमें घालौं ।
अष्टकरम ये दुष्ट भयानक इनको तुरतहि जालौं ॥
मानस्थम्भके उत्तरदिशिमें श्रीजिनबिंब सुहावें ।
देखत हरष होत भविजीवन पूजत सुर शिव पावें ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्व० स्वाहा ।

लौंग लायची श्रीफल सुंदर पिस्ता जाति घनेरा ।

पूजि जिनेश्वर शिवफल पैंये सुरगादिक सुख केरा ॥
मानस्थंभके उत्तरदिशिमें श्रीजिनबिंब सुहावें ।
देखत हरष होत भविजीवन पूजत सुर शिव पावें ॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभास्थित जिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठ दरब ले अर्घ सँजोयो पूजों श्रीजिन भाई ।
भवसागरतैं पार उतारौ जै जै जै जिनराई ॥
मानस्थंभके उत्तरदिशिमें श्रीजिनबिंब सुहावें ।
देखत हरष होत भविजीवन पूजत सुर शिव पावैं ॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्थंभास्थित जिनप्रतिमाभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ मानस्थंभके चारौ दिशाकी जयमाल ।

दोहा—चारौ दिशा सुहावनी , मानस्थंभ विशाल ।
सुर नर मुनि पूजा करैं, लाल भनेजयमाल ॥१०॥

छंद पद्धड़ी।

जय जय श्रीमानस्थंभ सार। जय नमन करों निजशीशधार ॥
जय जय ताको वरनन विशाल। जे सुनतहिं छूटैं जगत जाल ॥२॥
जय प्रथमगलीके मध्य जान। जे दरबाजे सुभचार मान ॥
जय जय तहँकोट सु तीन वीर। जे तिनपर लहकैं धुजा धीर ॥३॥
जय प्रथमकोट दूजा सु ठान। जे तीजाकोट कहूं बखान ॥
जय कोट बीचमे भूमि गाय। तहँ बने सु बन सुंन्दर सुहाय॥ ४॥
जय कोकिल तिनमे करत सोर। जय सोभित सोभाकरि सु जोर ॥
जय लोकपालके नगर सार। जय शोभित हैं नाना प्रकार॥ ५॥
जय अभ्यंतर तीजा सु कोट। जय तीनपीठ सोहैं सु मोट ॥
जय त्रयकटनी करि सोभमान। बैडूर्य रतनकी कांति जान ॥ ६॥
पहिली दूजी मनिमय विशाल। सब बरनरतन तीजी दयाल ॥

जय बृषभदेवके त्रय विचार । ऊंची वसु धनुष सु चार चार ॥ ७॥
तेइस जिनके क्रम हान जान । जय चौड़ी तीजीपीठ आन ॥
इक सहस धनुष भाषे सु गाय । जय बृषभदेवके इह बताय ॥ ८ ॥
तापर श्रीमानस्थंभ सार । सोभित नीचे चौकोर धार ॥
जय ऊपर गोलाकार जान । जे अति उतंग दै दीप्य मान ॥ ९ ॥
जय पहल सहस दो जगमगात । जै बज्रमई नीचे सुहात ॥
जय लसैं फटिकमय बीच मान । मनि बैडूर्य सम ऊर्ध जान ॥ १० ॥
जय तापर कमल बनो सरूप । जापर कलशा सोभैं अनूप ॥
जय दंड धुजा तापर सुहात । जै जगमग जगमग लहलहात ॥११॥
जय घंटा चमर सु छत्र जान । जै रतनमाल माला प्रमान ॥
जय नाना मनिमय सोभकार । राजत सो मानस्थंभ सार ॥ १२ ॥

ता मूल सु चारौदिशि निहार । जिनप्रतिमा सोहैं परम सार ॥
सुरगण पूजत जैजै उचार । नाचत ता थेइ थेइ हरष धार ॥१३॥
वसु प्रातहार्य राजत सु पर्म । जे देखि तिन्हैं नाशैं जु कर्म ॥
जय पंच रतनमय अति सु रंग । जे मानस्थंभ दिपै अभंग ॥ १४ ॥
जय मानी मान रहै न कोय । जे मानस्थंभ विलोक सोय ॥
जय मानीजन सब मान छोड़ि । देखत नावतशिर हाथजोड़ ॥ १५ ॥
जय तासें मानस्थंभ नाम । पायो सुंदर शोभा ऽ भिराम ॥
नवसै नब्बै वसु धनुष लीन । चौड़ाई* गनि लीजौ प्रवीन ॥ १६ ॥
छह सहस धनुष ऊंचो प्रमान । बारह जोजनतैं लखै जान ॥
जय ऐसे मानस्थंभ सार । जे चारिदिशा आनंदकार ॥ १७ ॥

---

* किसी २ पुस्तक में ऐसा भी पाठ है=विस्तार मूल सूची प्रवीन ।

ताके चहुंदिशि वापी सु चार । जै एकदिशामें एक सार ॥
जय उज्वल जलमे कमल फुले । जै मानू भूमहिं नैनखुले ॥ १८ ॥
जिनराज विभौ देखन जु सार । धारे बहु नैन किये सिंगार ॥
तिन कमलनपर अलि रहे छाय। मानू अंजन भुवि दृग लगाय ॥१९॥
जय चारौदिशि सोलह प्रमान । नंदोत्तर आदिक नाम जान ॥
जय मनिमय पैड़ी लसैं सार । जै हंस चकव नाचत सुधार ॥२०॥
जय तिनको उज्वल जल सुलाय। जै पूजत भवि जिनराज पाय ॥
जय तिनके पास सु कुंड दोय । कंचनमनिजड़ित विलोकि लोय ॥ २१ ॥
जे श्रीजिनवर पूजत सु जाय । ते पगधौवत आनंद पाय ॥
इकवापी संग कहे सु गाय । दो कुंड जान मणिमय सुलाय ॥ २२ ॥
जय जय इह वरनन करोसार । कवि कौन लहै जिनविभौ पार ॥

पूरबदिशि बरनन कियो एम । दक्षिणदिशि लखियो भव्य तेम ॥ २३ ॥
पच्छिम उत्तर योंहीं बखान । चहुँदिशि चहुं मानस्थंभ जान ॥
*
॥ २४ ॥
पर तुच्छ बुद्धि भविलाल पाय। जे जे जे जे जिन माल गाय ॥
उपदेश दयो सबसुख जु राय । तब लालजीत भाषा बनाय ॥२५॥
दोहा—श्रीजिन मानस्थंभकी, गुनमाला सु विशाल ।
जो नर पहिरैं कंठमे, सुर शिव पावैं हाल ॥ २६ ॥

ॐ ह्रीं चारौंदिशा सम्बन्धी मानस्थंभस्थित जिनप्रतिमाभ्यो अर्घं निर्व० स्वाहा०

अडिल्ल ।

जो बांचैं इहपाठ सरस मनलायकैं। सुनै भव्य धरिध्यान सु मन हरषायकैं

---

* कहीं २ पाठ में तुके छूटी हैं उसी २ जगह पर लिखने की जगह छोड़ दीनी हैं सो पुरानी प्रति से मिलान कर पढ़ें जिस प्रति में पाठ पूरा देखें इसमें भी लिख देवें और हमें भी लिखकर भेज दें तो हम आप के अभारी होंगे और पुनरावृतिमें सम्हार देंगे ।

धन धान्यादिक पुत्रपौत्रसंपति धरै, नरसुरकेसुखभोगि बहुरि शिवतियवरै

इत्याशीर्वादः ।

इति मानस्थंभ चारौदिशि पूजा सम्पूर्ण ।

अथ प्रथम प्रासाद भूमिपूजा छंद सुन्दरी ।

प्रथम भूमि गलीकी जानियै । तहँ सु मानस्थंभ प्रमानियै ॥
तासु बांई दहिनी ओर जू । सरस दरबाजे शुभ जोर जू ॥१॥
जानि आभ्यंतर अंतर गली । प्रथम भूमि महाछविसौं रली ॥
भूमिचैत्य सु मंदिरकी कही । परम सुन्दरता करि बनि रही ॥२॥

ॐ ह्रीं प्रथमगलीके दरवाजे बांईदाहिनी ओर अंतरगलीकेविषैं चैत्यमंदिरस्थजिनेंद्राय अर्घं

दोहा—प्रथमकोट बेदी प्रथम, दो दो भाग बखान ।
चैत्यभूमि ता बीचमें, बाइस भाग प्रमान ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं कोट बेदी चैत्य मंदिर भूमि वलय व्यास संयुक्त समवशरणस्थ जिनेंद्राय अघ ।

मद अवलिप्तकपोल छंद।

पांच पांच मंदिरनवीच जिनमंदिर जानो।
प्रथम जानि अग्नेय सु नैऋतदूजी आनो॥
बाइव अरु ईसान चारविदिशा जु बखानी।
इसहीमें जिनभवन जजैं सुरशिव सुखदानी॥

ॐ ह्रीं चारौं विदिशा विषैं पांच पांच मंदिरनवीचजिनमंदिर संस्थिताय अर्घं निर्व०स्वा०

सोरठा—तासु भूमिको जान, बलय व्यास सु विचार जू।
बायव भाग बखान, भाषों जिन सुखकार जू॥ ५॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमि बायवदिशाविषैं बलयव्याससंयुक्त समोशरणस्थजिनेंद्राय अर्घं निर्व०स्वा०

अड़िल्ल।

चैत्यभूमि मंदिर सु तनी तुम जानियो, बनी बावड़ी तालवृक्षपरमानियों
नानाविधि रचना करि शोभित भूमि जू, देवी देव विद्याधर छाए भूमिजू

ॐ ह्रीं चैत्यभूमि मंदिरन सरोवर वापिका तालवृक्ष संयुक्ताय जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

सरस सरोवर सार वापिका पेखिये, तिनमेंबने शिवान सु नैनन देखिये
आभ्यंतर वापिका सु ऊपर जानियो, बनी बैठकें सुंदर परम प्रमानियों
ॐ ह्रीं चैत्यभूमि सरोवर वापिका शिवान बैठकें संयुक्ताय चैत्य मंदिरस्थजिनेंद्राय अर्घं निर्व०
चारि कोन बापीके थंभ सु चार जू, ताके ऊपर छतरी सोभादार जू
शिखरबंध कलशा सु धुजा लहकें तहां, मंद पवन मिरदंगपाय नाचैंजहां
ॐ ह्रीं चारिकोन वापी कलशाधुजा सहित चैत्यमंदिरस्थ जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०।
नानाविधिके वृक्षवद्ध श्रेनी कहे, छहऋतुके फल फूल बहुतसोलहलहे
मनहुंजिनेश्वरचरन पूजिबेकों चले, ऐसी सोभा लियेंसरससुंदर रले॥९॥
ॐ ह्रीं छहऋतुके वृक्षश्रेणीवद्ध फल फूल संयुक्त चैत्यमंदिरस्थ जिनेंद्राय अर्घं निं० स्वा०।
तिन वृक्षनकी साखा सुंदर सारजू, मंद पवनको पाय परम हितधारजू
नम्रीभूत सु भई मनू नाचैं सही, शोभै वृक्ष महान सु सुंदरतालही ॥१०॥
ॐ ह्रीं अनेकशाखासहित वृक्षकरि शोभित भूमि चैत्यमंदिरस्थ जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वा०।

तिन वृक्षनके तलेंशिला सुखकार जू, चंद्रकांति है नाम कांति शशि धारजू
ऐसीं शिला विशाल बहुत शोभैंतहां, श्रीमुनिराज समूह विराजत हैं जहां

ॐ ह्रीं चैत्यभूमि वृक्षतलें अनेक शिलापर मुनि समूह सहित चैत्यमंदिरस्थ जिनेंद्राय अर्घं नि०

कैसे हैं मुनिराज दयाके धाम जू, संसारी जो भोग त्याग अभिराम जू
परम उदासीदसा धरैं सो जानियै, देखिदशा वैराग्य जगै परमानियै॥१२॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमिविषैं ऐसे मुनिराज विराजमान संयुक्त चैत्यमंदिरस्थ जिनेंद्राय अर्घं नि०।

ऐसीशिलाविशालसुथिरछैतासुपै, निज आतमको दर्शन देखतजासुपै
जीव समूहनकों सो धरम बतावते, अनागार सागार भेद द्वै गावते॥१३॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमिविषैं शिलापर महामुनि दोयविधि धर्मोपदेशदातारसहित चैत्यमंदिरस्थ जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

करमपुंजछयकरैंमहामुनिराजजू, तिनवचनामृतसुनेसुआतमकाजजू
तुरतजगैवैराग्यसुदरशविशालजू, ऐसेश्रीमुनिचरननमेभविलालजू १४

ॐ ह्रीं चैत्यभूमिविषैं करमपुंजदहत मुनिराज विराजमान संयुक्ताय चैत्यमंदिर स्थिताय अर्घं

छंद सुंदरी।

सरस शोभा करि सो जानियै। पाँच मंदिर परम प्रमानियै॥
बनि रहीं तिनमें गौखें तहां। लसत छज्जा थंभ सु हैं जहां॥१५॥
बँधी बन्दनमाल विशाल जू। लसत मोती रतन सु माल जू॥
भरि रहे सुर विद्याधर जहां। राग रंग अनेक करैं तहां॥१६॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमिस्थपांच मंदिर अनेक शोभा संयुक्ताय जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वाहा।

बनि रहे चित्राम सु सार जू। पांच मंदिरमें सुखकार जू॥
भूमि मंदिरको बरनन कहो। सार सुंदरता लखिकें गहो॥१७॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमिस्थ मंदिर अनेक रचना संयुक्ताय जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ अग्नेयदिशा चैत्यभूमि मंदिर जिन पूजा सुंदरी छंद।

प्रथम भूमि सु मंदिरकी कही। जानि दिशि अगनेय विषैं सही॥

पूजियै जिनविम्ब सु जानिकैं । करहु आह्वानन विधि ठानिकैं ॥

अथ नैऋत्य दिशा पूजा अडिल्ल ।

प्रथमभूमिमंदिरनतनीसोभैंजहां । दिशाजानिनैऋत्यपरमसुंदर तहां ॥
श्रीजिनवरकेविम्बमनोहरपूजियै, करहुथापनाभव्यसुसनमुखहूजियै ॥

अथ वायवदिशा स्थापना जोगीरासा ।

भूमि मंदिरनकी सुखकारी पहिली जानो भाई ।
पूजौ वायवदिशा अनूपम जिनमंदिर सुखदाई ॥
श्रीजिनमंदिर सोहत सुंदर सुरनरमुनि मिलि पूजैं ।
आह्वानन करियै मन दैकैं श्रीजिन सनमुख हूजै ॥

अथ ईशान दिशा स्थापना गीता ।

श्री प्रथम भूमि निहार भविजन जान मंदिर सोहनो ।
श्रीजिन सु बिम्ब विराजमान सु ध्यान धर मन मोहनो ॥

पूजौ सु मनवचकाय लाय दिशा गिनो ईसान जू।
करहु आह्वानन सु सुंदर जजहु जिन शुभथान जू॥

ॐ ह्रीं चारौंदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं चारौंदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं चारौंदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अष्टक मदावलिप्त कपोल छंद।

हिमवन परवत सार तहां यह पदम निहारौ।
ताको उज्वल नीर लाय जिन सनमुख धारौ॥
भूमि मंदिरन तनी जहां जिनभवन विराजैं।
पांच मंदिरन वीच जजूं सुर शिव पद काजैं॥१॥

ॐ ह्रीं चारौंदिशा सम्बंधि चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनेंद्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुम चंदन सार तासुमें केसरि गारौं।

श्रीजिन सनमुख जाय पूजि भवताप निवारौं ॥
भूमि मंदिरन तनी जहां जिनभवन विराजैं ।
पांच मंदिरन बीच जजूं सुरशिव पद काजैं ॥२॥

ॐ ह्रीं चारौदिशा सम्बन्धि चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनेंद्रेभ्यश्चंदन निर्वपामीति स्वाहा ।

देवजीर सुखदास सरस मुक्ताफल अक्षत ।
अक्षयपदको पाय सु पूजत हौं अघ गच्छत ॥
भूमि मंदिरन तनी जहां जिनभवन विराजैं ।
पांच मंदिरन बीच जजूं सुरशिवपद काजैं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं चारौदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वा०

कमल केतुकी कुंद चमेली बेल्हा सारं ।
लै गुलाब जिनजजूं तुरत भजिजात सु मारं ॥
भूमि मंदिरन तनी जहां जिनभवन विराजैं ।

पांच मंदिरन बीच जजूं सुर शिवपद काजैं ॥४॥

ॐ ह्रीं चारौदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वा०।

फेनी गोझा सरस पुआ धर पापर ताते।
जजूं जिनेश्वर चरन छुधादिक रोग नशाते॥
भूमि मंदिरन तनी जहां जिनभवन विराजैं।
पांच मंदिरन बीच जजूं सुरशिवपद काजैं ॥५॥

ॐ ह्रीं चारौदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

मनिमय दीप अमोल कनक थालीमें धारैं।
जगमग जगमग जोति मोहतम नशत उजारैं॥
भूमि मंदिरन तनी जहां जिनभवन विराजैं।
पांच मंदिरन बीच जजूं सुरशिवपद काजैं ॥६॥

ॐ ह्रीं चारौदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्व० स्वाहा।

कृस्नागरु करपूर कूट धर धूप दशंगी।
करम पुंज जर जांय खेयकें धूप सुरंगी॥
भूमि मंदिरन तनी जहां जिनभवन विराजैं।
पांच मंदिरन बीच जजूं सुरशिवपद काजैं॥७॥

ॐ ह्रीं चारौदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वा०।

श्रीफल अरु बांदाम लौंग सुंदर सुपयारी।
जजूं जिनेश्वर चरन बरों शिवसुंदरि नारी॥
भूमि मंदिरन तनी जहां जिनभवन विराजैं।
पांच मंदिरन बीच जजूं सुरशिवपद काजैं॥८॥

ॐ ह्रीं चारौदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्व० स्वाहा।

जल फल अर्घ बनाय परम उतकृष्टि सु धारी।

अर्घ देहिं जनलाल सु जिनपद जज बलिहारी॥
भूमि मंदिरन तनी जहां जिनभवन विराजैं।
पांच मंदिरन बीच जजूं सुरशिवपद काजैं॥६॥

ॐ ह्रीं चारौंदिशा सम्बन्धी चैत्यभूमि मंदिरस्थ जिनप्रतिबिम्बेभ्यो अर्घं निर्व० स्वा०।

दोहा—चैत्य भूमि मंदिरनकी, पूजा भई विसाल।
जय जय जय सुर करत है, लाल भने जयमाल॥ १०॥

पद्धड़ी छंद।

जय जय जय प्रथम सु भूमि जानि। जय जिनमंदिर तामें बखान॥
जय ताको बरनन बहु विशाल। सुनियो भवि मनवच दै त्रिकाल॥११॥
जय नील रतन मय भूमि सार। जय तापर जिनमंदिर अपार॥
श्रेनी बध पांच कहे विचारि। जय बीच जिनेश्वर भवन धारि॥१२॥
जय तुंग भूमि सोहै विशाल। तापर जिन मंदिर बहु रसाल॥

जय जिनग्रह तोरनसहित द्वार । जय तिनके आगें चौक धार ॥१३॥
जय लगे शिवान जु सोभकार । जय मणिमय रतन जड़े निहार ॥
जय चारि जु दरबाजे अनूप । आभ्यंतर रचना सुनौ भूप ॥१४॥
जय पूजक जिनके थित सुथान । बनि रहे जहां मणि रंजमान ॥
जय कोठा तीन दिशा सु जान । जय चारौ दिशि बारह प्रमान॥१५॥
जय तिन पर गुमटी शोभकार । जय कलशा ता ऊपर निहार ॥
जय तापर धुजा अनूप सार । लहकैं मानौं सो नृत्य धार ॥१६॥
जय आस पास कोठा सु आन । जय रह्यो बीचमें चौक मान ॥
ताके सु बीचमें पीठ तीन । जे शिखर बद्ध मंडफ सु कीन ॥१७॥
तापर कलशा अरु धुजा जानि । जय जग मगात आनंद खानि ॥
जय आभ्यंतर मंडफ सु सार । जय तीनि पीठि शोभैं निहार॥ १८॥

जय तापर गंधकुटी अनूप । जय सिंहासन सोहैं सु भूप ॥
जय तापर कमल विराजमान । जय सहस पत्र ताके प्रमान ॥१९॥
मणिजड़ित सुज्योतिजगीअपार। मनु पूरब दिशि रवि उदय सार ॥
जय तापर श्री अरहंतदेव । शिर तीनि छत्र सोभै स्वमेव॥२०॥
जय राजत जिन बहु विभौधीर । जय तिनकों मेरो नमन बीर ॥
जय रतनमाल मोती सु माल । लटकैं शोभा दीपै विशाल ॥२१॥
जय इंद्र देव चारौ प्रकार । जय पूजैं जिनवर हरष धार ॥
जय वसु विधि पूजा करैं सार । जय थेइ थेइ थेइ आरति उतार ॥२२॥
जय नचैं देव देवी अपार । बाजत समाज आनंद कार ॥
जय सुर नर विद्याधर महान । जय जिनगुण गानकरैं बखान ॥२३॥
जय नाना विधि चित्राम सार । बनि रहे सु जगमग ज्योतिकार ॥

कहुँ तेरह द्वीप तनो प्रमान । कहुँ ढाई द्वीप तनो सुजान ॥२४॥
जय चारिसैऽठावन भवन पेखि । बनि रहे चित्र नयनन सु देखि ॥
जय जय तुम देव दया निधान । कवि कौन करै ताको बखान ॥२५॥
गणधर थुति करत हिये बिचारि । जय ते तुम गुण पावत न पार ॥
॥२६॥
जय तुच्छ बुद्धि मेरी निहारि । बुधिवंत लोग लीजो सुधारि ॥
उपदेश दयो सबसुख जु राय । जन 'लालजीत, भाषा बनाय ॥२७॥

धत्ता—दोहा ॥ श्रीजिनमंदिर भूमिकी, कही आरती गाय ।
जो नर बाँचै भावसों, नित नित मंगल दाय ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं चारौंदिशा सम्बन्धी चैत्य भूमिमंदिरस्थ जिनबिंबेभ्यो पूर्णार्घं निर्व० स्वा० ।

अडिल्ल ।

जो बाँचै यह पाठ सरस मन लायकैं। सुनै भव्य दैकान सु मनहरषायकैं॥

धनधान्यादिकपुत्रपौत्रसंपति करै,नरसुरके सुखभोगि बहुरिशिवतियवरै

इत्यासीर्वादः ।

इति चैत्यभूमि संबंधि पूजा समाप्तः ।

अथ खातिका भूमि सम्बंधि अर्घवर्णन अड़िल्ल ।

दूजी गली विशाल भूमिका जानिये। वामदाहिनी ओर अंतर गलि मानिये
दरवाजे आभ्यंतर भूमि सु दूसरी,नाम खातिका जानि स्वच्छजलसौंभरी

ॐ ह्रीं गलीके बाईदाहिनी ओर अंतरगली विषैं द्वितीय खातिकाभूमिसंयुक्तसमोशरणस्थ जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तासु वलय अरु व्यास भाग बाईस जू। भाषों श्रीसरवज्ञ परम जगदीश जू॥
खाईरतननजड़ितशिवाननकरिरली। शोभासरसबखानकरैकविकोवली।२

ॐ ह्रीं दूजी खातिकाभूमि वलयव्यास भाग बाईस रतनशिवानसंयुक्तसमोशरणस्थ जि० अर्घं ।

पहिली दूजी बेदी बीच सु जानिये। बहैं खातिका उज्वल जल परमानिये॥
तिन दोऊ बेदिनके परधि विषैं लहे। सोभा बहुत बिशाल सुदरबाजे कहे।३

ॐ ह्रीं पहिली दूजीकी परधिविषैं अनेक लघुद्वारसंयुक्तसमे.शरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०स्वा०।

लघु द्वारे बहु सोभैं सुन्दर सारजू। छोटी छोटी गुमटी ऊपर धारजू॥
तिनपरकलशासोभैपरमविशालजू। तिनपरलहकैंधुजाकहैं जनलालजू॥४॥

ॐ ह्रीं लघु द्वारे छोटी गुमटी कलशाधुजा संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०स्वा०।

सुंदरी छंद।

लघु सु दरवाजे आगें कही। खातिका ऊपर पुल है सही॥
सरस सोभा सो पुल देत है। रतन जड़ित सु उज्वल स्वेत है॥ ५॥

ॐ ह्रीं लघुद्वारनके आगें खातिका रतन जड़ित पुल संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०।

अड़िल्ल।

चैत्य सु मंदिर भूमि गमन तातैं लहैं, भूमि खातिका विषैं जाय आयो चहैं
ता बेदीके द्वारनमें ह्वैकें कही। पुलके ऊपरजाय परमसुखसों सही॥ ६॥

सोरठा—बेदी कोट मँझार, द्वारबने लघु बहुतहैं।

तिन द्वारन ह्वै जांय , गंधकुटी लग देव नर ॥ ७॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमितें चालिवेदी लघुद्वार पुल अनेक लघुद्वारनके मारग होय गंधकुटीकी भूमि पर्यंत सुगममार्ग संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल।

दूजी बेदी दरबाजेमें जानिये। निकसैं सो नर देव परम सुख मानिये ॥
ऐसें सो अंतर गलियनमें होयकें। चले जाँय सो गंधकुटी लगि जोयकें॥८॥

ॐ ह्रीं दूजीवेदीके दरवाजेमें होय देव नर गंन्धकुटी लग जाय वेदीसंयुक्तायसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पुलके ऊपर बैठक बहुत बनी सही, दोऊ तरफा जानि परम सुखकी मही ॥
तिनपर गुमटी कलशा कंचनमय कहे, तिनपर धुजा विशालसुलहकेंलहलहे

ॐ ह्रीं पुलऊपर दो तरफा बैटकें बहुत गुमटी कलशाधुजासंयुक्तसमोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सायवान दरपरदा करिसोभैं तहां, नानाविधि चित्राम चित्र लिखियो जहां

ऐसी बैठक बनी परम छवि सो लहैं, झलकै खाई नीर विषैं दुतिको कहैं॥१०

ॐ ह्रीं पुल ऊपर अनेक स्थान संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व स्वा०।

सुंदरी छंद।

उदधि छीर समान सु नीर जू। सरस खाई नीर गहीर जू॥
लसतहैं सु नवाडे सार जू। बहुत छोटे बड़े सु धार जू॥११॥

ॐ ह्रीं खाई अनेकनवाडे संयुक्ताय समोशरण स्थिथ जिनेंद्राय अर्घं निर्वपा० स्वा०।

बने बँगला तिन ऊपर सही। सरस छतुरी मन मोहैं वही॥
सिंह हयगज आदिक मुह कहे। रतनजड़ित परम छविको लहे॥१२॥

ॐ ह्रीं खातिका अनेक सोभा सोभित नवाडे संयुक्त समोशरणजिनेंद्राय अर्घं निर्व स्वा०

तिन नवाड़िनमें सुर जानियै। सरस बिद्याधर परमानियै॥
बजत साज सु जिनगुन गावते। करहिं नृत्य सु पुन्य उपावते॥१३॥

ॐ ह्रीं देवविद्याधर जिनगुण गावत नवाड़ेविषैं संयुक्त समोशरणस्थ जिनेंद्राय अर्घं निर्व०स्वा०

बैठि सुर सु नवाड़िनमें तहां। सरस दौड़ा दौड़ि करैं जहां॥

दोय पार सु खाईकी कही। चलत भव्य सु आँनदसों सही॥ १४॥

ॐ ह्रीं खातिकाविषें अति शीघ्रगामी नवाड़े संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घ निर्व०

छंद मद अवलिसकपोल।

तहां नृत्य अरु गान करैं सुर बहुविधि भाई।
कहीं सु स्वछतरंग बहुत सोभा अधिकाई॥
सोभा बहुत विशाल धन्यजे नयनन पेखैं।
श्रीजिन पुन्य महानजान 'भविलाल' सु देखैं॥

ॐ ह्रीं अनेक अतिशयवान पुन्य संयुक्ताय समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घ निर्वपा० स्वा०

इति खातिका भूमि वरणन संपूर्णम्।

अथ तीजा पुष्पवाटिका भूमि वर्णन अडिल्ल।

तीजी भूमि गलीके बाईं ओरजू। ओर दाहिनी तरफ अंतर गली जोर जू।
दरबाजे आभ्यंतर बेदी दूसरी। भाग चारिकी जानि बनी सुँदर खरी॥१॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमिके दरवाजे बाईं दाहिनी ओर अंतर गली विषैं दूनी बेदी भाग चारि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

और दूसरो कोट बहुत सुंदर बनो। चारि भाग परमान लिये सोभा घनो॥
विदिशामेंपहिंचानिजानकें देखिये। तीजी भूमि सु पुष्प वाटिका लेखिये॥२

ॐ ह्रीं दूजा कोट भाग चारि संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमितीसरी कोटबलयअरुव्यास जू। भाग चवालिसजानिपरम सुखरास जू॥
तहँ नाना परकार सुफुलवाड़ी बनी। ताको बरनन सारसुनो चित दै मनी॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमि भागचवालिस बलयव्यास फुलवाड़ी संयुक्तसमोशरणस्थजिनेंद्राय अर्घं।

भाग चवालिसमें फुलवाड़ीजानियों। नाना विधिके पुष्पबृक्ष मन आनियों॥
तिनकीसुरभप्रवाहपायअलिआइयो,बिषयशक्तिपरमानसुमदकरछाइयो॥४॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमि भागचवालिस फूलवाड़ीसंयुक्तसमवशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व स्वा।

सो फुलवाड़ी ऐसी विधिमों देखियै। भूमि तीसरी अंतर गली सु पेखियै॥

प्रथम जानि दरवाजो ताको लीजिये। ताके आगें भूमि सु सार गनीजिये ॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमि अंतरगली दरवाजेआगें भूमि संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं ।

रौंसतने चौतरफा दरवाजे कहे । सोभैं सार उतंग सरस सोभालहे ॥
तिनपर गौखें सार सु तिहारी जानियै।ऊपर कलशाधुजासहित परमानियै

ॐ ह्रीं तीजीभूमिविषैं रौंस चौतरफादरवाजे अनेकरचना संयुक्तसमोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चली रौंस चौतरफा बीच चबूतरा, चारिओर सोपान जानि मणिमयजरा॥
तापर बारह दरी खरी सोभालही । ऊपर गौखें सार जु सुंदरता सही ॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमि अंतरगली दरवाजेआगें चबूतरा चारि रौंस लियें बारहदरी संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छंद सुंदरी ।

बनि रहे कलशा तिनपर तहाँ। जानियों सु धुजा सुंदर जहाँ ॥

चारि कोन सु खम्भा चारि जू। वनि रहे बँगला सुखकार जू ॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमिअनेकबँगला संयुक्त समवशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

सरस कलशा ताऊपर कहे। परम सुंदर मंडफ वनि रहे॥
छाईया तहँ अलिगण आयकैं। सरस सार सुगंध सु पायकैं॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमि फुलवाड़ी मंडफ संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

रौंस चौतरफा ऐसी बनी। रतन जड़ित सु क्यारीं हैं घनी॥
बीचमें सुरवृक्ष सु फूलके। वनि रहे सुंदर तन थूलके॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमि रौंस चारि क्यारी रतनजड़ित संयुक्त समवशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं

कहुँ सु बेल्हा सुंदर देखिये। कहुँ सु सार गुलाब सु पेखिये॥
कहूँ गुलमिहँदी सोभा लही। फूल जानि चमेलीके सही॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमि फुलवाड़ी बेलादिपुष्पसंयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि० स्वा० ।

कहुँसु गेंदा सुंदर सार जू। फूलियो सु हजारा धार जू॥

फूलियो मचकुंद सुहावनो। केवरो महकै मन भावनो॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमि पुष्पवाड़ी अनेकपुष्पसंयुक्त समवशरणास्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०स्वा०।

सरस मरुआ नैन निहारियै। कुंद गुलतुर्रा सु बिचारिये॥
सरस पाड़ल औरु जुही कही। सेवती फुलवादि जु बनि रही॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमि पुष्पवाड़ी अनेक पुष्प संयुक्त समवशरणास्थितजिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा।

फूल उत्तम जे जगमें कहे। सुरभता करि लीन जु ते लहे॥
फैलियो जु सुगंध दिशा दशौ। करत क्रीड़ा देखि जु मन बसो॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमि पुष्पवाड़ी देवादि क्रीड़ा संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०स्वा०।

रौंसके दोऊ तट जानियो। वृक्ष केराके परमानियो॥
सरस श्रेणीबद्ध चले गए। जानि बँगलालौ चहुँ दिशि भए॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमिविषै रौंसतट केरो श्रेणीबद्ध संयुक्त समवशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व स्वा

रौंस दहिनी बाईं ओर जू। सरस सुंदर वृक्ष सु जोर जू॥
लगि रहे सु अनार निहारिये। आम नारंगी फल धारिये॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमिविषैं रौंस बांई दाहिनी ओर अनेकवृक्ष फलफूल संयुक्त समोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस निवुआकी पंकति कही। सरस संगतरा फलियो सही॥
नारियर सु छुहारेके कहे। आमिली जमुन झुकि लहलहे॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमिविषैं रौंस दो तरफा अनेकवृक्षसंयुक्ताय समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं।

जान तरु सीताफल सोहने। जायफल बादाम सु मोहने।
और वृक्ष अनेक सु जानिये। बीचमें बँगला परमानिये॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमिविषैं अनेकरचना करि संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि० स्वा०

छंद भुजंगप्रयात्।

सुनौ रौंसकी चारि विदिशा जु माहीं। बनी बापिका ताल सुन्दरसुहायीं॥

बनी सार बैठक सु गौखें विराजैं। लसैं तुंग कलशा धुजा सार छाजैं ॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमि रौंसकीचारिविदिशाविषैं वापीतालसंयुक्त समोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

लसैं सार झालरि बँधी रत्न माला। धरैं क्रांति भारी सु सुंदर विशाला॥
भरो नीर उज्वल मनो दूध धारा। रले कंजके फूल सुन्दर अपारा ॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमिविषैं वापीसरसंयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वाहा ।

तहां रत्न मणिमय बनी पैलकारी। रहीं वृत्तकी भूमि साखा बिचारी॥
तलैं सार सुंदर शिला सुद्ध सोहैं। विराजैं मुनी तासुपै भव्य मोहैं ॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमिविषैं वापिकातालशिलसंयमीविराजमान संयुक्त समोशरणस्थितजि०अर्घं ।

धरैं जोग भारी अनागार धारी। वरैं मुक्तिनारी सु सोहैं शिलापै ॥
चले भव्य आवैं मुनी धर्म गावैं। भले भव्य धावैं सुनै धर्म तापै ॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमिविषैं मुनिधर्मचर्चा करते संयुक्त समाशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा

छंद सुन्दरी ।

अब सु बँगलाको बरनन सुनो । तीनि योग सु थिर करकें गुनो ॥
चारि दिशि झालरि सुभ जानियैं। लटकते गुच्छा परमानियैं ॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमि बँगलासंयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

रतन माल सु मोती माल जू । बांधिकैं सु झका झक 'लालजू, ॥
बनि रहीं झँझरीं सुखकार जू । परम सुन्दरता हित धार जू ॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमिविषैं बँगलातट शिलाऊपर मुनि उपदेश देत फुलवाड़ी संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंद्र काँति सिला तहँ देखियै । मुनि सु ध्यान धरैं तहँ पेखियै ॥
देत भव्यनकों उपदेश जू । नमत आय सु देव नरेश जू ॥

ॐ ह्रीं तीजीभूमिविषैं बँगलातट शिलाऊपर मुनि उपदेश देत भव्यनकों संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जानि आभ्यंतर बँगला विषैं। देव विद्याधर बैठे दिखैं॥
तहाँ बाजत साज समाजसौं। करत नृत्य सु जिनगुण गावसौं॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमिविषैं बँगलामध्य देवी देव विद्याधर नृत्य करत संयुक्त समोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव रौंसन पर जित तित फिरैं। परम सुंदरता तनकौं धरैं॥
सरस पुन्य सु उत्तम पायकैं। जिन सु दरसन देखत आयकैं॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमिविषैं देव क्रीड़ा करते संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि० स्वा०

सरस बेलिनके मंडफ बने। बृक्ष श्रेणी बद्ध चले घने॥
एक फुलवाड़ी बरनन कह्यो। और तीनोमें योहीं लह्यो॥
बहुत फुलवाड़ी ऐसी सही। आस पास सु विदिशामें कही॥
धन्य पुन्य सु जिनवर देवको। 'लाल' जानि सु कीजै सेवको॥

ॐ ह्रीं तीजी भूमिअनेकरचनाकरि संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०।

इति तीजी भूमि बरनन संपूर्णम्।

अथ चौथीभूमि वरनन प्रारभ्यते अडिल्ल ।

चौथी गली विशाल सुनैनन देखियै। बाएं दहिनी अंतर गली सु पेखिये॥
तहँ दरवाजे तुंग सु सुंदर जानियै। सरस नाटशाला ता आगें मानियै॥

ॐ ह्रीं चौथीगलीके बाईदाहिनीतरफअंतरगलीदरवाजेसंयुक्तसमोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं

तहां नाटशाला सुन्दर सु विचारियै। नाचैं देवी सार हरष उर धारियै॥
एक नाटशालामें बत्तिस जानियै। बने अखाड़े सरस नृत्य परमानियै॥

ॐ ह्रीं चौथी भूमिविषैं नाटशालासंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

८

एक अखाड़े सुरी बतीस नचैं खरी। बजैं बीन मिरदंग सु थेइ थेइ धुनि भरी॥
श्रीजिनके गुण सार गावतीं भावसों। हावभाव बहु करैं धरैं पग चावसों॥

ॐ ह्रीं चौथीभूमि दरवाजेनाटशालासंयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ताके आगें कोट दूसरो जानियैं। भाग चारि परमान सु मनमें आनियैं॥
तीजी बेदी सरस सु नैन निहारियै। भागचारि सो जानि परम उरधारियै॥

ॐ ह्रीं चौथीभूमि कोटबेदी भाग चारिचारि संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व०स्वा०

तिन दोऊके बीच सु विदिशामें कही। चौथी उपवन भूमि जान सुंदर सही॥
बलयव्यासके भागचवालिस लीजिये। ताके आगें बरनन और सुनीजिये॥

ॐ ह्रीं दूजाकोट तीजीबेदी मध्य चवालीस भाग उपवन चौथीभूमि संयुक्तसमोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद सुंदरी।

जानि दिशि अगनेय सु हेत है। बन अशोक महा छबि देत है॥
दिशि सु नैऋत देखि बिचारिये। सप्तपर्न सु बन मन धारिये॥

ॐ ह्रीं चौथीभूमिविषैं अगनेयदिशि अशोकबन नैऋतदिशिविषैं सप्तपर्णबन संयुक्ताय समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दिशि सु बायबमें चंपक कह्यो। आम्रबन ईशान सु दिशि लह्यो॥
बृक्ष और अनेक तहां बने। सरस सोभा करि मंडित ठने॥

ॐ ह्रीं चौथीभूमि क[illegible]दिशामें चंपकवन ईसानदिशा आम्रवन संयुक्त समोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वृक्ष, भांति अनेक सु देखियै । भूप वृक्ष सु चारि विशेखियै ॥
गनि अशोक सु चंपक दूसरो । सप्तपर्न सु आम्र लसै खरो ॥

ॐ ह्रीं अशोक चंपक सप्तपर्ण आम्रवन मध्यस्थ भूपवृक्ष संयुक्त समोशरण स्थित जिनें० अर्घं

सरस सोभा वनमें जानियैं । लसत मंदिर बापी आनियै ॥
सरस परबत ताल विशालजू । करत क्रीड़ा, देव सु 'लाल, जू ॥

ॐ ह्रीं चौथीभूमि चारिवन अनेकरचना संयुक्तायाजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूप वृक्षनकी सोभा सुनो । बने हैं जा विधि सेती भनो ॥
बन अशोक सु बीच विशेखियै । लसत बारहदरी सु देखियै ॥

ॐ ह्रीं अशोकवन बीच बारहदरी संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

दर सु बारह ऊपर जानियों । बनि रहीं बैठक परमानियें ॥
लसत कलशा और धुजा कही । बनि रही सुंदर सोभा सही ॥

ॐ ह्रीं बारहदरी अनेक रचना संयुक्तसमोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तिन सु बैठककी गौखें कहीं। सरस दल परदा सोभा लहीं॥
रतनमाल सु मोती माल जू। झक झकात सु जगमग लालजू,॥

ॐ ह्रीं बारहदरीऊपर बैठक तिहरी अनेकरचना संयुक्तसमोशरणस्थिति जिनेंद्राय अर्घं नि०

अड़िल्ल।

तिन गौखनमें सुर विद्याधर जायकें। बैठत हर्ष बढ़ाय सु जिनगुन गायकें
अबसो वरनन और सुनो न विलोकिये, तीनो जोग लगाय सु मन दै धोकिये

ॐ ह्रीं अशोकवनविषैं बारहदरी ऊपर बैठक बनी हैं तिनविषैं देवविद्याधर जिनगुन गावते संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद सुन्दरी।

बनि रही बारहदरी सार जू। तासु आभ्यंतर सु बिचार जू॥
चौकबीच सु कोट जु तीन जू। बीच पीठ सु तीन नवीन जू॥

ॐ ह्रीं बारहदरीआभ्यंतर तीनिकोटके बीच तीनिपीठ संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं

तीन पीठ सु ऊपर राजईं। भूप बृक्ष अशोक विराजईं।
सरल सूधे बृक्ष सु जानियै। परम सुंदरता परमानियै॥

ॐ ह्रीं तीनपीठपर अशोकबृक्ष जिनसरीरतैं बारह गुनो उतंग संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर सु कैसो बृक्ष अशोक है। दरस देखि सु भाजत शोक है॥
मूलमैं हीरा सु जड़े सही। हेममय सुंदर साखा कही॥

ॐ ह्रीं अशोक बृक्ष अनेकसोभाकरि संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व स्वाहा।

पत्र पन्नाके रँग जानियै। लाल फूल फुले परमानियै॥
फल महा रमणीक सुहावने। झुकि रहे सु सरस मन भावने॥

ॐ ह्रीं अशोकबृक्ष अनेकरचनाकरि संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

छंद भुजंगी ।

लखौ सार विदिशा विषैं बृक्ष सारं । गनो भूप बृक्षं सु सोभा अपारं ॥
लसैं चारि बन नाम ऊपर सु भांषे । सोई भूप बृक्षं भले इन्द्र राखे ॥
लखै सार सोभा सु देखौ निहारी । भजैं पाप ताके लखैं सुक्ख कारी ॥
करैं देव पूजा भली भांति भाई । जजैं 'लालजी, धन्य नरसो कहाई ॥

ॐ ह्रीं चौथी भूमिविषैं चारिभूपवृक्षचारिबनमें सोभायमानसंयुक्तसमोशरणास्थित जिनें० अर्घं

अथ अशोक बन बृक्षस्थ पूजा छंद सुंदरी ।

बन अशोक महाछवि देत है । सकल जीव तनो सुखहेत है ॥
भूपबृक्ष अशोक सुहावनो । जिन सु पूजि परम सुख पावनो ॥१॥

ॐ ह्रीं अशोकवन बृक्षस्थ जिनेंद्रप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं अशोकवन बृक्षस्थ जिनप्रतिमा समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं अशोकवनबृक्षस्थजिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक गीता छंद ।

द्रह नीर निरमल परम पावन कनक झारीमें भरौ ।
जिनराज चरण प्रक्षालि भवियन, जनम मरन विथा हरौ ॥
अगनेय दिशा अनूप सोहत बन अशोक सुहावनो ।
तहँ भूपवृक्ष अशोक जानौ पूजि जिनगुण गावनो ॥१॥

ॐ ह्रीं अशोकवनवृक्ष संबंधि चारिदिशि प्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

करपूर केसर मलय घसिकरि सुरभ दश दिशिमें भई ।
श्रीजिन सु पूजत परम हूजत भव सु दाह विलय गई ॥
अगनेय दिशा अनूप सोहै बन अशोक सुहावनो ।
तहँ भूप वृक्ष अशोक जानों पूजि जिनगुन गावनो ॥२॥

ॐ ह्रीं अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

अति सरस तंदुल चंद सम वर स्वेत बरन सु लीजियै ।
प्रछालिकैं प्रासुक सु पानी पुंज सुंदर दीजियै ॥
अगनेय दिशा अनूप सोहै बन अशोक सुहावनो ।
तहँ भूप बृक्ष अशोक जानो पूजि जिनगुनो गावनो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

कमल केतकि धर गुलाव सु बास महँकत लाईयै ।
श्रीजिन सु अग्र चढ़ायकैं भव समरबान विलाईयै ॥
अगनेय दिशा अनूप सोहै बन अशोक सुहावनो ।
तहँ भूप बृक्ष अशोक जानो पूजि जिनगुन गावनो ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

पकवान नीको तुरत घीको कनक भाजन धारियै ।
श्रीजिन चढ़ाय सु गाय जिनगुण छुधारोग निवारियै ॥

अगनेय दिशा अनूप सोहत बन अशोक सुहावनो ।
तहँ भूप बृक्ष अशोक जानो पूजि जिनगुन गावनो ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं अशोकबनबृक्षस्य जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप मणिमय होति जगमग ज्योति सरस सुहावती ।
तम मोह नाश भयो सु पूजत सची जिनगुण गावती ॥
अगनेय दिशा अनूप सोहत बन अशोक सुहावनो ।
तहँ भूप बृक्ष अशोक जानो पूजि जिनगुण गावनो ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं चारिदिशि संबधी अशोकबनबृक्षस्य जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

करपूर अगरु सुगंध लै बसु कूटि जिनपद खेईयै ।
बसु दुष्ट कर्म्म अनादिहीके दाहि शिवसुख लेइयै ॥
अगनेय दिशा अनूप सोहत बन अशोक सुहावनो ।
तहँ भूप बृक्ष अशोक जानो पूजि जिनगुण गावनो ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं चारिदिशि संबन्धी अशोकवन वृक्षस्य जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

श्रीफल सुपारी लौंगसारी फल समूह सु लाईये।
श्रीजिन चढ़ाय सु गाय जिनगुण मोक्षफल सुभ पाईये॥
अगनेय दिशा अनूप सोहत बन अशोक सुहावनो।
तहँ भूप वृक्ष अशोक जानो पूजि जिनगुण गावनो ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं चारिदिशि संबधी अशोकवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज दीप धूप सु खेईये।
फल धारि अर्घ करौ सु भवियन पूजि प्रभुपद सेईये॥
अगनेय दिशा अनूप सोहत बन अशोक सुहावनो।
तहँ भूप वृक्ष अशोक जानो पूजि जिनगुण गावनो ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं चारिदिशि सम्बंधि अशोकवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

अथ सप्तपरनवनस्थ जिन पूजा ।

दोहा । सप्तपरन वनसोहनो, समवशरणमें जान ।
भूप वृक्ष सोई नाम है, नैऋत दिशा प्रमान ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चारिदिशि सप्तपरनवृक्षस्थ जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं चारिदिशि सप्तपरणवृक्षस्थ जिनप्रतिमा समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं चारिदिशि सप्तपरन वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टक त्रभंगी छंद ।

उज्वल सुभ पानी प्रासुक छानी सुरभ समानी सुखकारी ।
भरि कंचनझारी जिनपद धारी जन्म जरा हर दुख भारी ॥
श्रीसप्तपरन बन समवशरण धन नैऋत दिशा सु हूजीजै ।
जय भव भव सरणं शिवसुख करणं श्रीजिन चरन सु पूजीजै॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नैऋतदिशासप्तपरनवन वृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

मलयागिरि चंदन दाह निकंदन सहज सुवासी लै हेरा ।
जिनचरन चढ़ावौ मन हरषावौ दाह बुझावौ भव केरा ॥
श्री सप्तपरन बन समवशरण धन नैऋत दिशा सु हूजीजै ।
जय भव भव सरणं शिवसुख करणं श्रीजिनचरन सु पूजीजै ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं नैऋतदिशासप्तपरनवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुखदास कमोदं धार प्रमोद प्रासुक जलसों प्रक्षालौ ।
उज्वल सुभ कीजै पुंज सुदीजै जिनपूजीजै अघ टालौ ॥
श्री सप्तपरन बन समवशरण धन नैऋत दिशा सु हूजीजै ।
जय भव भव सरणं शिवसुख करणं श्रीजिनचरन सु पूजीजै ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं नैऋतदिशि सप्तपरन वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

सुभ फूल सुवासी परमल खासी चित्त हुलासी कर लावौ ।
श्रीजिनपद पूजौ नर सुर हूजौ काम नशि सुर शिव पावौ ॥

श्री सप्तपरन बन समवशरण धन नैऋत दिशा सु हूजीजे।
जय भव भव सरणं शिवसुख करणं श्रीजिनचरन सु पूजीजे ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं नैऋतदिशासप्तपरनवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥
पकवान सु साजे मोदक खाजे वहुविधि ताजे मालपुआ।
देखत द्रग नाशा परम हुलासा ले सुभ खासा सुकृत हुआ॥
श्री सप्तपरन बन समवशरण धन नैऋत दिशा सु हूजीजे।
जय भव भव सरणं शिवसुख करणं श्रीजिनचरन सु पूजीजे ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं नैऋतदिशासप्तपरनवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥
मणि दीप उद्योतं तम छय होतं जगमग ज्योतं जयकारी।
मो तिमिर विनाशै स्वपर प्रकाशै ज्ञान सु भांषै भवतारी॥
श्री सप्तपरन बन समवशरण धन नैऋत दिशा सु हूजीजे।
जय भव भव सरणं शिवसुख करणं श्रीजिनचरन सु पूजीजे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नैऋतदिशासप्तपरणवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

सुभ गंध दशौं करि अगिनिमाहिं धरि अष्टकरमहरि धरि खेवौ।
अति पुन्य कमावौ बलिबलि जावौ निज दरशावौं प्रभु सेवौ ॥
श्री सप्तपरन वन समवशरण धन नैऋत दिशा सु हूजीजै ।
जय भव भव सरणं शिवसुख करणं श्रीजिनचरन सु पूजीजै ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं नैऋतदिशासप्तपरणवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

लै श्रीफल भारी लौंग सुपारी दाख छुहारे लै आवौ।
जिनचरन चढ़ावत जिनगुण गावत ताल बजावत शिवपावौ ॥
श्री सप्तपरन बन समवशरण धन नैऋत दिशा सु हूजीजै।
जय भव भव सरणं शिवसुख करणं श्रीजिनचरन सु पूजीजै ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं नैऋतदिशासप्तपरणवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन गारं अक्षत धारं पुहप चरु सारं दीप धरौ।
'भविलाल' सु धूपं फल सु अनूपं जजि जिनभूपं मुकति वरौ ॥
श्री सप्तपरन बन समवशरण धन नैऋत दिशा सु हूजीजै ।
जय भव भव सरणं शिवसुख करणं श्रीजिनचरन सु पूजीजै ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नैऋतदिशासप्तपरणवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाग्रे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अथ चंपक वनस्थ पूजा ।

सुंदरी छंद।

बन मनोहर चंपक जानियैं । भूप वृक्ष सु चंपक मानियैं॥
दिशि सु वायव सुंदर सारजू । जिन सु पूजि भए भव पार जू॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वायवदिशि चंपक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमा अत्र वतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं वायवदिशि चंपक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं वायवदिशि चंपक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

उज्वल जल सुंदर लाय वास अनेक लई।
धरि मणिमय झारी पाय अघ हर धार दई॥
चंपक बन सोहै सार सुर नर गुण गावैं।
बायवदिशि सरस सुहाय पूजत शिव पावै॥ १॥

ॐ ह्रीं बायवदिशि चंपक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरि चंदन वास फैली सुखकारी।
नाशत भव ताप सु त्रास जय जय बलिहारी॥
चंपक बन सोहै सार सुर नर गुण गावैं।
बायवदिशि सरस सुहाय पूजत शिव पावै॥ २॥

ॐ ह्रीं बायवदिशि चंपक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

उज्वल अक्षत सु प्रक्षालि पुंज करौ भाई।
अक्षयपद ह्वै तत काल पूजत जिनराई॥
चंपक बन सोहै सार सुर नर गुण गावैं।
बायवदिशि सरस सुहाय पूजत शिव पावैं॥ ३॥

ॐ ह्रीं बायवदिशिचंपकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

बहु विधि उत्तम ले फूल जिनपद पूजीजै।
रहि कामवाण नहिं मूल सनमुख हूजीजै॥
चंपक बन सोहै सार सुर नर गुण गावैं।
बायवदिशि सरस सुहाय पूजत शिव पावैं॥ ४॥

ॐ ह्रीं बायवदिशि चंपक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिग्रे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

फेनी घेवर बहु आन मोदक ले ताजे।
पूजत जिनराज सु पाँय रोग छुधा भाजे॥

चंपक बन सोहै सार सुर नर गुण गावैं।
बायवदिशि सरस सुहाय पूजत शिव पावैं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं बायवदिशि चंपक बनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक मणिमय परकाश जगमग ज्योतिधरै।
भयो मोह अँधेरो नाश ज्ञान प्रकाश करै ॥
चंपक बन सोहै सार सुर नर गुण गावैं।
बायवदिशि सरस सुहाय पूजत शिव पावैं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं बायवदिशि चंपक बनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

करपूर सु अगरु मगाय धूप सु खेईजै।
हरि अष्ट कर्म्म दुखदाय जिनपद सेईजै ॥
चंपक बन सोहै सार सुर नर गुण गावैं।
बायवदिशि सरस सुहाय पूजत शिव पावैं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं वायवदिशि चंपक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल बादाम सु ल्याय पिस्ता धोय धरौं ।
फलपूजि सु जिनगुण गाय श्रीधर मोक्ष वरौं॥
चंपक बन सोहै सार सुर नर गुण गावैं ।
बायवदिशि सरस सुहाय पूजत शिव पावैं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं वायवदिशि चंपक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन ले इत्यादि वसु विधि अर्घ करौं ।
'भविलाल, सु पूजत पाँय श्रीजिन मुक्तिवरौं॥
चंपक बन सोहै सार सुर नर गुण गावैं ।
बायवदिशि सरस सुहाय पूजत शिव पावैं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं वायवदिशि चंपक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ आम्र वनस्थ जिनपूजा प्राभ्यते अडिल्ल ।

सोभत वनसु विशाल आम्रको जानियैं। भूप वृक्ष तहँ आम्र परम परमानियैं
तहँ जिन भवन अनूपम सोभित थान जू पूजैं सुर नरआनि दिशा ईसान जू

ॐ ह्रीं ईसानदिशि आम्रवन वृक्षस्थ जिनप्रतिमा समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं ईसानदिशि आम्रवन वृक्षस्थ जिनप्रतिमा समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं ईसानदिशि आम्रवन वृक्षस्थ जिनप्रतिमा समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथाएक सुंदरी छंद ।

परम पावन नीर सु ल्याइयै । धारतीनि सु दै हरषाईयै ॥
वन सु आम्र जु सुंदर सोहनो । सुर सु पूजत तन मन मोहनो ॥१॥

ॐ ह्रीं ईसानदिशाआम्रवनभूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलय केसर गंध मिलायकैं । भव सुदाह चढ़ाय बुझायकैं ॥
वन सु आम्र जु सुंदर सोहनो । सुर सु पूजत तन मन मोहनो ॥२॥

ॐ ह्रीं ईसानदिशा आम्रवन भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

धवल सोभित तंदुल सार जू। करत पुंज अखैपद धार जू ॥
बन सु आम्र जु सुंदर सोहनो। सुर सु पूजत तन मन मोहनो ॥३॥

ॐ ह्रीं ईसानदिशा आम्रवन भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कमल केतुकि चंपक पावने। काम नाशि सु जिन गुण गावने ॥
बन सु आम्र जु सुंदर सोहनो। सुर सु पूजत तन मन मोहनो ॥४॥

ॐ ह्रीं ईसानदिशा आम्रवन भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

चरु मनोहर सुंदर देखियै। जिन चढ़ाय परम सुख पेखियै ॥
बन सु आम्र जु सुंदर सोहनो। सुर सु पूजत तन मन मोहनो ॥५॥

ॐ ह्रीं ईसानदिशा आम्रवन भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप मणिमय सुंदरता लहै। मोह नाशि सु निज परको कहै ॥
बन सु आम्र जु सुंदर सोहनो। सुर सु पूजत तन मन मोहनो ॥६॥

ॐ ह्रीं ईसानदिशा आम्रवन भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

सरस धूप दशांग सु खेईयै । करम जारि सु जिनपद सेईयै ॥
बन सु आम्र जु सुंदर सोहनो । सुर सु पूजत तन मन मोहनो ॥७॥

ॐ ह्रीं ईसानदिशा आम्रवन भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल सु नैननको प्रियता करैं । फल चढ़ाय सु शिवफलको धरैं ॥
बन सु आम्र जु सुंदर सोहनो । सुर सु पूजत तन मन मोहनो ॥८॥

ॐ ह्रीं ईसानदिशा आम्रवन भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल सु आदि गनो फल अंत जू । 'लाल, अर्घ चढ़ावत संतजू ॥
बन सु आम्र जु सुंदर सोहनो । सुर सु पूजत तन मन मोहनो ॥९॥

ॐ ह्रीं ईसानदिशा आम्रवन भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाल दोहा ।

दोहा—चौथी भूमि सुहावनी, पूजा भई विशाल ।

सुभ सुभ वरण मिलायकैं, लाल भने जयमाल ॥१॥

पद्धरी छंद।

जय जय श्री वृक्ष अशोक जान। जय बरनन ताको हृदयँ आन ॥
जय वृक्ष अशोक जु दिपै सार। सब वृक्षनमें भूपति निहार ॥१॥
जय ताके चारौ दिशि बखान। जिनमंदिर चारि कहे सु जान ॥
जय पीठ तीन तापर जु सार। सोभै श्रीगंधकुटी विचार ॥ २ ॥
जय तांबित्र सिंहासन अनूप। जय तापर कमल रचो सुरूप ॥
जय तापर प्रतिमा जिन सु देव। जय राजत एक करौ जु सेव ॥३॥
जय चारौ दिशि ऐसे सु जान। जय श्री अरहंत विराजमान ॥
जय तीन छत्र शिर सोभकार। त्रिभुवनके ईश्वर कहत सार ॥४॥
मोतिनकी झल्लरि बहु विशाल। जय छत्रनमें लटकैं सु लाल ॥

जय प्रातहार्य वसु दिपैं सार । तिनकौं लखि सुर नाचैं अपार ॥५॥
जय बड़ी विभूति विलोकि देव । ता थेइ थेइ थेइ थेइ करत सेव ॥
बाजत मृदंग बीनादि सार । जय सब समाज बाजत सु धार ॥६॥
जय चारौ दिशि फिरिकैं सु ढार । जिनराज सु गुण जय जय उचार ॥
जय छीरोदधि उज्वल सु नीर । जल लाय करत जिन नह्वन वीर ॥७॥
जय फिरि पूजत वसु द्रव्य लाय । जय नृत्य करत जिनगुण सु गाय ॥
जय जय परदक्षिण देहिं तीनि । जय चारौ दिशि थिरकैं प्रवीन ॥८॥
जय जय श्री जिनवर गुण विशाल । तिनकों मैं नमन करौं त्रिकाल ॥
तिन आगें मानस्थंभ सार । जय सोभै बहु आनंदकार ॥९॥
जय जय मुख इंद्र करैं उचारि । अस्तुति जिनराज पढ़ैं विचारि ॥
जय चक्रवर्ति बलदेव जानि । जय नारायण प्रतिहरि प्रमाण ॥१०॥

जिन सासनमें आनंद धार। परदक्षिण देंहि अनेक वार॥
ज्यों मेघ घटाकों देखि मोर। नाचत अैसें सुर नर सु जोर॥११॥
जय हाथजोरि सनमुख सुरेश। जिनराज छवी देखैं विशेष॥
दुय नैनन तृप्ति भयो न इन्द्र। जय सहस नेत्र रचियो सुरेंद्र॥१२॥
जय फिरि फिरि जिनकों नमस्कार। करि गावत जिनगुण हरषधार॥
वह समयो जिन देखो विशाल। धनिजीव कहैं तिनकों सु 'लाल,॥१३॥
जय याविधि पूजत हैं त्रिकाल। जय जय जिन चरनन नमत भाल॥
जय एक अशोक सु वृक्ष सार। ताको वरनन भाषों विचार॥१४॥
अैसेही चारौ भूप वृक्ष। पूजत मिलिकै सुर नर प्रतक्ष॥
श्रीजिन महिमा वरनन अपार। कवि कौन लहै ताको सु पार॥१५॥
पर तुक्षबुद्धि हमने सु पाय। जय जय जय जिनगुण कहे गाय॥

उपदेश दयो सबसुख जु राय। भवि 'लालजीत, बलि बलि सु जाय ॥१६॥

दोहा। चौथी उपवन भूमिकी, पूजा अरु जयमाल।
जो बाँचै मन लायकैं, पावै शिवपद हाल ॥१७॥

ॐ ह्रीं चारोंदिशासम्बन्धीचौथी उपवनभूमिवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यो पूर्णार्घं निर्व० स्वा०

अड़िल्ल।

जो बाँचै यह पाठ सरस मन लायकैं। सुनै भव्य दै कान सु मन हरषायकैं॥
धन धान्यादिक पुत्रपौत्र संपतिवद्धै। नरसुरके सुखभोगि बहुरि शिवतियवरै

इत्यासीर्वाद।

अथ पंचमभूमि वरनन अड़िल्ल।

भूमि पंचमी गली सु नैनन पेखियै। वाम दाहिनी भाग गली दो देखियै॥
दरवाजे आभ्यंतर वेदी तीसरी। चारि भाग परिमान सु सुंदरता धरी ॥१॥ ६९

ॐ ह्रीं पांचई गलीकी बाई दाहिनी तरफ अंतर गली आभ्यंतर वेदी तीसरी भाग चारि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कोट तीसरो भाग चारिको सार जू। सुवरन वरन विचार हियेमैं धारजू॥
तहाँ भूमि पांचमी महा सुंदर कही। धुजा समूह सु लहकैं सुदरता लही॥२॥

ॐ ह्रीं पांचई भूमि विषैं कोट तीसरो भाग चारिं सुवर्ण वर्ण महा सुंदर धुजा समूह सहित संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

भूमि पांचई भाग चवालिस जानियैं। वलय व्यास पहिंचान हियेमें आनियैं
वेदी कोट विशाल महा सोभा सचो। नाना विधिचित्राम चित्र करिकैं खचो

ॐ ह्रीं पांचमी भूमि भाग चवालिस वलय व्यास कोट वेदी चित्राम समूह करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

समवशरण चित्राम कहीं सु बन्यो सही। कहिं तीर्थंकरदेव भवांतर सुभलही॥
इनके चित्र बने सुंदर सु निहारियै। झक झकात सुखकार हियेमें धारियै॥४॥

ॐ ह्रीं पांचमी भूमि समवशरण में कोट वेदीमें तीर्थंकरके पिछिले भव चित्राम संयुक्त समवशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

कहिं जिनमाता सुपने देखैं सार जू। तिनके फल पूछति पतिसों सु विचार जू॥
कहिं तीर्थंकर पंचकल्याणक रूप जू। तिनके चित्र निहारि सु परम अनूप जू॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमिविषेकोटवेदीचित्रामकरिसंयुक्तसमोशरणास्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वाहा।

तीर्थंकरको नछन भयो गिरिपर जहां। नागदत्त हाथी चढ़ि इंद्र गयो तहां॥
करिजिनवरको नछन बड़े आनंदसों। नृत्य करत हरषाय सु गाए छंदसों॥

ॐ ह्रीं पांचमीभूमिजिननछन चित्रामकरिसंयुक्तसमोशरणास्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वाहा।

इनहूंके चित्राम बने तहँ पेखियै। चक्रवर्तिकी विभौ कहूं दृग देखियै॥
षट विधि सेना जाति तने चित्राम जू। सोहै सरस विशाल परम अभिराम जू॥

ॐ ह्रीं पांचमी भूमिकोटवेदीमेंचक्रवर्तिविभौचित्रामसंयुक्तसमवशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं नि०

नारायण बलभद्र सु नयन निहारियै। प्रतिनारायन जानि परम उर धारियै

तिनकी बड़ी विभूति और भवि पाछिले। इनके भी चित्राम जनावत हैं भले

ॐ ह्रीं नारायनबलभद्रप्रतिनारायन विभौ पाछिलेभव कोटविषैं चित्रामसंयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

भोग भूमि त्रय उत्तम मध्यम जानियैं। और जघन्य प्रमान सु हियमें आनियैं
तिनमैं राजैं सार जुगलिया देखियै। ऐसेभी चित्राम मनोहर पेखियै॥९॥

ॐ ह्रीं भोग भूमिया आदि जुगलियनके चित्राम कोट वेदीमें संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

कल्पवृक्ष दशभेद बने चित्राम जू। कहूँ स्वर्ग्ग सौधर्म्म महा अभिराम जू॥
दूजा लखि ईसान सरस सो सार जू। सनतकुमार महेंद्र स्वर्ग्ग ए चारि जू १०॥
द्वै द्वै वीच विचार खड़े सुखकार जू। सेवित देवी देव परम हित धार जू॥
तिनको वरनन सार विशेष सुजानियैं। परम ग्रंथ सिद्धांत सारमें मानियै ११
ऐसे मानस्थंभ छत्र शिर तीन जू। सिंहासन जिनबिंब विराजत लीन जू॥

रतननकी जंजीर मजूषा लटकते। तिन संदूकनमें आभूंषण मटकते॥१२॥
तिनमें तीर्थंकरके वस्त्र धरे तहां। आभूंषणभी जानि परम सुंदर जहाँ॥
जब तीर्थंकर जन्म होत सुखकार जू। इंद्रानी आभूषण वस्त्र निहारजू॥१३॥
पहिरावति जिनराज हरष उरधरिकैं। श्रीजिनरूप निहारिसु नयन विचारिकैं
ऐसेभी चित्राम बने तहां जानियैं। नाना विधि सुखकार हरष उर आनियैं १४

ॐ ह्रीं सौधर्म्म ईसान सनतकुमार माहेंद्र चारि स्वर्गवीच मानस्थंभ द्वै संदूकन सहित तिनमें जिनपुनीत वस्त्र आभूषण धरे ऐसा चित्राम कोट संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

कहुं सागरके बीच सु परवत जानियै। बनी कुभोग सु भूमि तहाँ परमानियै॥
तहँके होहैं मानुष मुख ऐसे बने। हाथी घोड़ा मेढ़ा बैल गनो घने ॥ १५॥
इन आदिक चित्राम सु बेदी कोटमें। बने सरस सुखकार सु झलकैं ओटमैं॥
बेदी कोट विशाल सु ऊपर जानियैं। बने कँगूरा बुरज परमपरमानियैं १६॥

ॐ ह्रीं वेदी कोट कँगूरा चुरज चित्राम करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

बनी बैठकैं तिहरी ऊपर पेखियै । तिनमें चित्र विशाल बने तहँ देखियै ॥
कलशा धुजाविशाल सु लहकैं सार जू । बैठत देवीदेव सु मुखजयकारजू १७

ॐ ह्रीं कोट वेदी ऊपर बैठकैं तिहरी देवी देव संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंन्द्राय अर्घं निर्व०

सुंदरी छंद ।

लसत भूमि धुजाकी जानियैं । धरहिं चिन्ह धुजा परमानियै ॥
सिंह हाथी वृषभ जु मोर जू । गगन माला गरुड़ सु जोर जू ॥१८॥
हंस चक्र सु कमल निहारियै । चिन्ह ए दश भेद विचारियै ॥
लहकतीं सु धुजा सुंदर जहाँ । बरन को कवि भाँपत है तहां ॥१९॥

ॐ ह्रीं पंचम भूमि धुजा समूह सिंहादि दश भेद चिन्ह संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥

लसत चिन्ह सु एक धुजा कहीं । एकसौ अरु आठ गनो सही ॥

चिन्ह दशकी धुजा गनीजियै । सहस एक असी गन लीजियै ॥२०॥

ॐ ह्रीं एक चिन्ह संबधी धुजा एकसौ आठ दश चिन्ह सम्बन्धी एक सहस अस्सी एक दिशिमाही धुजा संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

एक दिशिकी भाषीं गायकैं । चारि दिशि जोड़ौ मनलायकैं ॥
चारि सहस सु तीनिसै जानियैं । बीस ऊपर गनि मन आनियैं ॥२१॥

ॐ ह्रीं चारि दिशिकी महाधुजा चारि हजार तीनिसै बीस संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२ ॥

दोहा । महाधुजा जो एक है, ताके संग निहारि ।
कहीं एकसौ आठ जू, छोटी धुजा विचारि ॥२२॥

चारौ दिशि छोटीं ध्वजा, चारि लाख मनलाय ।
छयासठि सहस सु पांचसौ, साठि अधिक सुखदाय॥२३॥

ॐ ह्रीं चारौ दिशा सम्बन्धी महाध्वजाके संग छोटी ध्वजा चारिलाख छ्यासठि हजार पांचसै साठि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२३॥

चारि सहस अरु तीनसै, बीस अधिक सब जान।
महाध्वजा चारौ दिशा, भाँपी श्रीभगवान ॥२४॥

ॐ ह्रीं चारिसहसतीनिसैबीसमहाध्वजाचारिदिशिसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०

छंद सुंदरी।

सब ध्वजा गनियौं मनलायकैं। चारिलाख कहीं जिन गायकैं॥
सहस सत्तरि वसुसै जानियैं। गनि सु अस्सी ऊपर मानियैं ॥२५॥

ॐ ह्रीं चारिदिशाध्वजासमूहसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०स्वा० २६

कनक थंभध्वजाके पेखियै। सरस सुंदरता करि देखियै॥
वृषभजिनके थंभ जु सार जू। गनि अठासी अंगुल धार जू ॥२६॥

ॐ ह्रीं सुवरनमयथम्भाअठासीअङ्गुलकी ध्वजाथंभासंयुक्तसमोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं

तासु ऊपर दंड सु मणिमई । धनु पचीस सु अंतरता लई ॥
सरस लहकतिधुजा सु जानिये। करति नृत्य मनो उर आनिये॥२७॥

ॐ ह्रीं पांचई भूमि ध्वजा समूह संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वा० ।

छंद भुजंगप्रयात ।

बनी भूमि सुंदर धुजाकी सु जानौ। तहां ताल बापी सु पर्वत बखानौ ॥
बनी सार सुंदर लसैं पैलकारी । करैंदेव क्रीड़ा धरैं कान्तिभारी॥२८॥
तहां वृक्ष जानौ फले फूल मानौ । झुकी डार आनौ भली सोभधारा॥
मनौ कल्पवृक्षं सु सोहैं प्रतक्षं । लखे सुक्खअक्षं छुधादोष टारा॥२९॥
तहां मुनि विहारी धरैं योग भारी । सु आतम विचारी भलीभांतिभाई ॥
बुरे कर्म्म नाशीस्वपर ज्ञानभाषी। सु आतमविलासीजगीज्योतिपाई॥३०॥
चले भव्य आवैं भलीभांति ध्यावैं । विनय सीस नावै सुनै धर्म्मबानी ॥
कोई ध्यान लालं सु पूजैंत्रिकालं । सु दीषैं विशालंभलीबुद्धि ठानी ॥३१॥

दोहा । पंचम भूमि सुहावनी, बरनन कियो सुधारि ।
धन्य सु नर भवि 'लालजी, देखत नयन निहारि ॥३२॥

ॐ ह्रीं पांचमी भूमिअनेकरचनासंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वा०

छट्टी भूमि बरनन अड़िल्ल ।

छट्टी भूमि गलीकी वाँई ओर जू । जानि दाहिनी तरफ अंतर गलीजोर जू ॥
दरवाजे आभ्यंतर भांषे गायकैं । बनी नाटशाला सुंदर सुख पायकैं ॥

ॐ ह्रीं छटीभूमिगलीके बाईदाहिनीतरफअंतरगलीदरवाजेतटनाटशालासंयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

आगें तीजो कोट भाग सैं चारि जू । चौथी बेदी जानि भाग द्वै धारिजू ॥
तासु बीचकी भूमि चवालिस भागजू । बलयव्यास उरआनिदेखिदृगरागजू

ॐ ह्रीं तीजोकोट भागचरि चौथीबेदी भागदोय ताकेबीच भूमिभागचवालिस बलयव्यास संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीजो कोट विशाल बरन कंचन तनो। बने कंगूरा सरस धुजालहकँवनो
बनी बैठकैं तिहरी गौख विचारियै । नाचैं देवी देव हरष उर धारियै ॥३॥
ॐ ह्रीं तीजोकोटअनेकरचनाकरिसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वा०
अब बेदी चौथीको रूप निहारियै । पीत बरन परमान कँगूरे धारियै॥
बनी बैठकैं वुरज धुजा लहकैं खरीं। मानौ नृत्यहि करति सु जिन अतिसैधरी
ॐ ह्रीं चौथीवेदीअनेकरचनाकरिसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वा०
रही बीचमैं भूमि तासु बरनन कह्यो। चारौ विदिशामाहिं सु वन सुंदरलह्यो
कल्पवृक्षके जानि समूह चले गए। आस पास चौतरफा सुंदर सोभए॥५॥
ॐ ह्रीं छट्टीभूमिविषैं चौतरफा कल्पवृक्ष संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०
कल्पवृक्ष काहेतैं नाम सु पाईयो। जो मनवांछित बस्तु देहि हरषाईयो ॥
कहे सु दशपरकार भेद तिनके सुनो। श्रीजिन पुन्यमहान विभौ ऐसीगुनो
ॐ ह्रीं छट्टीभूमिविषैं कल्पवृक्षमनवांछितदातारसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व०स्वा०

छंद सुंदरी।

सरस भाजन एक सुदेत हैं। ग्रह बने दूजो सुख हेत हैं॥
सरस आभूंषण तीजे दये। वस्त्र सुंदर चौथे पर लए॥७॥
पांचमो भोजन सुखकार जू। नीर पान छटो उर धार जू॥
ज्योति जगमग जानि सु सातमो। सरस माला लटकैं आठमो॥८॥
देत बाजे नवमो जानियैं। लसत दीपक दशमोमानियैं॥
बस्तु मनवाँछित सुभ सार जू। देत ते तरु आनँद धार जू॥९॥

ॐ ह्रीं छट्टीभूमिविषैं दशप्रकारकल्पवृक्षसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

लसत बन सुंदर सुखकार जू। कल्प वृक्षनको दिशि चारि जू॥
बनि रहे मंदिर तहँ देखियै। वापिका अरु ताल सु पेखियै॥१०॥

ॐ ह्रीं छट्टीभूमिवापिकातालमांदिरसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनद्रायें अर्घं निर्वपामीति० स्वाहा

रहिय साखा भूमि सु सार जू । चंदकांति सिलातल धार जू ॥
धरत ध्यान सु मुनि गण आयकैं । कर्म्मपुंज खिपावत जायकैं ॥

ॐ ह्रीं छट्टी भूमिअनेकरचनाकरिसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छंद भुजङ्गप्रयात् ।

धरैं ध्यान भारी सु आतमविचारी। महा पुन्य कारी लसै संजमी जू ॥
हनीमोह फांसी सदां सुक्खरासी। सुपर भेद भाषी कषायें दमी जू ॥१२॥

ॐ ह्रीं छट्टी भूमिविषैं सिलाऊपर महामुनिविराजमानसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं०नि०

लखैं नर जु देवा जजैं चरन सेवा । सुनै धर्म्मभेवा भले भेद गाई ॥
चले भव्य आवैं तिन्है सीस नावैं। भले सुक्ख पावैं लहैं ज्ञानभाई ॥१३॥

ॐ ह्रीं छट्टी भूमिविषैं अनेकजगहमुनिधर्म्मवरषावतसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०

कहूं सार परवत बने सुक्खकारी। सु तिनकी शिखरपर शिलाशुद्धधारी ॥
तहां मुनि विराजैं धरैं ध्यानगाजैं। सबै पाप भाजैं सु एका विहारी॥१४॥

ॐ ह्रीं अढ़ीभूमिविषैं परवतऊपरमुनिध्यानारूढ़विराजमानसंयुक्तसमोशरणस्थित जि०अर्घं

तहां देव क्रीड़ा करैं भांति नीकी । जजैं चर्ण मुनिके जु पूंछतसुजीकी ॥
करैं बर्नगुरुजीसुनौ सारसुर जी । जगे भाव उरजीभलीभांतिजाके ॥१५॥
लखैं भेद आपं भने पुन्य पापं । जपैं भव्य जापं नशैं पाप ताके ॥
॥१६॥

ॐ ह्रीं अढ़ीभूमिविषैं मुनिसमूहविराजमानसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

बनै बन सु चारौ दिशामाहिं धारौ । सु बीचैं निहारौ अहो भव्य भाई ॥
बने भूप वृत्तं लखैं पाप गच्छं । सु देखैं प्रतच्छं रहे सुर सु छाई ॥१७॥

ॐ ह्रीं अढ़ीभूमिविषैं चारौंदिशिवनबीचचारिभूपवृक्षसंयुक्तसमोशरणस्थितजि० अर्घं नि०

छंद सुंदरी ।

भूप वृत्त सु बरननमें भनो । तीन योग लगाय सु नर सुनो ॥
एक दिशि वनबीच विचारियै । सरस बारहदरी सु धारियै ॥१८॥

ॐ ह्रीं छतीमूमिविषैं एकदिशिवनवीचवारहदरीसंयुक्तसमोशरणस्थित जि० अर्घ० नि० स्वा०

लसत कुरसीदार सु जानियै। जड़ित मणि सोपान प्रमानियै॥
दरनऊपर बैठक देखियै। सरस गौखैं तिहरी पेखियै॥१९॥

ॐ ह्रीं वारहदरीसोभासंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जानि ऊंचे शिखर सुहावने। लसत कलसा जग मग भावने॥
तुंग जानि धुजा लहकैं तहां। मनहु भव्य बुलावतिं हैं जहां॥२०॥

ॐ ह्रीं वारहदरीसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रतनमाल सु मोतिन माल जू। झक झकात सु लाल विशाल जू॥
देव विद्याधर सुर गावते। बजत साज सु पुन्य उपावते॥२१॥

ॐ ह्रीं वारहदरीऊपरदेवजिनगुणगावतेसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं० नि० स्वा०

दर सु बारह भीतर जानियैं। लसत चौक सु मनमें आनियैं॥
तीनि कोट बने सुंदर तहां। बीच पीठ सु तीनि रहीं जहां॥२२॥

ॐ ह्रीं बारहदरीतीनिकोटवीचतीनासिंहासनतथापीठिसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं

रतन मणिमय पीठि तहांवनी । जग मगाति सु ज्योति सुहावनी ॥
भूप वृक्ष सु मेरु सुहावनो । पीठि तीन सु ऊपर गावनो ॥२३॥

ॐ ह्रीं तीनिपीठिऊपरभूपवृक्षसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जर विषैं सुंदर हीरा जड़े । सरस दिशि सूधे चारौ खड़े ॥
मणिमई साखा परमानियै । पत्र पन्नाके रँग जानियै ॥२४॥

ॐ ह्रीं भूपवृक्ष संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

लाल फूलनके गुच्छा कहे । फल मनोहर मिष्ट सु लह लहे ॥
लसत सोभाकरि सुभ जानियै । भूप वृक्ष मनोहर मानियैं ॥२५॥

ॐ ह्रीं भूपवृक्ष अनेक रचनाकरि संयुक्त समोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन सरीर सु ऊंचो जानियैं । वृक्ष बारह गुणो प्रमानियैं ॥
सरस सोभा करि सो सार जू । बनिरह्यो सुंदर आवकारजू ॥२६॥

ॐ ह्रीं छट्ठीभूमिविषें भूपवृक्षजिनशरीरतैंबारहगुणेऊंचेसयुक्तसमोशरणास्थित जिनेंद्राय अर्घ

वृक्षके चारौ दिशि ठानियैं। चारि जिनमंदिर उर आनियैं ॥
लसत मानस्थंभ सु देखियैं। भूप वृक्ष सु एक विशेषियैं ॥२७॥

ॐ ह्रीं चारिदिशिचारिमंदिरमानस्थंभभूपवृक्षसंयुक्तसमोशरणास्थितजिनेंन्द्राय अर्घनि०स्वा०

एक वृक्ष तनो बरनन करो। चारिदिशि चारौ ऐसें धरो ॥
धन्य पुन्य जिनेश्वरको सही। देखिकै भवि पुन्य करौ यही ॥२८॥

ॐ ह्रीं एक भूपवृक्ष वर्णन करो ऐसेई चारिदिशि चारिभूपवृक्षकरि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

मदअवलिप्त कपोल छंद।

मेरु वृक्ष अगनेय दिशामाही परमानौ। नैऋतमें मंदार सरस सोभाकरजानौ
वायवमें संतान मानकें सनमुख हूजै। परजात ईसान दिशा 'भविलाल,सुपूजे

ॐ ह्रीं भूपवृक्षनाम चारौंदिशि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घ निर्व० स्वाहा।

अथ मेरुवृक्ष भूप कल्पवृक्षस्थित जिनपूजा।

दोहा—कल्पवृक्षकी भूमि तहँ, समवशरणमें जान।
मेरु वृक्ष जहँ भूप है, पूजें श्रीभगवान ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष चारिदिशि चारि जिनमंदिर अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष चारिदिशि चारिजिनमंदिर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष चारिदिशि चारिजिनमंदिर अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक जोगीरासा।

पदमद्रहको नीर सु लैकैं मणिमय झारी धारौ।
जन्म जरादिक नाशन कारन श्रीजिन पदपर ढारौ॥
समवशरणमें कल्पवृक्षकी भूमि रतनमय सोहै।
मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिनपूजत सुरशिव होहै ॥ १॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष अगनेयदिशि जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मलयागिरि करपूर मिलावौ केसर रंग सुखासी ।
श्रीजिनवरके चर्न चढ़ावौ भव आतांप विनाशी ॥
समवशरणमे कल्पवृक्षकी भूमि रतनमय सोहै ।
मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिन पूजत सुरशिव होहै॥ २ ॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवजीर सुखदास अटूटे अक्षत उज्वल लीजै ।
अक्षय पद उपजावन कारन जिन ढिग पुंज सु दीजै ॥
समवशरणमे कल्पवृक्षकी भूमि रतनमय सोहै ।
मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिन पूजत सुरशिव होहै ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष अगनेयदिश जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल केतुकी कुंद चमेली सरस गुलाव सुहाया ।
जिनपद पूजि समर सर क्षयकर निज आतमपदपाया॥

समवशरणमे कल्पवृक्षकी भूमि रतनमय सोहै ।
मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिन पूजत सुरशिव होहै ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष अगनेयदिशा जिनप्रतिमाग्रे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

बावर घेवर मोदक खाजे गोझा फेनी ताजे ।
श्रीजिन चरन चढाय मनोहर रोग क्षुधादिक भाजे ॥
समवशरणमे कल्पवृक्षकी भूमि रतनमय सोहै ।
मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिन पूजत सुरशिव होहै ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष अगनेयदिशा जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप रतनमय कनक थालमें जग मग ज्योति उजारी ।
मोहतिमरके नाशन कारन जिन चरनन तल धारी ॥
समवशरणमे कल्पवृक्षकी भूमि रतनमय सोहै ।
मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिन पूजत सुरशिव होहै ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष अगनेयदिशा जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृस्नागरु करपूर मिलैकें धूप दशांग सु लावौ ।
जिनपद पूजौ खेय अगिनिमे कर्मजारि सुख पावौ ॥
समवशरणमे कल्पवृक्षकी भूमि रतनमय सोहै ।
मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिन पूजत सुरशिव होहै ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष अगनेयदिशा जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

लौंग सुपारी दाख छुहारे पिस्ता धोय धरीजै ।
श्रीजिन चरन जजे भवि प्राणी भवसागरतैं सीझैं ॥
समवशरणमे कल्पवृक्षकी भूमि रतनमय सोहै ।
मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिन पूजत सुर शिवहोहै ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष अगनेयदिशा जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चंदन चामर सुभ लैके फूल सु लाल निहारौ ।
नेवज दीप धूप फल उत्तम अर्घ पूजि अघटारौ ।
समवशरणमे कल्पवृक्षकी भूमि रतनमय सोहै ।
मेरुवृक्ष अगनेय दिशा जिन पूजत सुरशिव होहै ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्ष अगनेयदिशा जिनप्रतिमाग्रे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति मेरु भूप कल्पवृक्षस्थ जिनपूजा संपूर्ण ।

अथ मंदारभूप कल्पवृक्षस्थ जिनपूजा अडिल्ल ।

कल्पवृक्षकी भूमि विराजै सोहनी । समवशरणमें जानि सु जगमग मोहनी ॥
भूपवृक्ष मंदार परमसोभा धरैं । नैऋतदिशा प्रमाण सु स्वर पूजा करैं ॥१॥

ॐ ह्रीं मंदार भूपवृक्ष चारिदिशा चारि जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं मंदार भूपवृक्ष चारिदिशा चारि जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं मंदार भूपवृक्ष चारिदिशा चारि जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

श्री सार पदमद्रह अनूपम नीर तातैं ल्याईये।
जिनराजचरन चढ़ाय भविजिय जिन सु मंगल गाईये॥
मंदारनाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद पूजिये।
सुंदर दिशा नैऋत्य जानौ हरषि सनमुख हूजिये॥ १॥

ॐ ह्रीं मंदार भूपवृक्ष नैऋत्यदिशा जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करपूर केसर मलयसँग घसि सरस वास सुहावनी।
संसारताप निवार प्रभुजी जजौं प्रीति उपावनी॥
मंदारनाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद पूजिये।
सुंदर दिशा नैऋत्य जानौ हरषि सनमुख हूजिये॥ २॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदिशा मंदार भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अमल अक्षत अखंडित परम पावन लीजियै।
पद अखै कारन जिनसु आगैं पुंज सुंदर दीजियै॥
मंदारनाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद पूजियै।
सुंदर दिशा नैऋत्य जानौ हरषि सनमुख हूजियै॥ ३॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यादिशा मंदार भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक चमेली केवरो मचकुंद जिनआगें धरौं।
गुलदावदी सु गुलाब लैकैं मदनबान बिथाहरौं॥
मंदारनाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद पूजियै।
सुंदर दिशा नैऋत्य जानौ हरषि सनमुख हूजियै॥ ४॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदिशा मंदार भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी सु घेवर सरस मोदक सिता बहु तामें परी।
जिनराज चरन चढ़ायकैं ततकाल रोग छुधाहरी॥

मंदारनाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद पूजिये।
सुंदर दिशा नैऋत्य जानौ हरषि सनमुख हूजिये॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदिशा मंदार भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप मणिमय ज्योति जग मग कनक भाजन पायकैं।
प्रभुचरन पूजत ज्ञान हूजत मोह जात पलायकैं॥
मंदारनाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद पूजिये।
सुंदर दिशा नैऋत्य जानौ हरषि सनमुख हूजिये॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदिशा मंदार भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप सुंदर लै दशांग सु अगिनिमाहिं रलाईये।
जिन चरण पूजि अनादिके वसु कर्म पुंज जराईये॥
मंदारनाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद पूजिये।
सुंदर दिशा नैऋत्य जानौ हरषि सनमुखहूजिये॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदिशा मंदार भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम सु फल जगमाहिं जेते ढूँढ़िकरि भवि लावहीं।
जिनराज पूजत भाव सेती मोक्ष फल तहँ पावहीं॥
मंदारनाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद पूजियै।
सुंदर दिशा नैऋत्य जानौ हरषि सनमुख हूजियै॥ ८॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदिशा मंदार भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत फूल नेवज दीप धूप सु खेवते।
'भविलाल, फल फासू सु लैकरि अर्घ धरि प्रभुसेवते॥
मंदारनाम सु भूप वृक्ष अनूप जिनपद पूजियै।
सुंदर दिशा नैऋत्य जानौ हरषि सनमुख हूजियै॥ ९॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदिशा मंदार भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति मंदार वृक्षस्थ जिनपूजा समाप्त।

अथ संतान भूप वृक्षस्थ जिनपूजा सोरठा ।

कल्पवृक्षकी भूमि , भूपवृक्ष संतान है ।
पूजत सुर नर झूमि , बायव दिशा प्रमान है॥१॥

ॐ ह्रीं संतान भूपवृक्ष चारौदिशा जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्रीं संतान भूपवृक्ष चारौदिशा सम्बधी जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं संतान भूपवृक्ष चारौदिशा जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक भुजंगप्रयात छंद ।

पदमद्रह नीरं गंध गहीरं कंचनझारी भरि लावौ ।
जिनचरन सु पूजौ तन मन हूजौ और न दूजौ प्रभु पावौ॥
संतान सु वृक्षं जिन परतक्षं दरशत गक्षं पाप महा ।
सुरनर सबपूजैं तन मन हूजैं बायवविदिशामें जु कहा ॥१॥

ॐ ह्रीं बायवादिशा संतान भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिर चंदन दाह निकंदन केसर घसि तामें लीजे।
भवताप विनाशी परमलखासी श्रीजिनआगें धरि दीजे॥
संतान सु वृक्षं जिन परतक्षं दरशत गक्षं पाप महा।
सुरनर सब पूजें तन मन हूजें बायवविदिशामें जु कहा ॥२॥

ॐ ह्रीं वायवादिशा संतान भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत शुभ लीजे पुंज सु दीजे जिन पूजीजे सुखकारी।
अक्षयपद पावै बिलम न लावै जिनगुण गावैं बलिहारी॥
संतान सु वृक्षं जिन परतक्षं दरशत गक्षं पाप महा।
सुरनर सब पूजें तन मन हूजें बायवविदिशामें जु कहा ॥३॥

ॐ ह्रीं वायवादिशा संतान भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीपुष्प सु सारं परिमल धारं मधुझंकारं धरि खासे।
जिनअग्र सु धारौ काम निवारौ सुख विस्तारौ अघ नाशे॥

संतान सु वृक्षं जिन परतक्षं दरशत गक्षं पाप महा ।
सुरनर सब पूजैं तन मन हूजैं बायवविदिशामें जु कहा ॥४॥

ॐ ह्रीं बायवदिशा संतान भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

करि बाबर घेवर मोदक खाजे बहु विधि ताजे तुरत करे ।
धरि जिनपद आगें अघ सब भागैं छुधा न लागै लै सुथुरे॥
संतान सु वृक्षं जिन परतक्षं दरशत गक्षं पाप महा ।
सुरनर सब पूजैं तन मन हूजैं बायवविदिशामें जु कहा ॥५॥

ॐ ह्रीं बायवदिशा संतान भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जगमगत दिवालो दीप प्रजालो जिनपद बालौ सुखकारी।
मो तिमिर विनाशै स्वपर प्रकाशै आतम भाषै भवहारी ॥
संतान सु वृक्षं जिन परतक्षं दरशत गक्षं पाप महा ।
सुरनर सब पूजैं तन मन हूजैं बायवविदिशा में जु कहा ॥६॥

ॐ ह्रीं वायवदिशा संतान भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर धूप दशंगी परिमल चंगी अगिनि सुरंगीमें खेवौ ।
वसु कर्म्म जरावौ जिनगुण गावौ तूर बजावौ प्रभु सेवौ ॥
संतान सु वृक्षं जिन परतक्षं दरशत गक्षं पाप महा ।
सुरनर सब पूजैं तन मन हूजै वायवविदिशामें जु कहा ॥७॥

ॐ ह्रीं वायवदिशा संतान भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री लौंग सुपारी श्रीफल भारी दाख छुहारे धोय धरौं ।
जिनराज चढ़ावौ मन हरषावौ पुन्य कमावौ मोक्ष वरौं ॥
संतान सु वृक्षं जिन परतक्षं दरशत गक्षं पाप महा ।
सुरनर सब पूजैं तन मन हूजैं वायवविदिशामें जु कहा ॥८॥

ॐ ह्रीं वायवदिशा संतान भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चंदन अक्षत फूल सु लक्षित नेवज दीप सु धूप धरी ।

जिनअर्घ चढ़ासी चित्त हुलासी शिवफल पासी परमघरी॥
सन्तान सु वृत्तं जिन परतत्तं दरशत गत्तं पाप महा।
सुरनर सब पूजें तनमन हूजें बायवविदिशामें जु कहा ॥६॥

ॐ ह्रीं बायवादिशा संतान भूपवृक्ष जिनप्रतिमाग्रे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इति संतान भूपवृक्षस्थ जिनपूजा समाप्त।

अथ पारजात भूपवृक्षस्थ जिनपूजा दोहा।

कल्पवृक्षकी भूमि महँ, भूपवृक्ष परमान।
पारजात शुभ नाम है, विदिशा गनि ईशान॥

ॐ ह्रीं चारौंदिशि पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं चारौंदिशि पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं चारौंदिशि पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

गिरि सु हिमवनतैं धारा ढरी। जल सु ल्याय जाजौं जिन अघहरी।
पारजात सु वृक्ष महान है। जिन सु पूजि दिशाईसान है ॥१॥

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चंदन केसर गारियै। जिन सु पूजत दाह निवारियै।
पारजात सु वृक्ष महान है। जिन सु पूजि दिशाईशान है ॥२॥

ॐ ह्रीं ईशान दिशि पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पावन अक्षत लीजियै। पद अखय लहि पुंज सु दीजियै।
पारजात सु वृक्ष महान है। जिन सु पूजि दिशाईशान है ॥३॥

ॐ ह्रीं ईशान दिशा पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतुकी फूल सुहावने। जिन सु पूजि परमपद पावने।
पारजात सु वृक्ष महान है। जिन सु पूजि दिशाईशान है ॥४॥

ॐ ह्रीं ईशान दिशा पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

चरु मनोहर उत्तम लाईये । जिन सु पूजि छुधादि विलाईये ।
पारजात सु वृक्ष महान है । जिन सु पूजि दिशाईशान है ॥५॥

ॐ ह्रीं ईशानदिशा पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कनक भाजन दीप सु लहलहे । स्वपर भेद चढ़ावत हीं गए ॥
पारजात सु वृक्ष महान है । जिन सु पूजि दिशाईशान है ॥६॥

ॐ ह्रीं ईशानदिशा पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगरु चंदन कुंकुम खेइये । करम नाशि सु जिनपद सेइये ॥
पारजात सु वृक्ष महान है । जिन सु पूजि दिशाईशान है ॥७॥

ॐ ह्रीं ईशानदिशा पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल सु प्रासुक लै उत्तम धरौ । जिनचढ़ाय सु शिवतियकों वरौ ॥
पारजात सु वृक्ष महान है । जिन सुपूजि दिशाईशान है ॥८॥

ॐ ह्रीं ईशानदिशा पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसु सु द्रव्य सँजोय विशाल जी। जिन चढ़ावत अर्घ सु 'लालजी,॥
पारजात सु वृक्ष महान है। जिन सु पूजि दिशाईशान है ॥६॥

ॐ ह्रीं ईशानदिशा पारजात भूपवृक्षस्थ जिनप्रतिमाग्रे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ चारौ भूपवृक्ष संबंधी जयमाल दोहा ।

छट्टी भूमि सुहावनी, देखत नयन सिरात ।
तीनि योग दैकें सुनो, लाल कुँअर बलिजात ॥१॥

पद्धरी छंद ।

जय मेरुवृक्ष भूपति बखान। सब वृक्षनमें नृपसम सुजान ॥
जय सुरनर लखि नाचत प्रवीन। जय तसु बरनन भाषों नवीन ॥२॥
जय सोभा वृक्ष तनी अपार। ऊपर अरघनमें कही सार ॥
जय वृक्ष सुचारौ दिशि प्रमान। जिनभवन सु चारि कहे बखान ॥३॥

जय गंधकुटी सोभै अनूप। जय जग मगाति रवि ज्योति रूप ॥
जय सिंहासन सोभैं सु तीन। जय तापर कमल रच्यो नवीन ॥४॥
जय तापर प्रतिमा एक जान। श्रीसिद्ध स्वरूप तनी बखान ॥
जय तीन छत्र सोभैं महान। जय चमर ढुरैं आनंद खान ॥५॥
जय तिनदुति उज्वल जग मगाति। मानो दुग्धोदधि लहरि भांति ॥
जय सुरनर पूजाकरत गाय। जय वसु विधि द्रव्य सु लै चढ़ाय ॥६॥
जय अर्घ देत आनंद पाय। जयमाल पढ़त हरषत अघाय ॥
जय फिरि सुर नृत्य करैं बनाय। ताथेइ थेइ थेइ जिनगुण सु गाय ॥७॥
जय बजत वीन मिरदंग साज। सुर ताल लियें मुहचंग बाज ॥
जय नाचत प्रभुगुण मन विचारि। झम झमकि चलैं थइ थइ सुधारि ॥८॥
जय फिर परदक्षण देहिं तीन। चारौं जिनमंदिरकी प्रवीन ॥

जय फिरि फिर प्रभुको दरश सार। नयननभरि निरखतहरषधार॥९॥
जय जिनथुति फिरि मुखतें उचारि। जय जय जिन जगतें करहु पार॥
जय स्वर बरषावत सुमन सार। गंधोदक बरषा हृदयँ धार॥१०॥
जय रतनधार बरषैं विशाल। जय जग मग नभ दीपै सु लाल॥
जय दुंदभि बाजे बजैं धीर। तिनकी धुनि सुनि सुर नचैं बीर॥११॥
जय ता आगें जानो सु सार। जय मानस्थंभ हृदयँ विचार॥
मानीको मद देखत विलाय। जय जय श्रीमानस्थंभ गाय॥१२॥
इक भूपवृक्ष जिन भुवन चारि। जय याविधि भाषत हरष धार॥
जय अैसें चारौ दिशि बखान। जय सोलह जिनमंदिर प्रमान॥१३॥
जय सोलह जिनमंदिर विशाल। सुरनर मिलि पूजत हैं त्रिकाल॥
जय पूरब पुन्य उदय सु आय। जय जिनपूजत आनंद पाय॥१४॥

जय जिनमंदिर बाहिर निहारि। तरु भूमि रहे साखा पसारि॥
तहँ चंद्रकाँतिमणि शिला जानि। शशिकी दुति लज्जित भई मानि॥१५॥
जय तापर श्रीमुनि गुणनिधान। धरि ध्यान विराजत क्षमावान॥
जय दर्शन करि भवि मुनि सु पास। गुरु वचन सुने आनंद रास॥१६॥
धरमामृत मुनिवच सुनि प्रवीन। निज आतमको चिंतवन कीन॥
जय कोई मुनिढिग जोग माड़ि। बैठे सब विधि परिग्रह सु छाँड़ि॥१७॥
ऐसी सोभा जिनभुवन द्वार। सुरनर लखि क्रीड़ा करत सार॥
जय जिनगुण महिमा अगम जान। कवि कौन कहै ताको बखान॥१८॥
पर तुच्छ बुद्धि मेरी सु जान। सोधीजो पंडित बुद्धिवान॥
उपदेश पाय सबसुख सु राय। भविलाल सु जिनपद सीस नाय॥१९॥

दोहा– श्रीजिनमहिमा अगम है, को कवि पावै पार।

तुच्छ बुद्धि भविलालजी, भाषा रची विचार ॥२०॥

ॐ ह्रीं चारोंदिशि पारजातभूपवृक्षस्थ जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो बाँचै यह पाठ सरस मन लायकैं। सुनै भव्य दै कान सु मन हरषायकैं
धन धन्यादिकपुत्रपौत्र संपति धरै, नरसुरके सुखभोगि बहुरि शिवतियवरै ॥

इत्यासीर्वाद ।

इति कल्प वृक्ष वनस्थ जिनमंदिर पूजा समाप्त ।

अथ सातमी भूमि वरनन भुजंगप्रयात् छंद ।

गनो सातमी भूमि सुंदर सु खासी। बने तूप जानो महा सुक्ख रासी ॥
गनो ओर बांई गनो ओर दाँही। सु अंतर गली बीचके माहिं भाषी ॥
बने द्वार सारं आभ्यंतर निहारं। सु चौथी विचारं सु वेदी प्रमानो ॥
कँगूरा विराजैं भले वुरज राजैं। सु सुंदर जु छाजैं हृदयमाहिं आनौ ॥

ॐ ह्रीं सातमी भूमिकी गली बीच स्तूप बांई दांहिनी तरफ अंतर गली दरवाजे आभ्यंतर चौथी वेदी कँगूरा वुरज संयुक्त समोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व०स्वा० ।

जानि वेदीमें चित्राम जू। लसत सुंदर हैं अभिराम जू॥
कहीं श्रीमुनि संग विराजते। देखियै चित्राम सु राजते॥ ३॥

ॐ ह्रीं चौथी वेदी चित्रामकरि संयुक्त समोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपा० स्वाहा।

कहुं सु मुनिवर ध्यान सु धरि रहैं। कहुं सु वृषउपदेश भले कहैं॥
गिरिविषैं ठाढ़े धरि जोग जू। चित्र अैसे बिरकित भोग जू॥४॥

ॐ ह्रीं चौथी वेदी चौथे कोट बीच सप्तमीभूमि आत्मलीन धर्मोपदेश दातार चित्राम करि संयुक्त समोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चलत भूमि सु नयन निहारिकें। देखियत मुनिराज विचारिकैं॥
देत श्रावग दान सु जानिकैं। रतन तिनघर बरषत आनिकैं॥५॥

ॐ ह्रीं चौथी वेदी चौथे कोट बीच सप्तमी भूमि विषैं आत्मलीन धर्मोपदेश दातारमुनि समहकरि संयुक्त समोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवलोकांतिक पाड़े विषैं । बसतते सुंदर चित्रत दिखैं ॥
कहुं सु नभ चित्राम सु देखियै । छिपत बादरमें रविपेखियै ॥ ६ ॥
निकसि ज्योति सु जगमग जानियै । लालस्याम सु स्वेत प्रमानियै ॥
वैंजनी कहुं जरद निहारियै । कहुं सुरंग प्रियंगु विचारियै ॥ ७ ॥
स्याम देखि घटा सु निहारिकें । चमकती बिजुली लखि धारिकें ॥
देखि कुहकत मोर सु आनियौं । नृत्य करत सु चित्र प्रमानियौं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं नानाविधि चित्रामचित्रत चौथीवेदी करि संयुक्त समोशरणस्थ जिनेंद्राय अर्घं नि०स्वा०

अड़िल्ल ।

वेदी भाग सु चारि हृदयमें आनिये । स्वेत बरनहै कोटसु चौथो मानियै ॥
हीराहीको बन्यो भागसोचारजू । रच्यो धनद निजहाथ महा सुखकारजू ॥

ॐ ह्रीं चौथाकोट चौथीवेदी भागचारि स्वेतवर्णसंयुक्तसमाशरेणास्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०स्वा०

बलय व्यासबाईस भागसो पेखियै । नाना विधि मंदिरपंकतितहँ देखियै ॥

कंचनमय थंभा तिनके परमानियै। हीरनकरि सोजड़ित हियेमें अनियै॥

ॐ ह्रीं सातई भूमि वलय व्यास भाग बाईस मंदिरनकी पंकति करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

दुखने तिखने और चौखने सारजू। बनी बैठकें सुंदर सोभादारजू॥
दल परदा मोतिनकी झालरि पेखियै। नाचैं देवी देव विद्याधर देखियै॥

ॐ ह्रीं सातमीभूमिमंदिरकारिसंयुक्ताय समोशरणस्थिताय जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा० ।११॥

तिन मंदिरके शिखर चले आकासमें। ऊपर कलशा सुंदर सोहैं तासुतें॥
दंडधरैं सो धुजा लहकतीं देखियै। सुरनर टेरत मनौ सु नैनन पेखियै॥

ॐ ह्रीं सातमीभूमि मंदिरसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा ॥१२॥

कहुं मंदिरमें देव सु पौंढ़े सारजू। सुंदर सेज्या बिछी परम सुख कारजू॥
कहुं मंदिरमें बीन बजैं सुरतालसों। कहुं बाजे मुह चंग मृदंग सु ढारसों॥
कहुं मंदिरमें थेई थेई थेई ध्वनिछै रही गावैं जिनगुण सुरी हरषहियमेंसही॥

कहूं बनी हैं सार नृत्यसाला तहां। करैं सु सुंदर गान नचैं सुरतिय जहां ॥

ॐ ह्रीं ऐसीविधि सातमीभूमि अनेकरचनासंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०॥१४॥

सुंदरी छंद।

तिन सु मंदिर बीच निहारियै। चौक कुरसीदार विचारियै ॥
रतन जड़ित लगे सोपान जू। चढ़ि सु मंदिर ऊपर मान जू ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं सातई भूमि मंदिर बीचचौकऊपरमंडफसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं नि०

सहस एक सु खंभा जानियौं। चौक ऊपरतैं परमानियौं ॥
बनि रह्यो मंडफ सुखकार जू। लसत कलशाधुजा निहार जू ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं सातई भूमि मंदिरबीच चौक ऊपर मंडफसंयुक्तसमोशरण स्थितजिनेंद्राय अर्घं

लसत तोरन सुंदर पेखियै। रतनमाल सु लहकति देखियै ॥
झकझकाति सुजोति उदैकही। पुन्य जानि सु जिनवरको सही ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीमंडफसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस गंधकुटी तहँ जानियै । तीनि सिंघासन परमानियै ॥
छत्र तीनि सु शिरपर सोहने । लसत केवलज्ञानी मोहने ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमंडफ विषैं केवलज्ञानी संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

अड़िल्ल ।

ताहीमैं श्रुतकेवलि बैठे देखियै । परम धरम दातार सु नैनन पेखियै ॥
चारौ कोने चारिसुछोटे जानियै । लघु मंडफ परमान हृदयमें आनियै ॥

ॐ ह्रीं श्रुतकेवली मंडफ विषैं विराजमान समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

तिनहींमें मोतिनकीझालरिसारजू । बँधीसु बंदनमालरतनमयधारजू ॥
तहँ जिनवानी सार सु शास्त्रबखानते । सुनैभव्यजेजीव लहैं ते ज्ञानतैं ॥

ॐ ह्रीं सातमी भूमि अनेक रचना करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व०स्वा० ।

ज्ञानगम्यसोजानिदेखिसबअघहरै । बचन गम्य सो नाहिंबरनकौलोंकरैं ॥
श्रीजिनमहिमासारनिहारविशाल जी भाष्योवरननगायनामभविलालजी

दोहा—जो कछु चूक विलोकिकैं, सोधौ जे गुणवान।
छमाभाव मोपर करौ, कवि लघुताई जान ॥२३॥

ॐ ह्रीं सातमी भूमि अनेक रचना संयुक्त समोशरणास्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०।

अथ केवलज्ञान पूजा प्रारभ्यते।

दोहा। भूमिसातईके विषैं, कहे केवली गाय।
तिनपद सुरनर मिलि सबै, पूजत निरमल भाय ॥१॥

ॐ ह्रीं केवलिज्ञानी संयुक्त अत्र अवतर अवतर संवौषट्। इति आह्वानन।
ॐ ह्रीं केवलीजिन संयुक्त अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। इति इस्थापनं।
ॐ ह्रीं केवलीजिन सहित अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। इति संनिधीकरणं।

अथ अष्टक।

सुगुण हम ध्यावें, सुगुण हम ध्यावें (इस चालमें पढ़ो)
जय समव शरणमें केवलज्ञानी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०।

पूजत सुरनर मिलि भवि प्राणी, सुगुण हम ध्यावें, सुगुण०
जय पदमद्रहको नीर सु लैके सुगुण हम ध्यावें सुगुण०।
जयपूजत जिनपद धार सु दैकें सुगुण हम ध्यावें, सुगुण०॥१॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जय मलयागिरि चंदन घसि वासी सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय भवआतप जजैं जन नाशी सुगुन हम ध्यावें सुगुण०॥
जय समवशरणमें केवलज्ञनी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०।
पूजत सुरनर मिलि भवि प्राणी सुगुण हम ध्यावें सुगुण०॥२॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ जिनप्रतिमाग्रे चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

जय मुक्ताफल सम अक्षत लावौ, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय जिनपद पूजि अखैपद पावौ, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०

जय समवशरणमें केवलज्ञानी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०।
पूजत सुरनर मिलि भवि प्राणी सुगुण हम ध्यावें सुगुण०॥३॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जय कमल केतुकी फूल सुखासे, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय जजत जिनेश्वर परिमल वासे, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय समवशरणमें केवलज्ञानी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०।
पूजत सुरनर मिलि भवि प्राणी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण० ॥४॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ जिनप्रतिमाग्रे पुष्पान् निर्वपामीति स्वाहा।

जय फेनी मोदक खाजे लावौ, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय छुधा नशै जिनचरन चढ़ावौ, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय समवशरणमें केवलज्ञानी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०।
पूजत सुर नर मिलि भवि प्राणी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०॥५॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जय मणिमय दीप वलै शुभ वाती, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय जजत जिनेश्वर मोह सु घाती, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय समवशरणमें केवलज्ञानी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०।
पूजत सुर नर मिलि भवि प्राणी सुगुण हम ध्यावें सुगुण०॥६॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जय धूप मनोहर खेय दशांगी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय कर्म जरें जिनपूजि सुरांगी, सुगुण हमध्यावें सुगुण०
जय समवशरणमें केवलज्ञानी, सुगुण हम ध्यावें सुगुण०।
पूजत सुर नर मिलि भवि प्राणी सुगुण हम ध्यावें सु० ॥७॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जय उत्तमफल जगमाहिं सु जेते , सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय पूजि जिनेश्वर शिवफल देते , सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय समवशरणमें केवलज्ञानी , सुगुण हम ध्यावें सुगुण० ।
पूजत सुर नर मिलि भवि प्राणी सुगुण हम ध्यावें सुगुण० ॥८॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जय जल फल अर्घ चढ़ाय सुज्ञानी , सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय लाल सदां जिन पूजत प्राणी , सुगुण हम ध्यावें सुगुण०
जय समवशरणमें केवलज्ञानी , सुगुण हम ध्यावें सुगुण० ।
पूजत सुर नर मिलि भवि प्राणी सुगुण हम ध्यावें सुगुण० ॥९॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ जिनप्रतिमाग्रे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाल दोहा।

भूमि सातमी जानियैं, मंदिर वीच विशाल।
श्रीमंडफमैं केवली, राजत हैं जयमाल ॥१॥

पद्धड़ी छंद।

जय जय जिनकर्म हने दयाल। जय केवलपद पायो विशाल ॥
जय श्रीमंडफ सोभै अनूप। रचि सहस्र थंभ सुंदर स्वरूप ॥२॥
जय तिनपर तोरन बने सार। झालरि मोतिनकी बँधी धार ॥
रतननकी बंदनमाल जान। जय झक झकाति आनंद खान ॥३॥
जय श्रीमंडफ तापर निहारि। जय ऊंचे कलशा लसैं सार ॥
लहकैं सु धुजा मनो नचैं सोय। ऐसी आसंका हृदयँ होय ॥४॥
जय मंडफ विच जानौ प्रवीन। जय गंधकुटी सोभै नवीन ॥
जय तीनपीठपर लसैं सोय। कलशा अरु धुजा उतंग जोय ॥५॥

जय सिंहासन तावीच तीन। शिर छत्र तीनि सोभैं नवीन॥
निकसी दुतिरस्म चली असेस। दशदिशिमैं फैलि रही सुवेस॥६॥
तहँ केवलज्ञानी जिन अनूप। जिनराज विराजत सरस रूप॥
जय वानी बरषत मेघ धार। जय भव्यजीव आनंदकार॥७॥
जय सुर ढोरत हैं चमर जान। जय जय जय मुख बोलत प्रमान॥
जय सुर नर मुनि बैठे अपार। जिनराज सुगुण गावैं विचार॥८॥
जय सुरपति पूजा करत आय। वसु द्रव्य सु उज्वल लै बनाय॥
फिरि अस्तुति इंद्र करै सु गाय। भव सागर तारौ जगतराय॥९॥
जय तुम देवनके देव ईश। सुर नर अरु इंद्र नवाय शीस॥
तुमकों पूजत मन लाय देव। फिरिफिरि मुख देखि करैं जु सेव॥१०॥
जय पूजा करि जयमाल गाय। परदक्षण तीनि दई सु जाय॥

फिरि फिरि सुर नृत्य करैं बनाय। ता थेइ थेइ थेइ थेइ तालताय ॥११॥
जहँ बाजत वीन मृदंग साज। मुहचंग मुरज मुरली अवाज ॥
जय सुर गावत धुनि रही पूर। गावत सु ख्याल झुरमुट हजूर ॥१२॥
जय छम छम छम घुँघुरू बजाय। जय ठम ठम ठमकि चलैं सु धाय॥
जय द्रम द्रम द्रम बाजत मृदंगजय झुकि झुकि झुकि नाचत अभंग१३
जहँ झूंमर खेलत सुर अपार। बाजत समाज आनंदकार ॥
जय फिरि फिरि जिनकौंशीसनाय। बहु पुन्य उपावत सुर सुराय॥१४॥
जय ताही मंडफमैं निहारि। श्रीश्रुत केवल हृदयें विचारि ॥
जय मंडफ बरनन कियो गाय। मंडफके चारौ कोन लाय ॥ १५ ॥
जय छोटे मंडफ चारि जानि। मणि मई रतन सो जड़े मान ॥
जय तिनमें शास्त्र बचत निहार। षट द्रव्यनकी चरचा विचार ॥१६॥

जय भव्यजीव समझैं सुधार। जिनधर्म्म परम आनंदकार ॥
जय भूमि सातईंको वखान। जय भाषो सुनि अघ होय हान ॥१७॥
जय जय केवलिज्ञानी जिनेश। जय तिनपद पूजत हैं सुरेश ॥
जय जय जै वरनन वहु विशाल। जय शीशनायपूजत सु 'लाल' ॥१८॥

दोहा—भूमि सातईंकी कही, पूजा भई सुजान।
केवलज्ञानी देखिकैं, पूजत ते बुधिवान ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं सातमी भूमि केवलिज्ञानी संयुक्ताय पूजन पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अड़िल्ल।

जो वांचै यह पाठ सरस मन लायकें। सुनै भव्य दै कान सु मन हरषायकें॥
धन धान्यादिक पुत्र पौत्र संपतिधरैं, नरसुरके सुखभोगिबहुरि शिवतियवरैं

इत्यासीर्वाद पुष्पांजुलिं क्षिपेत्।

अथ पूरवदिश नव स्तूप पूजा प्रारभ्यते दोहा ।

समवशरण जिनराजके, पूरब दिशा बताय ।
सोभत तूप सुहावने, पूजौ नव हरषाय ॥१॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमा समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूपस्थ जिनप्रतिमा समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक सोरठा ।

नीर सु द्रहको सार, रतन जड़ित झारी भरौं।
तूप सु नव सुखकार, पूरबदिशि पूजा करौं ॥१॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशा नवस्तूपस्थ जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन केसर गारि, रतन कटोरी में धरौं ।
तूप सु नव सुखकार, पूरबदिशि पूजा करौं ॥२॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे चंदन निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्ताफल उनहार, अक्षत जिनआगें धरौं ।
तूप सु नव सुखकार , पूरबदिशि पूजा करौं॥३॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

महँके फूल अपार , काम देखि आपुन डरो ।
तूप सु नव सुखकार , पूरवदिशि पूजा करौं॥४॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे पुष्पान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फेनी गोझा सार , उत्तम षटरस संचरौ ।
तूप सु नव सुखकार , पूरवदिशि पूजा करौं॥५॥

ॐ ह्रीं पूरवादिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग मग दीप अपार , मोह नाशि जगते तरौं ।
तूप सु नव सुखकार , पूरवदिशि पूजा करौं॥६॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप अगिनिमें डारि , अष्ट कर्म आपुहि जरैं ।
तूप सु नव सुखकार , पूरवदिशि पूजा करैं ॥७॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल उतकृष्ट सम्हारि , शिवसुंदरि क्षणमे वरौं ।
तूप सु नव सुखकार , पूरवदिशि पूजा करौं॥८॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलफल अर्घ बनाय , 'लाल,सु जिनपायँन परैं ।
तूप सु नव सुखकार , पूरवदिशि पूजा करैं॥९॥

ॐ ह्रीं पूरवदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ दक्षिण दिशि नवतूप्य पूजा प्रारभ्यते ।

दोहा-समवसरणजिनराजको,दक्षिणदिशावताय।

सोभत तूप सुहावने , पूजौ नव सुखदाय ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक सोरठा ।

नीर सु द्रहको सार , रतननकी झरी भरौं ।
तूप सु नव सुखकार , दक्षिणदिशि पूजा करौं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन केसर गारि , भव आताप विथा हरौं ।
तूप सु नव सुखकार , दक्षिणदिशि पूजा करौं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्ताफल उनहारि , अक्षत जिनआगें धरौं ।
तूप सु नव सुखकार , दक्षिणदिशि पूजा करौं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

महके फूल अपार , काम देखि आपुन डरो ।
तूप सु नव सुखकार , दिक्षिणदिश पूजा करौं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे पुष्पान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फेनी गोझा सार , उत्तम षटरस संचरौं ।
तूप सु नव सुखकार , दक्षिणदिशि पूजा करौं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जगमग दीप निहारि , मोह नाशि जगते तरौं ।
तूप सु नव सुखकार , दक्षिणदिशि पूजा करौं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अगिनिमैं डारि, दुष्ट कर्म आपुहि जरें।
तूप सु नव सुखकार, दक्षिणदिशि पूजा करैं ॥७॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उतकृष्ट सम्हारि, शिव सुंदरि क्षणमें वरों।
तूप सु नव सुखकार, दक्षिणदिशि पूजा करों ॥८॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफल अर्घ सु धारि, 'लाल, पूजि पायँन परें।
तूप सु नव सुखकार, दक्षिणदिशि पूजा करैं ॥९॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इति दक्षिणदिशि नवस्तूप पूजा समाप्त।

अथ पश्चिमदिशि नवस्तूप पूजा प्रारभ्यते ।

दोहा। समवशरण जिनराजको , पश्चिम दिशा बताय ।
सोभत तूप सुहावने , पूजौं नव सुखदाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशा नवस्तूप जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्रीं पश्चिमदिशा नवस्तूप जिनप्रतिमा समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं पश्चिमदिशा नवस्तूप जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक सोरठा ।

नीर सु द्रहको सार , रतननकी झारी भरौं ।
तूप सु नव सुखकार , पश्चिमदिशि पूजा करौं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन केसर गारि , भव आताप विथा हरौं ।
तूप सु नव सुखकार , पश्चिमदिशि पूजा करौं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल उनहारि , अक्षत जिनआगें धरों।
तूप सु नव सुखकार , पश्चिमदिशि पूजा करों॥ ३॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

महके फूल अपार , कामदेखि आपुन डरो।
तूप सु नव सुखकार , पश्चिमदिशि पूजा करों॥ ४॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे पुष्पान् निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी गोझा सार , उत्तम षटरस संचरों।
तूप सु नव सुखकार , पश्चिमदिशि पूजा करों॥ ५॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप निहारि , मोह नाशि जागतें तरो।
तूप सु नव सुखकार , पश्चिमदिशि पूजा करों॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अगिनिमें डारि, दुष्टकर्म आपुहि जरें।
तूप सु नव सुखकार, पश्चिमदिशि पूजा करें॥ ७॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उतकृष्ट सम्हारि, शिवसुंदरि आपुहि वरों।
तूप सु नव सुखकार, पश्चिमदिशि पूजा करों॥ ८॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल अर्घ बनाय, 'लाल, सु जिनपायँन परैं।
तूप सु नव सुखकार, पश्चिमदिशि पूजा करैं॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इति पश्चिमदिशा नवतूप पूजा।

अथ उत्तर दिशा नवस्तूप सम्बन्धी पूजा प्रारभ्यते ।

दोहा । समवशरण जिनराज को, उत्तर दिशा बताय ॥
सोभत तूप सुहावने, पूजो नव सुखदाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तर दिशा नवस्तूप जिनप्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमा समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक-सोरठा ।

नीर सु द्रहको सार , कंचनझारीमें भरौं ।
तूप सु नव सुखकार , उत्तरदिशि पूजा करौं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन केसर गारि , भव आताप विथा हरौं ।
तूप सु नव सुखकार , उत्तर दिशि पूजा करौं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल उनहारि, अक्षत जिनआगें धरौ।
तूप सु नव सुखकार, उत्तर दिशि पूजा करौं॥ ३॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशा नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

महके फूल अपार, कामदेखि आपुहि डरै।
तूप सु नव सुखकार, उत्तर दिशि पूजा करैं॥ ४॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे पुष्पान् निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी गोझा सार, उत्तम षटरस संचरौ।
तूप सु नव सुखकार, उत्तर दिशि पूजा करौं॥ ५॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप निहारि, मोह नाशि जगतैं तरो।
तूप सु नव सुखकार, उत्तर दिशिपूजा करौं॥ ६॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप अगिनिमें डारि , दुष्ट कर्म आपुहि जरैं ।
तूप सु नव सुखकार , उत्तर दिशि पूजा करैं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल उतकृष्ट सम्हारि , शिव सुंदरि क्षणमें वरौं ।
तूप सु नव सुखकार , उत्तर दिशि पूजा करौं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल अर्घ सुधारि , लाल, सु जिनपायँन परैं।
तूप सु नव सुखकार , उत्तरदिशि पूजा करैं ॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप जिनप्रतिमाग्रे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाल दोहा ।

गली सातमीके विषैं , चारौ दिशा विशाल ।

तूप सु छत्तिस जानियै , सुनौ सु भवि जयमाल ॥ १ ॥

पद्धरी छंद ।

जय जय छत्तीसौ तूप जान । जय चारौदिशिके कहे मान ॥
जय तिनकौ नमन करौं त्रिकाल । जयवरनन भाषौं बहुविशाल ॥ २ ॥
जय भूमि सातईं बीच जान । जय नव नव चारौदिशि बखान ॥
जय पूरबदिशि नव जानि तूप । जय दरबाजे सोहैं अनूप ॥ ३ ॥
तिनमें इक तूप तनो सु बर्न । जय भाषत हैं शिव सुक्ख कर्न ॥
जय तीनपीठ जानो प्रमान । मणिमई रतनसो जड़े जान ॥ ४ ॥
तिनमै श्रीतूप लसैं विशाल । जय लसैं सु मोती रतन माल ॥
जय जिनतनतैं ऊंचो निहार । जय बारहगुणो हिये विचार ॥ ५ ॥
जय ऊंचो शिखर लसै सु जान । तापर कलशा सुंदर प्रमान ॥

शुभ दण्डधरें सु धुजा विचार। लहकें नभमें आनन्दकार ॥ ६ ॥
जय तिनमें तोरन सोभ मान। मणिमई रतनसों जड़े जान ॥
जय मोतिनकी झालरि रसाल। जय जगमग जगमग होत लाल ॥७॥
जय तिनपर तोरन तीन सार। जय सिंहासन सोभै विचार ॥
जय तिन दुति देखि छिपो जु सूर। निकसी दुति दश दिशि रही पूर ॥८॥
जय तिनपर राजत जिन सु देव। जय जय अरहंत जु सिद्ध सेव ॥
इनकी प्रतिमा जानो विचार। भविजीवनकों आनंदकार ॥ ९ ॥
जय तिन सु शीसपर छत्र तीन। त्रिभुवनके पति भाषत प्रवीन ॥
जय वसु विधि मंगल द्रव्य आन। जय राजत मंगलकी सु खान ॥ १० ॥
जय देवी देव तहां अपार। बैताड़ तने नर बहु विचार ॥
जय वसु विधि द्रव्य जु सार लाय। जय पूजत श्रीजिनके सु पायँ ॥११॥

जय जय जय जिनगुण माल गाय। जय अस्तुति फिर भाषत बनाय॥
जय सब मिलि नृत्य करैं सु जान। जय बजत मृदङ्ग सु ताल मान १२॥
मुहचंग बीन इन आदि साज। सुर ताल सहित निकसै अवाज॥
जय थेई थेई थेई धुनि होत सार। जय सुर नर तिय नाचैं निहार १३॥
जय जिनगुण गावत हरष धार। बहुपुन्य बढ़ावत सुर विचार॥
जय धन्य जन्म तिनको बखान। जय जिनदरशन देखत सु जान॥१४॥
जय सफल जन्म तिनको प्रमान। जिन पूजि सु पावन तन सु जान॥
जय एक तूप बरनन निहार। जानो इकदिशिमें नव विचार॥१५॥
चारौदिशि छत्तिस कहे गाय। सुर नर पूजत आनन्द पाय॥
छत्तीस तूप बरनन विशाल। जय शीशनाय भाषत सु 'लाल, ॥१६॥

दोहा। गली सातईं चारि दिशि, तूप सु छत्तिस जान।

शुभ शुभ अक्षर लायकें, पूजाकरी बखान ॥१७॥

ॐ ह्रीं चारौ दिशा सम्बन्धी छत्तीस स्तूप पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अड़िल्ल।

जो वांचै यह पाठ सरस मन लायकें। सुनै भव्य दै कान सुमन हरषायकें॥
धन धान्यादिक पुत्रपौत्र संपति बढ़ै, नरसुरकेसुखभोगिवहुरिशिवतियबरै

इत्यासीर्वाद (पुष्पांजुलि क्षिपेत)

इति चारौ दिशाके छत्तीस स्तूप सम्बन्धी पूजा।

अथ श्रीमंडफ सम्बन्धी अर्घ प्रारभ्यते—अडिल्ल।

चौथा नाम सुकोट बज्रमय जानियें। हीरा कैसी क्रन्तिस्वेतमनआनियें॥
ऊंचों जिनतननतैं जु चौगुनो देखिये। एक भाग मोटाई परम विशेखिये॥१

ॐ ह्रीं चौथाकोट बज्रमय स्वेतवर्ण जिनतननतैं चौगुना तुंग भाग एक मोटा संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फिरिकैसोहैकोटकिरनतातैंकढ़ी,जगमगजगमगजोतिहोतिदशदिशिबढ़ी
तहांरातिदिनकोकुछभेदनजानियैं।पञ्चवरनकेरतनजड़ितमनअनियैं ॥२॥

ॐ ह्रीं चौथाकोट बड़ी क्रांति कर संयुक्त समवशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

वुरज कँगूरा धुजा सहित सोभै तहाँ। नीचैं कुरसी सरस विराजति है जहां
भूमिसातईं तैं सोपान लगे सही। सुवरनमणिमयजड़ितचढ़तसोभालही३॥

ॐ ह्रीं चौथाकोट वुरज कँगूरा धुजा कर सोभित कुरसीदार सातमी भूमितैं शिवान करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ि शिवानपै चौक सु आगें देखियै। कैसा है सो चौक मनिमई पेखियै॥
चौक छोड़िकें वज्र कोटके जानियै। दरवाजे सु विशाल लसैउर आनियै४

ॐ ह्रीं चौथाकोट दरवाजे करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

दरवाजे तोरन जुत सौभ सार जू। नाना विधिके रतन जड़े सुखकार जू॥
लगे किवार निहार हरित पन्नामई। झलकें सब चित्राम सरससोभालई॥५

ॐ ह्रीं चौथाकोटदरवाजेअनेकरचनाकरिसंयुक्तसमोशरणास्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

तिनमें सोभैं जाल बंद रूमी जहां। और जाल सुन्दर सु विराजत हैं तहां॥
द्वारपालसुरजानिकल्पवासीसही। पुन्यसहितसोखड़ेगदाहाथनलही॥६॥

ॐ ह्रीं चौथाकोट दरवाजे द्वारपाल करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व०

द्वारपालशिरसुकटमहासोभाधरैं। पदमरागमणिजड़ितक्रांतिजगमगकरैं
काननकुंडलसार हार हृदयें लसैं। रतनजड़ितकरकड़ाहाथमुदरीबसै॥७॥
पहुँचीपहुँचनमाहिंविराजतनग जड़े। नएवस्त्रतनपहिरि सुसुंदर सुर खड़े॥
आभ्यंतर सुन्दर गनि बेदी पाचईं। ताको भी वरनन अैसेही सांचईं॥८॥

ॐ ह्रीं चौथाकोटबेदीपांचईदरवाजेद्वारपालसंयुक्तसमोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व०

वज्रकोट बेदी सु पाचईं जानियै। भूमि आठईं गली सु नैनन आनियै॥
गली भूमिबाईं अरुदहिनीओर जू। तासुभूमिमैंचारि सु अंतरजोर जू ९॥

ॐ ह्रीं वज्रकोटपंचमवेदीआठमीगलीकीभूमिबाईदहिनीतरफभूमिविषैं चारिअंतरालकरि संयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्र य अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तिनमें द्वैद्वै गली तनी बेदी कही। दोय दोय बिचभीतिफटक मयहैंसही॥
चारिभीतिबिचअंतरतीनि जु पेखियै। तेई कोठातीनिसुनैनोदेखियै॥१०॥
चारिदिशाकीसोलहभीति विचारियै। भए सुबारहकोठा नैन निहारियै॥
तिनकोठनमेंशिखरसुगुमटी दारजू। तिनपर कलशाधुजाविराजैं सार जू॥
कोठनके दरबाजनपै रचना रची। बंदनमालसुबंधीरतनमोतिन खची॥
घंटनकी पंकति सुंदरसोभैं जहां। सुनिके देव सु शब्द नृत्यठाने तहां॥१२

ॐ ह्रीं आठईभूमिबारैंकोट ऐसीविधिसोंकोठाकरिसंयुक्तसमोसरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं०

सुंदरी छंद।

गनि दिशा अगनेय विषैं सही। लसत कोठा तीनि प्रभू कही॥
मुनिसुरींसुकलपवाशिनि गनो। तियमनुष्यनकी तीजीभनो॥१३॥

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशाकोठातीनविषैं मुनिकल्पवासिनीमनुष्यनीसंयुक्तसमोशरणस्थजिनें० अर्घ०

दिशि सु नैऋत कोठा तीनि जू । सरस जोतिषिनी भरि लीन जू ॥
सुनहिं जिनबच व्यंतरनी तिया । भवनवासिनितीजेमैंलिया ॥१४॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदिशाविषैं कोठातीनि जोतिषनीव्यंतरनीभवनवासिनीसंयुक्तसमोशरण स्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीनिकोठा बायवमें कहा । भवनवासी व्यंतर सुर लहा ॥
ज्योतिषी सुर बैठे सार जू । सुनत जिनवानी हित धार जू ॥१५॥

ॐ ह्रीं बायवदिशा कोठातीनिविषैंभवनवासीज्योतिषीव्यंतरसुरवासीकारिसंयुक्त समोशरण स्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

परमदिशि ईशान विचारियै । लसत कोठा तीनि निहारियै ॥
कल्पवासी सुर नर देखियै । बारमें तिर्यंच सु पेखियै ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं ईशानदिशाकोठातीनिकल्पवसीदेवनरतिर्यंचसंयुक्तसमोशरणस्थजिनेंद्राय अर्घ०

वज्र कोट सु सूची जानियै । भाग अड़तालीस प्रमानियै ॥
तिस विषैं गनि चौथा कोटजू । वज्रमय सुंदर सुभ जोट जू ॥१७॥
आठमी गनि भूमि सभा सही । पांचमी वेदी सुंदर लही ॥
वलय व्यास दुतरफाके गहो । भाग चौविस तामें घटि लहो ॥१८॥

ॐ ह्रीं वज्रकोट सूचीभाग अड़तालीस तिसमेंसेती वलयव्यास भागचौवीस घटाये सूची भागचौविस रहे संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

रहे भाग सु चौविस जानियैं । सहस चारि सु धनुष प्रमानियैं ॥
जानि सूची मनमें लायकैं । धनुष आठ सु ऊंची गायकैं ॥१९॥
लसत सोरह पैड़ी सार जू । प्रथम पीठ हृदयमें धार जू ॥
रतन वैडूरज मय बनि रही । सरस सोभा करि सुंदर कही ॥२०॥

ॐ ह्रीं प्रथम पीठ चारि हजार धनुष सूची आठ धनुष ऊंची वैडूर्य रतन मय करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रथम पीठ विषैं तुम जानियों। जक्षदेव खडे परमानियों॥
हाथ जोरि सु भक्तिकरैं खड़े। धरम चक्र सु मस्तग पर धरे॥२१॥

ॐ ह्रीं प्रथम पीठ विषैं जक्षदेव हाथ जोरे खड़े धर्मचक्र मस्तग पर धरे संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वाहा।

धरमचक्र सु नयन निहारिये। लसत पहियाकार विचारिये॥
बनि रहे आरे सु हजार जू। सरस क्रांति विशेष सु धार जू॥२२॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्र करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम पीठ विषैं दिशि चार जू। धरमचक्र सु चारि निहारिजू॥
वसु सु मंगल द्रव्य बने तहां। प्रथम पीठ विराजत है जहां॥२३॥

ॐ ह्रीं प्रथमपीठचारिदिशिधर्मचक्रवसुमंगलद्रव्यसंयुक्तसमोशरणस्थ जिनेंद्राय अर्घं नि०।

इंद्र आदिक जे गुणवान जू। करत पूजा श्री भगवान जू॥
उतरिकैं स शिवाननतें तहां। निज सु कोठन बैठत हैं जहां॥२४॥

ॐ ह्रीं जिनपूजनकरिइंद्रनिजकोठावैठतसंयुक्तसमोशरणस्थजिनेंद्राय अर्घं निर्व०स्वा०

पीठ दूजी पर चढ़ि ना लहैं। जानि जिनवानीकों इह कहैं ॥
पुन्य श्रीजिनदेव बिशाल जू। करत पूजा इन्द्र त्रिकाल जू ॥२५॥

ॐ ह्रीं पहिली पीठ पर इंद्र पूजा करैं दूजी तक न जांय यह अतिसय करि संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जानि ऊपर पीठ सु दूसरी। धनुष पच्चिससे सूची धरी ॥
धनुष चारि सु ऊंची जानियैं। लसत आठ शिवान प्रमानियैं ॥२६॥

ॐ ह्रीं दूजीपीठसुवर्णवर्णकरिसंयुक्तसमोशरणास्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०।

पीठ दूजी परधि निहारियै। लसत खंभ अनेक विचारियै ॥
बनि रहे सु सुराही दार जू। सरस सुंदर पहल सुधार जू ॥२७॥

ॐ ह्रीं दूजी पीठ खंभा अनेक संयुक्त समोशरण स्तिथ जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वा०

लसत कंचनमय खंभा खड़े। पंच बर्न सु रतननसों जड़े ॥

बनि रहीं मरगोलैं सार जू । शिखर सहित सु नैन निहारजू ॥

ॐ ह्रीं दूजीपीठखंभशिखरमरगोलानिसंयुक्तसमोशरणस्थ जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०

बनिरह्यो श्रीमंडफ देखियै । बँधिय झल्लरि मोतिन पेखियै ॥
और रचना बहुत बनी तहां । लसत कलशा तुंग ध्वजा जहां ॥२६॥

ॐ ह्रीं श्रीमंडफअनेकरचनासंयुक्तसमोशरणस्थजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन सु तनतैं ऊंचो जानियै । लसत बारहगुणो प्रमानियै ॥
फिरि सु मंडफ विदिशा चारिजू । लसत वृक्ष अनेक निहार जू ॥३०॥

ॐ ह्रीं श्रीमंडफजिनतनतैंबारहगुणोऊंचोअशोकवृक्षसंयुक्तसमोशरणस्थ जिनेंद्राय अर्घं नि०

तरु अशोक सु नयन निहारिकैं । भजत शोक महाभय धारिकैं ॥
जड़ित हीरा मूल सु जानियै । कनक मय साखा परमानियै ॥३१॥
पत्र पन्नाके रँग देखियै । फूल लाल सु नयनन पेखियै ॥
फल मनोहर सुंदर गाइया । लसत मंडफ पर सो छाइया ॥३२॥

ॐ ह्रीं ऐसाअशोकवृक्षश्रीमंडफऊपरसोभासंयुक्तसमोशरणस्थजिनेंद्राय अर्घं नि०

पीठ दूजी आठ दिशा गनो। तहँ सु आठधुजा लहकैं भनो॥
चक्र हाथी सिंघ विशेखियै। नभ सुमाला वृषभ सु पेखियै॥३३॥
गरुड़ कमल पताकाके विषैं। लसत चिन्ह सु लहकत ही दिखैं॥
वसु सु मंगल द्रव्य धरी तहां। धूपघट सुंदर सोहैं जहां॥३४॥

ॐ ह्रीं दूजीपीठअनेकरचनासंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पीठ तीजी नयन निहारियै। धनुष एक हजार सु धारियै॥
कही सूची सुंदर गायकें। धनुष चारि सु ऊंची पायकें॥३५॥

ॐ ह्रीं तीजी पीठकी सूची धनुष एककी हजार चारि धनुष ऊंचो संयुक्त समोशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बनि रहे वसु जान शिवान जू। रतनजड़ित सु निहचैं आनजू॥
लसत हैं जु कटहरा सोर जू। पीठ तीजी पर सु विचार जू॥३६॥

ॐ ह्रीं तीजीपीठमहासोभाकारिसंयुक्तसमवशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पीठ तीन सु ऊपर जानियैं। लसत गंधकुटी मन आनियैं॥
देखियै चौकोर निहारियै। बनि रही सुंदर सु विचारियै॥३७॥

ॐ ह्रीं तीनपीठऊपरगंधकुटीचौंकोरसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वाहा।

अड़िल्ल।

अवसो गंधकुटीको वरनन जानियै। लंबी छस्सै धनुष वृषभके मानियै॥
इतनीही चौड़ाई नैन निहारियै। नवसै धनुष उतंग जु यह मन धारियै॥

ॐ ह्रीं गंधकुटी संयुक्तसमोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥३८॥

तेइसके क्रम हानिजानि सुखकार जू फिरि कैसी है गंधकुटी सु विचारजू॥
सार सुगंध समूह पूरि तामे रह्यो। गंधकुटी यह नाम जानि तातैं कह्यो॥

ॐ ह्रीं तेइसजिनकेक्रमहानिसंयुक्तसमोशरणस्थजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वाहा॥३९॥

जहाँ विराजत श्रीजिनदेव सुहावने सो सुथानको वरनन सुनिगुणगावने॥

ज्ञान गम्य सो जान कहै को सारजू। वचन द्वारको बाँचै सो सुखकार जू॥

ॐ ह्रीं गंधकुटीसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४० ॥

गंधकुटीमें सिंहासन त्रय जानियैं स्वेत फटिकमय जानि हृदयमें आनियैं॥
नाना विधिके रतन जड़े तहाँ पेखियै लटकत घंटा आदिक नैनन देखियै॥

ॐ ह्रीं गंधकुटींसिंहासनसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वाहा ॥४१॥

सुंदरी छंद।

लसत सिंहासन पर सोहने। कमल सुर नरको मन मोहने॥
बरन लाल लसैं सुखकार जू। सहसपत्र विलोकि विचारजू ॥४२॥

ॐह्रीं सिंहासनपरकमलसहसपत्रसंयुक्तसमोशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घ० नि० स्वाहा।

कमल बीच किरणिका जानियैं। चारि अंगुल ऊंची मानियैं॥
लसत श्रीजिनराज विशालजू। करत पूजा इन्द्र त्रिकाल जू ॥४३॥
अंतरीछ विराजैं सार जू। नभ विषैं निहचैं उरधार जू॥

निराधार सु श्रीभगवान जू। जजत धन्य महा बुधिवान जू ॥ ४४॥

ॐ ह्रीं कमलऊपरचारिअंगुलअंतरीक्षसंयुक्तसमोशरणास्थितजिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा।

अड़िल्ल।

जैसी श्रीजिनदेव कांति तैसी कही। ताहीको भामंडल पूरि रह्यो सही॥
अब तीर्थंकर देव उँचाई जानियें। सो भाषत परमान हृदयमें आनियें॥

ॐ ह्रीं जैसाजिनतनतैसीहीकाँतिभामंडलसंयुक्त समोशरणास्थितजिनेंद्राय अर्घ०नि०॥४५॥

सवैया।

पांच साढ़ेचारि चारि साढ़ेतीन तीन ढाई, दोय डेढ़ एकसौ धनुष उर आनियैं।
नवै असी सत्तरि धनुष साठि जानियै पचास गानि पैतालीस चालिस प्रमानियै॥
पैतिस जु तीस अरु पचीस बीस पंद्रह दश सवाद्वै पौने द्वै धनुष सु पेखियै॥
चौबिस जिनेशकाय तुंगता दई बताय, भव्यजीव हियेलाय सीसनाय देखियै॥

ॐ ह्रीं चौवीसजिनतनउचाई सोभासंयुक्तसमोशरणस्थित जिनेंद्राय अर्घं निर्व० स्वा०।

चारि कोट बेदी पांच चौगुने जिनेशतें जु, ऊँचे कहे गाय भैया देखो मन लायकैं।
मंदिर जिनेशथान कोट बेदी द्वार जान, तूप मानस्थंभ घरें पर्वत बनायकैं ॥
कीड़ाके सु थान नृत्यशाला कल्प वृक्ष जानि सिद्धारथ वृक्ष सार सुंदरसु लीजियै
चारैकोठा बीच श्रीमंडफ विराजमान बारहगुणो ऊँचे जान देखि प्रभू जीजियै ४७

ॐ ह्रीं जिनतनतैं समवशरणकी रचनाऊँचाई प्रमाणसंयुक्त समोशरणस्थजिनेंद्राय अर्घं ।

अथ श्रीमंडफ पूजा प्रारभ्यते अडिल्ल ।

श्रीमंडफमे जान विराजैं देव जू । सुर नर पूजतपांय करैं नितसेव जू॥
हमपूजतशिरनायथहांकरिथापना, जजतजिनेश्वरपायलहैंगुनआपना॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ चतुर्विंशति जिनेंद्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् । आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं समोवशरणस्थ चतुर्विंशति जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)।
ॐ ह्रीं समवशरणस्थ चतुर्विंशति जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट्। (सन्निधी करणं

सुकारन पूजतु हों जय समवशरणमें जाय सुकारण पूजतु हों।
श्रीचौविस जिनके पांय सुकारन पूजतु हों। (अंचरी इसचालमें)

कंचनकी झारीमें भरिकैं उज्वल नीर सु लावौ।
जन्म जरा दुख नाशन कारन श्रीजिनचरन चढ़ावौ॥
सुकारन पूजतु हों जय समवशरणमें जाय सु०।
श्रीचौविस जिनके पाँय सुकारन पूजतु हों॥ १॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनेंद्राय जलधारा दीयताम् निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

केसरमें करपूर मिलैकें मलयागिरि सुखरासी।
चरन पूजि जिनराज प्रभूके भव आताप विनाशी॥
सुकारन पूजत हों जय समवशरणमे जाय सु०।
श्रीचौविस जिनके पांय सु कारन पूजत हों॥ २॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनेंद्राय चंदन अर्चयामि निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

देवजीर सुखदास सु अक्षत मुक्ताफल समआनौ ।
पुंज मनोहर जिनपद आगें देत अखैपद जानौ ॥
सुकारन पूजत हों जय समवशरणमे जाय सु० ।
श्रीचौविस जिनके पांय सु कारन पूजत हों ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनेंद्राय अक्षतान् समर्पयामि निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कमल केतुकी जुही चमेली बेल्हा सरस सुहावै ।
ले गुलाब जिनवर पद पूजौ काम नाशि शिवपावै ॥
सुकारन पूजत हों जय समवशरणमे जाय सु० ।
श्रीचौविस जिनके पाय कारन पूजत हों ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनेंद्राय पुष्पान् समपर्यामि निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

फेनी घेवर मोदक लाडू गोभा सरस [illegible]ते ।
चुधारोग निर्वारन कारन पूजत कर धर ताते ॥
सुकारन पूजत हौं जय समोशरणमे जाय सु० ।
श्री चौविस जिनके पांय सुकारन पूजत हौं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनेंद्राय नैवेद्यं समर्पयामि निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

मणिमय दीप अमोलक लैकरि बाती तुरत प्रजालौ ।
मोह तिमिर भहरात फिरै तहँ जग मग होत दिवालो ॥
सुकारन पूजत हौं जय समवशरणमे जाय सु० ।
श्रीचौविस जिनके पांय सुकारन पूजत हौं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनेंद्राय दीपं उद्योतयामी निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कृष्णागरु करपूर कूटिकैं धूप दशांगी खेवौ ।
अष्टकर्म छिनमाहिं सु जरिकैं छार हौंय प्रभु सेवौ ॥

सुकारन पूजत हौं जय समवशरणमें जांय सु० ।
श्रीचौविस जिनके पांय सुकारन पूजत हौं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनेंद्राय धूपं अग्निम् प्रजालयामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग सुपारी भारी पिस्ता नए चढावौ ।
कहत जिनेश्वर मुखतैं वानी तुमहूं सुर शिव जावौ ॥
सुकारन पूजत हौं जय समवशरणमें जाय सु० ।
श्री चौविस जिनके पाँय सु कारन पूजत हौं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनेंद्राय फलं समर्पयामि निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल अर्घ बनाय गाय गुण पढ़ि जयमाल सुनाचौ ।
तुच्छ बुद्धि 'भविलाल, पायके वांचत मन धरि सांचौ ॥
सुकारन पूजतु हौं जय समवशरनमे जाय सु० ।
श्री चौविस जिनके पायँ सुकारन पूजतु हौं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित जिनेंद्राय अर्घ्यं समर्पयामि निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

अथ जयमाल दोहा ।

समवशरणके बीचमें, श्रीमंडप सु विशाल ।
बीच विराजैं संभुजी 'लाल, भने जयमाल ॥१॥

त्रभंगीछन्द ।

जय जय गुण सुंदर नमत पुरन्दर धरम धुरंधर जगतपते ।
जग मगत सु ज्ञानं दुर नय भानं जोग निधानं देव नते ॥२॥

पद्धडि छन्द ।

जय चारि घातिया घात नमस्ते राग दोष द्वै टारि नमस्ते ।
केवल दरशन पाय नमस्ते परमौदारक काय नमस्ते ॥ ३ ॥
इंद्र पूजि आंनन्द नमस्ते पूजा करत सुछन्द नमस्ते ।
छीरोदधि जललाय नमस्ते नछन करत गुणगाय नमस्ते ॥ ४ ॥

वसु विधि द्रव्य चढ़ाय नमस्ते अस्तुति करत बनाय नमस्ते ।
सब देवन शिरताज नमन्ते गुणमंडित जिनराज नमस्ते ॥ ५ ॥
मोह महा हनि ब्रज नमस्ते भव्यनकों सुखदाय नमस्ते ।
पर परणति परिहार नमस्ते ज्ञान निधान सु भान नमस्ते ॥ ६ ॥
निस्पृह हो जगतें जु नमस्ते धरि समाधि वैराग नमस्ते ।
सिद्ध चिदानँद राय नमस्ते शिवमारग दरशाय नमस्ते ॥ ७ ॥
सुर नर मिलि नित ध्याय नमस्ते करुणासागर देव नमस्ते ।
असरन सरन जिनेश नमस्ते वचन दयारस लीन नमस्ते ॥ ८ ॥
हरि हर करि प्रभु पूजि नमस्ते लोका लोक विलोक नमस्ते ।
जय जय जग आधार नमस्ते सुर जय जय उच्चार नमस्ते ॥ ९ ॥
पंचाचार सु पाय नमस्ते इन्द्र सु अस्तुति गाय नमस्ते ।

फिर निजभाल नवाय नमस्ते मण्डितनृत्य सु ध्याय नमस्ते ॥ १० ॥
थेई थेई थेई धुनि होत नमस्ते जग मग जिनतन जोति नमस्ते ।
बाजत बीन मृदङ्ग नमस्ते दै परदक्षिण तीन नमस्ते ॥ ११ ॥
बहु विधि पुन्य उपाय नमस्ते जय जय जय सुखदाय नमस्ते ।
प्रातहार्य वसु पाय नमस्ते वृक्ष अशोक सु गाय नमस्ते ॥ १२ ॥
सुर बरषावत फूल नमस्ते.....
..... ॥ १३ ॥
बानी खिरत जिनेश नमस्ते गणधर झेलत वानि नमस्ते ।
तीन छत्र शिरधार नमस्ते ढोरत चौसठि चमर नमस्ते ॥१४॥
सिंहासन थिर देखि नमस्ते भामण्डल छवि पेखि नमस्ते ।
बाजत दुंदुभि द्वार नमस्ते श्रावग श्रावगनीय नमस्ते ॥ १५ ॥

देव असंख्याते सु नमस्ते गुण अनंत विख्यात नमस्ते ।
श्रावग सबसुखराय नमस्ते क्षमावान गुणवान नमस्ते ॥ १६ ॥
नय नय भाल नवाय नमस्ते तुच्छ बुद्धि 'भविलाल, नमस्ते ।
भव वारिधितैं तार नमस्ते यह विनती उरधार नमस्ते ॥ १७ ॥
दोहा । श्रीअर्हंत जिनेशकी, गूँथी सुभ जयमाल ।
जो पहिरै भवि कंठमें, तिनके भाग्य विशाल ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमंडफकेवलीसंयुक्ताय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अड़िल्ल ।

जो बांचै यह पाठ सरस मनलायकें । सुनै भव्य दै कान सु मन हरषायकें ॥
धनधान्यादिकपुत्रपौत्रसंपतिवरै, सुरनरकेसुखभोगिबहुरिशिवतियवरै ।

इत्यासीर्वाद-इति मण्डफ पूजा, सम्पूर्ण ।

अथ श्रीजिन विहार वरणन अड़िल्ल ।

समवशरणमें जानि जिनेश्वर देव जू। राजत गुणकी खानि करैंसुरसेवजू॥
नामकर्मके उदय विना इच्छा गनो। कालपाय स्वयमेव विहार समय भनो॥
इंद्र अवधिकरि जानि सुमनमें धारिकैं लोकरीति साधनके अर्थ विचारिकैं॥
ऐसें विनती करैं सु श्रीभगवानसों। वरनन ताको सार सुनो भवि कानसैं॥
हाथजोरि शिरनाय सु सनमुख जायकैं करत वीनती सारसुसुरधरिगायकैं॥
कहैं इन्द्र मुखवयन सुनो जिनराज जी बरतै समय विहारजानि महराजजी
कीजै तौ भविजीव लहैं आनंद कौं। धरैं परम वैराग हने विधि फंदकौं॥
श्रीजिनकरतविहारसरससोभारचीसमवशरणखिरिजातसुजयजयधुनिमची
जिस मारग भगवान चलें तहँ जानियैं। तिस मारगके दोऊ तरफ प्रमानियैं॥
षटऋतुके फलफूल फले तहँ पेखियै। उत्तम वृक्षनकी पंकति तहँ देखियै॥

भेद अठारै धान्य सरस सोभा धरैं । लसैं सरोवर कुंड वावरी सुख करैं ॥
तिनको उज्वल नीर पियैं सुख पाइयै। ऐसे थान सुथान देखि हरषाइयै॥

भुजंग प्रियात छंद ।

लसै सार सुंदर इसी भूमि दीसी। धरै क्रांतिभारी मनो आरसीसी॥
तहां देव नभतैं करैं वृष्टि भारी। परैं बूँद छोटी सुगंधितअपारी॥७॥
चलै सार सुंदर सुगंधित निहारौ। भली जो पवन जानिकैं सो विचारौ॥
गनो एक जोजन तहां भूमिकी जू। नहीं धूलि कंटक विलोकौ सुधीजू॥८॥
गनो एक जोजन दुतरफा लँवाई। कही कोटकी जानको सार भाई॥
दुऊकोटके बीच मारग सुहाई। सु चौंड़ो लखौ आध योजन सु गाई॥९॥
बने कोट दोऊ इसी भांति जानौ। चली द्वार पंकति सु धुर लौ प्रमानौ॥
धरैं रत्नमाला सु तोरन विराजैं भली झक झकारी दुतरफा सुछाजै।१०॥

तहां कोट बाहिर दुतरफा सु जानो। बहैं तोय उज्वल नदी दोय मानो॥
किनारे नदी खेत सुंदर सुहावैं। लसैं बन सु परवत तहां देव आवैं॥११॥
बने ताल बापी सु मंदिर प्रमानो। जड़े रत्न मणिमय भली भांति जानो॥
भली भांति रचना दुतरफा विचारो। करै बर्न ताको सु को कवि निहारो॥

सुंदरी छंद।

चलहिं तिस मारग भगवान जू। लसत ऊंचे इतने जान जू॥
समवशरण ऊंचाई पेखियै। चलहिं ऊंचे जिनवर देखियै॥१३॥
नभविषैं जिनराज चलें जहां। रचत जात कमल सुर सो तहां॥
कहिय पंकति पंद्रह भाषिकैं। कमल दोसौ पचिस राखिकैं॥१४॥
बीचको सु कमल उर धारियै। अंतरीक्ष जिनेश विचारियै॥
चारि अंगुल ऊंचे चलत हैं। मनुष कैसी डगभरि लहत हैं॥१५॥

दोहा-कोऊ नर ऐसौं कहैं, बिन इच्छा भगवान।
बैठैं उठैं सु डग भरैं, ताको उत्तर जान ॥१६॥
भगवानै इच्छा नहीं, यह तौ सत्य प्रमान।
पर अघातिया कर्म जे, रहे चारि उर आन ॥१७॥
यह कारन जिय लायकैं, मन वच काय त्रियोग।
यह लखिकैं निहचै करौ, विकलप टारि नियोग ॥१८॥

सुंदरी छंद।

मन प्रदेश सु चंचल पाइयै। खिरति वानी सुनि शिव जाइयै ॥
उठत बैठत डगभरि पेखियै। परम सुंदर जिनवर देखियै ॥१९॥
बहुत ग्रंथनमें बर्नन करो। सत्य मानि सु हृदयेमें धरो ॥
मुनि जु श्रावग श्रावगनी जहां। अरजिका सु मनुष चाले तहां ॥२०॥

और बहुत तिर्यंच निहारियै। चलत भूमि विषैं हित धारियै ॥
देव चारि प्रकार सु जानियैं। सरस विद्याधर सु प्रमानियैं ॥२१॥
चलत नमि जिन निकट विचारियै। जानि दूरि चले सु निहारियै ॥
इन्द्र आदिक जे बुधिवान जू। जिन समीप रहैं गुणखान जू ॥२२॥
करत सेवा जाहिं चले तहां। और देव घने नाचैं जहां ॥
पर जिनेश समीप न आवहीं करत जय जय जिनगुणगावहीं ॥२३॥
छत्र शिर धारैं सुर सार जू। चमर ढोरत देव निहार जू ॥
देव जय जय शब्द तहां करैं। चोबदार परम सोभा धरैं ॥२४॥
रतन जड़ित सु आसा हाथमें। विनय युक्त चलावैं साथमें ॥
कहत मुख बानी इत उत फिरैं पुनि सु अस्तुति जिनवरकी करैं ॥२५॥
देव जय जय कौतूहल करैं। सरस क्रांति सु तन सुंदर धरैं ॥

बजत वीन मृदंग समाजसौं। करत नृत्य सु सुर धरि गाजसौं॥२६॥
सरस ख्याल सु गावत भावसौं। परत झुर मुट मनके चावसौं॥
सरस थेइ थेइ थेइ धुनि ह्वै रही। बजत साज सु जिन अतिसय कही॥
जिन सु देव तने गुण गावते। चले जात सु पुन्य बढ़ावते॥
मुख सु ऊरधकों करिके तहां। जिन स्वरूप निहारत हैं जहां॥२८॥
बरन इत्यादिक उर आनियैं। जिन विहार समय परमानियैं॥
बहुत बरनन जानि विहारको। करत को कवि पावै पारको॥२९॥

दोहा—इंद्र हुकुमको पायकैं, समवशरण सुखदाय।
धनद देव पूर्वोक्त जो, रचो परम सुखपाय॥३०॥
श्रीमंडफमें बैठि जिन, वानी खिरै विशाल।
यह विहारवरणनकर्यो, सीसनाय सुभलाल॥३१॥

इति विहार वर्णन समाप्त।

अथ चक्रवर्ति नारायण समवशरण विषैं गमन करता भया वर्णन प्रारभ्यते।

अड़िल्ल।

श्रीजिनवरचौवीस करैं थिति जे जहां। थावरवृक्ष अनेक हियो हरष्यो तहां फलफूलन करि फूल रहे तहँ पेखिये। यहअतिसय जिनराजसु नैननदेखिये

दोहा—यह अतिसय दृग देखिकैं, बनपालक हरषाय।
धन्य भाग यह क्षेत्रके, आनँद अँग न समाय॥२॥

सुंदरी छंद।

तब सु वनमाली मन लायकैं। फल सु फूल लए कर जायकैं।
सर्वऋतुके फूल सु फल लए। चलि सु निज नृपके आगें गए॥३॥

दोहा—राजा अरु महराज नृप, अर्धराज पहिचानि।
नारायण त्रयखंडके, चक्रवर्ति उर आनि॥४॥

मंडलीक महमंडलीक नृप जानियैं। छहौखंड प्रतिपालक ते पहिचानियैं।
वर्तमान तीर्थंकर जो जो पाईयै। तिनहीके सम्बंध सु नृपहू गाईयै ॥५॥

सुंदरी छंद।

तहँ सु बनमाली हरषायकैं। धरि विनय करजोरि बनायकैं॥
धरत भेट सु आगूँ जायकैं। नमन करत सु मस्तक नायकैं॥६॥
कहत वानी मुखसौं बोलिकैं। परम हरषित हृदय सु खोलिकैं॥
तीनि लोक प्रभू जिनराज जी। सरस राजत हैं महराज जी ॥७॥
परम अतिसय यह सुखदाय जू। भव्य संबोधन मन लाय जू॥
समवशरण जिनेश्वर देवको। आइयो नृप सुर नर सेवको ॥८॥

दोहा—बनपालकके बचन सुनि, नृप हरषे मन लाय।
सिंहासनतैं उतरिकैं, सात पैड़ चलिजाय ॥९॥

नमस्कार जिनराजकौं, करत भए शिरनाय ।
जानि परोक्ष विचारिकैं, अरु अष्टांग नमाय ॥१०॥

अड़िल्ल ।

वस्त्राभूँषण तनमें पहिरैंहैं सही । दए लए वनपालक आनँदता लही ॥
आनँद भेरी नगर माहिं नृपने दई । सब परजा नृप साथ तुरत त्यारी भई ॥

दोहा—अपने माफक नर त्रियां, आभूँषण सिंगार ।
करत भए आनंदसौं, जय जय बचन उचार ॥१२॥

सवैया इकतीसा ।

धरैं सीस मुकट विशालकानकुंडलहैं, हार राजैं हियेमेंनिहारि लेखियतुहै
करमें कड़ा अनूप मूंदरी जड़ाव जड़ी, बाजूबंद बाहूमाहिं धरैं देखियतुहै
कपड़ामिही विशाल झलकेंशरीरलाल, सुंदर सुचलैचालि दृष्टि पेखियतुहै
देवन सी सूरत सु मूरति बनी विशाल, चले जात भूपसाथ नैन देखियतुहै

मानोरतिरानीरूपजितिलियोहैअनूप,नारिकोस्वरूप सोतौ नैनसोंनिहारियै
पायजेवपांयमाहिंचालिचलैहंसिनीकी, सीसफूलसीसमें विराजतसुधारियै
कर्नफूल कानमाहिं बेसर बनी स्वरूप , हार हियेमें अनूप सुंदरता पेखियै ॥
पहिरेजु चीरसारबढ़िके हियेबिचार,चलीरानीजूके साथऐसीनारिदेखियै ॥

दोहा—तहँ सब राजा आदि दै , भूषण बसन सम्हारि ।
मुकट सीस सोहैं अधिक , रतनन जड़े निहारि ॥१५॥

सुंदरी छंद।

सीसपै सु मुकट सुंदर लसैं। दिपति जोति सु नभ रविको हँसैं ।
सरस कोमल बागो पहरिकैं। दिपति सुंदर लेत सु लहरिकैं ॥१६॥
कामदेव सबीको जानियैं। मनहु जीति लई परमानियैं ॥
जानि ऐसे सुंदर राजईं। कहत मुखसौं जय जय गाजईं ॥१७॥

दोहा—सुंदर सरस पबित्र अति, अष्ट द्रव्य सुखदाय ।
गजऊपर असबार ह्वै, चले सु मन हरषाय ॥१८॥
दुखित भुखित जेते सु नर, तिनकों दान सु देत ॥
श्रजिनवरको पूजने, चले धरमके हेत ॥१९॥

अड़िल्ल ।

चक्रवर्ति महराज सु आगूं जानियैं। चलै सुदरशन चक्र सु तेज प्रमानियैं॥
निकसी ज्योति विशालसु नैनन देखियै,रबिकी प्रभाप्रहारि सरसता पेखियै
ता पीछैं पटविधिकी जानौ सैन जो,सुंदर सरस विचार दृगन भरि ऐन जो।
गज घोटकरथ प्यादे सरस निहारियै,सुरविद्याधर जानि सु हिये विचारियै।

विजयानी सेठानीकी चाल ।

कैसे हैं जी हाथी सरस सुहावने। सुंदरता जी कहत सु हमपै ना बने ॥
ते उन्नतजी अंजनगिरि मानो हँसैं अंवारीजी रतन जड़ित सुंदरलसैं॥२०॥

गजगाह सुजी पाखर सरस सुहावनी कलशा अरुजी धुजादिपैमनभावनी।
नानाविधिजीचित्र रचेमस्तगविषैं। अरुसुंड सु जी निरतकरतमानौदिखै॥
शुभ दंत सु जी दीखैं रतननसौं जड़े। ऐसे गजजी नृप असबारीमें खड़े॥
सुबरनकी जी संकरि पगमें पेखियै। काहूकें जी रूपेहूकी देखियै॥२४॥
घंटा धुनि जी फैलि रही नभमें कही भईबहिरी जी दशौंदिशा मानौसही।
अब बरनन जी कौलग गजको कीजियै ऐसे गजजी देखि दृगनसों जीजियै

सवैया इकतीसा।

सुंदर सुभग सार सोहत हिये निहारि, नानाभाति रंगधार घोटक सु पेखियै॥
जीनजड़े रतनलगामजड़ी हीरनसों, मानो रवि रथ छोड़िआए सो विशेषियै॥
हँसत समीरकौं सु चालि चलें आतुरजू, बजत मृदंग खुर सुंदर सु लेखियै॥
कारे पीरे सब्ज सेत लाल रंगहैं अनेक, सुंदर सु रूप धरैं नैननसैं देखियै॥२६॥

दोहा—कलँगी हीरनसों जड़ी, सीस विराजै सार ।
ऐसे अस्त्र सुहावने, नयनन मांझ निहार ॥२७॥

सुंदरी छंद ।

सरस सुंदर रथ तहँ जानियै । लगत पहिया चारि प्रमानियै ॥
रंग अरु चित्राम लसैं सही । परम सुंदरता देखत लही ॥२८॥
बनि रह्यो कलशा शिर सोहनो । फरहरात धुजा मन मोहनो ॥
बरनकौ लग रथको कीजियै । परम सुंदरता लखि जीजियै ॥२९॥

दोहा—प्यादे नाना भांतिके, वस्त्र सु पहिरें सार ।
सूर्यमुखी करमें धुजा, अरु हथियार निहार ॥३०॥

कुसुमलता छंद ।

सोलह सहस सु देव परम सुंदर सुखदाई ।
नाना विधिके वस्त्राभूषण पहिरि सुहाई ॥

धरैं सु रूप विशाल परम सुंदरता गाई ।
चले जात नृप साथ भले आनँदसों भाई ॥३१॥

दोहा । बैठि विमाननके विषैं , विद्याधर सुखलीन ।
चक्रवर्ति महराजके , आगें चले प्रवीन ॥३२॥
जै जै जै जिनदेवजी , जयवंतो जगमाहिं ।
ऐसे बचन उचारते , चले जात हरषांहिं ॥३३॥

विजयानी सेठानीकी चाल ।

इस भांति सु जी चक्रवर्ति आगूं सही ।
चले जात सु जी सोभत सुंदरता मही ॥
भली भांति सु जी विनय सहित पगकों धरैं ।
नाना विधि जी चलत चालि गतिकूं भरैं ॥३४॥

श्रीजिनवर जी होंय जबै तिस कालमें ।
नृप जानो जी होत भए जगजालमे ॥
इस भांति सु जी विभौ सहित बंदन चले ।
श्रीजिनको जी समवशरण देखत भले ॥३५॥
धनि भाग सु जी तिनहीको परमानियैं ।
जिनराज सु जी देखत दरश सु जानियैं ॥
ऐसे नृप जी छत्र धरैं शिर सोहने ।
शिर झिलत सु जी चमर सु नरमनमोहने ॥३६॥
ऐसी विधि जी सोभा सहित सु राजई ।
लखि दरशन जी समवशरण अघ भाजई ॥
गजतैं नृपजी उतरि सु भूपर आईयो ।

चले जात सु जी पहुँचि शिवान सु पाईयो ॥३७॥

दोहा। ऐसी विधि राजा सहित, सब नरनारि विचारि ।
श्रीजिन मानस्थंभको, देखो दरश निहारि ॥३८॥

सवैया इकतीसा ।

मानस्थंभपूजिकेंविलोकिचैत्यपरसाद, भूमिकोनिहारिकेंअशोकअर्णपाईये
कल्पवृक्ष भूमि देखि केवली दरश पाय, तूपहूकी पूजाकरि आगें चलि जाईये
समोशर्ण रचना विलोकिकें सबै निहारि, पहुंचि श्रीमंडफमें चित्रतहां लाईये
गंधकुटीमध्यसिंहासनपैकमलजानि, तीनिछत्र धरैं सीस सोभित सु गाईये

दोहा । अंतरीक्ष जिनराजको, दरशन देखो राय ।
नमन करो सिरनायकें, अस्तुति करत बनाय ॥४०॥

त्रिभुवन गुरुकी ढार ।

त्रिभुवन गुरु नायक जी शिवसुखके दायक जी ।

अघ घायक दरश विलोक्योमै सही जी ॥
तुम दरशन पायो जी भविजन मन भायो जी ।
जस गायो गणधरनै निजमुखतें सही जी ॥ ४१ ॥
सो वानी सोहै जी हम मनकों मोहै जी ।
जगपार उतारनकौं तुमही सही जी ॥
इन्द्रादिक ध्यावैं जी सुर पूजन आवैं जी ।
गुण गावैं तुमनाम तनो जसु जानियों जी ॥ ४२ ॥
धनि भाग हमारो जी तुम दरस निहरो जी ।
जग पार उतारौ बीनती मानियैं जी ॥
तुम सांचे स्वामी जी करुना निधि नामी जी ।
तुमनाम सदां हमरे मन आनियैं जी ॥ ४३ ॥

दोहा । तुम स्वामी तुमहीं गुरु, तुमहीं शिवसिरताज । त्रि०
पढ़ि प्रदच्छिना तीन दै, जय जय जय जिनराज ॥४४॥

अथ चक्रवर्ति बलभद्र नारायण कामदेव आदि दै अनेक राजा अरु भव्यजीव पूजा समवशरणमें करैं हैं यह वर्णन प्रारभ्यते दोहा ।

छहौ खंड त्रैखंड पति, भूप सु मन हरषाय ।
समवशरणमें जायकें, पूजत श्रीजिनराय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर सवौंषट् ।
ॐ ह्रीं समवशरणस्थजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं समवशरणस्थजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक कुसुम लता छन्द ।

पदमद्रहको नीर अनूपम कंचनभारीमें भरि लाय ।
श्रीजिनचर्न चढ़ावत भविजन जन्मजरा दुख दूरि सु जाय॥

तीनिखंड छहखंड भूप मिलि पूजत श्रीजिनवरके पांय ।
ताल मृदंग साज सब बाजत जय जय जय जिनवर सुखदाय ॥१॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थजिनेंद्राय जल धारा दीयताम् स्वाहा ।

केसर अरु करपूर मिलैकें रतन कटोरामे धरि सार ।
भव आताप विनाशन कारन श्रीजिनचर्न चढ़ावत गार ॥

तीनिखंड छहखंड भूप मिलि पूजत श्रीजिनवरके पांय ।
ताल मृदंग साज सब बाजत जय जय जय जिरवर सुखदाय ॥२॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थजिनेंद्राय चंदनं अर्चयामीति स्वाहा ।

देवजीर सुखदास अटूटे अक्षत सुंदर धोय बनाय ।
पुञ्ज धरों श्रीजिनवरके ढिक अक्षैपद पावों गुण गाय ॥

तीनिखंढ छहखंड भूप मिलि पूजत श्रीजिनवरके पांय ।
ताल मृदंग साज सब बाजत जय जय जय जिनवर सुखदाय ॥३॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थजिनेंद्राय अक्षतपुंजाम् करोमीति स्वाहा ।

कमल केतुकी बेल चमेली श्रीगुलाब सुंदर सुखकोर ।
श्रीजिनवर पद पूजत भविजन भाव सहित भाजै खल मार ॥
तीनिखंड छहखंड भूप मिलि पूजत श्रीजिनवरके पांय ।
ताल मृदंग साज सब बाजत जय जय जय जिनवर सुखदाय ॥४॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थजिनेंद्राय पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा ।

बाबर घेवर मोदक खाजे फेनी गोझा सरस सुहाय ।
श्रीजिनचर्ण चढ़ावत भविजन देखत छुधा सु दूरि पलाय ॥
तीनिखंड छहखण्ड भूप मिलि पूजत श्रीजिनवरके पांय ।
ताल मृदंग साज सब बाजत जय जय जय जिनवर सुखदाय ॥५॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थजिनेंद्राय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा ।

दीप रतनमय कनक रकेवी जगमग जोति सु होति विशाल ।

श्रीजिनचर्न चढ़ाय गाय गुण मोह तिमर भाजै ततकाल ॥
तीनिखंड छहखंड भूप मिलि पूजत श्रीजिनवरके पांय ।
ताल मृदंग साज सब बाजत जय जय जय जिनवर सुखदाय ॥६॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थितजिनेंद्राय दीपं प्रज्वालयामीति स्वाहा ।

कृष्णागरु वर धूप अगिनिमे खेवत भविजन मन हरषाय ।
अष्टकर्मके नाशन कारण श्रीजिनवर पद पूजत आय ॥
तीनिखंड छहखंड भूप मिलि पूजत श्रीजिनवरके पांय ।
ताल मृदंग साज सब बाजत जय जय जय जिनवर सुखदाय ॥७॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थितजिनेंद्राय धूपं दहनक्षेपयामीति स्वाहा ।

श्रीफल दाख छुहारे पिस्ता लौंग सुपारी लावौ जाय ।
भाव सहित श्रीजिन पद पूजै मुक्ति श्री पावै हरषाय ॥
तीनिखंड छहखंड भूप मिलि पूजत श्रीजिनवरके पांय ।

ताल मृदंग साज सब बाजत जय जय जय जिनवर सुखदाय ॥८॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थितजिनेंद्राय फलं समर्पयामीति स्वाहा।

जल चंदन धरि फूल मनोहर अक्षत नेवज दीप विशाल।
धूप श्रीफल अष्ट द्रव्य लै अर्घ चढ़ाय गाय गुणमाल॥
तिनिखंड छहखंड भूप मिल पूजत श्रीजिनवरके पांय।
ताल मृदंग साज सब बाजत जय जय जय जिनवर सुखदाय ॥९॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थितजिनेंद्राय अर्घं समर्पयामीति स्वाहा।

अथ जयमाल दोहा।

जय जय जय जिनराज जी, चौवीसो सु विशाल।
तिनपद बंदौं भावसौं, लाल भने जयमाल॥ १॥

पद्धड़ी छन्द।

सुर नर मुनि गुण गावत जय जय। श्रीआदीश्वर ध्यावत जय जय॥

अजितनाथ जिनराज सु जय जय । सब देवन शिरताज सु जयजय ॥२॥
संभव जिन जगनायक जय जय । गुण मंडित अघघायक जय जय ॥
श्री अभिनंदन देव सु जय जय । करत अमर गण सेव सु जयजय ॥३॥
सुमति सुमति दातार सु जय जय । भविजीवन सुखकार सु जय जय ॥
पदमप्रभु शिवदायक जय जय । मुकति बधू वर नायक जयजय ॥४॥
श्रीसुपार्श्व वर ज्ञान सु जय जय । लोकालोक सु जानि सु जय जय ॥
चंद्रप्रभु दुति चंद्र सु जय जय । पूजत पातिक मंद सु जयजय ॥५॥
पुष्पदंत परमेश्वर जय जय । पूजाकरत सुरेश सु जय जय ॥
श्रीसीतल जिनराज सु जय जय । छत्र सु तीन विराजत जयजय ॥६॥
श्रीश्रेयाँश जिनेंद्र सु जय जय । पूजत आय सुरेंद्र सु जय जय ॥
बजत दुंदुभी साज सु जय जय । वासुपूज्य जिननाथ सु जयजय ॥८॥

विमल शीस पर अमरसु जय जय । ढेलत चौंसठि चमर सु जय जय ॥
ज्ञान अनंतो पाय सु जय जय । श्रीअनंत जिनराज सु जयजय ॥९॥
धर्मनाथ पद परसत जय जय । शिव सुंदरिको दरसत जय जय ॥
शांति शांति करतार सु जय जय । भवि जीवनआधार सुजयजय ॥१०॥
कुंथुनाथ सुखकारन जय जय । श्री परमेश्वर तारन जय जय ॥
अर जिनवर जसवान सु जय जय । परमपुरुषगुणखानसु जयजय॥११॥
मल्लि महामलनाथ सु जय जय । शिव सुथानमे वास सु जय जय ॥
मुनिसुव्रत जगदीश्वर जय जय । सब विद्याके ईश्वर जयजय ॥१२॥
नमिजिनवर जिनराजसु जय जय । पूजत भवि शिरनाय सु जय जय ॥
नेमिनाथ रजमति वर जय जय । छोड़ी बंदि दयाधर जयजय ॥१३॥
श्रीपारश पद बंदत जय जय । तीनि योग आनंदित जय जय ॥

निज आतम हित कारण जय जय । वर्द्धमान भवतारक जयजय ॥१४॥
चौवीसौ जिनराय सु जय जय । पूजत मनवचकाय सु जय जय ॥
पावत शिवपद हाल सु जय जय । नमनकरत भविलाल,सुजजय ॥१५॥

घत्ता दोहा—चौवीसो जिनराजके, समवशरणमे जाय ।
नारायण षट खंडपति, पूजाकरी सु भाय ॥१६॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल ।

जो बांचै यह पाठ सरस मन लायकें । सुनै भव्य दै कान सु मन हरषाकैं ॥
धनधान्यादिकपुत्रपौत्रसंपति करै । नरसुरकेसुखभोगिबहुरिशिवतियवरै ।

आसीर्वाद । इति समुच्चय पूजा समाप्त ।

अथ वानी प्रकरन प्रारभ्यते दोहा ।

नरकोठा बैठे सबै, वानी खिरै सु जान ॥

सुनत भए आनंदसों, प्रश्नोत्तर पहिचान ॥ १ ॥
यह अतिसयजिनराजके,समवशरणमे जान ॥
भाष्यो गणधरदेवने, भलीभांति परमान ॥ २ ॥

सवैया इतीकसा ।

देखैं अंधबहिरेसुनैसुपंगुचलैंचाल,रोगीसोनिरोगहोयदुखीसुखीजानियैं ।
चिंताभयआरति न दीषैकाहूजीवनकें, आनँदसमूहहर्ष बहुत प्रमानियैं ॥
जीवहोंयबहुतजुजागैदीषैथोरीसोहू, तापैभीर नाहिंहोय नैनसों निहारियै।
समोशर्णमाहिंऐसीअतिसैविचारिनर, पूजियै जिनंदचर्न हृदयेंसु धारियै ॥

अथ दिव्यधुनि वर्णन प्रारभ्यते । दोहा ।

श्री जिनवर चौवीसके, समवशरणके माहिं ॥
या विधिसों वानी खिरै, सुन करि पातिग जांय ॥१॥

अडिल्ल ।

एक दिवश अरुरातितासुकेंजानियें । संध्या काल सुचारिहियेमेंआनियें ।।
तिनमेंछहछहघड़ीप्रभूवानीखिरै भविजीवनसुखदायसुनतपातिगहरै ।।२।
हलैंनाहिंजिनहोठसुजिययहजानियेंअरुअनाक्षरीशब्दजिनेशप्रमानियें ।।
निकसैधुनिसरबङ्गसहससुखकारजू सुरनरमुनिगनसुनतलहैंभवपारजू ।३।

दोहा–गाज होति आकाशमें , तैसो धुनिको सोर ।
सुनिकें सुर नर हरष करि , नाचत भविजन मोर ।।४।

सवैया इकतीसा

वानीकोनिमत्तपायजीवदेशदेशनके, जैसीभाषाबोलैंसोऊ समझैं बनायकैं
जैसो अभिप्राय होय पूछनेको जीवनकें,तैसोही अरथ जानि रहैं हरषायकैं।
जैसो उपदेश जोग जीवहोयताकौंतैसो, लागैउपदेशदेतिवानीसोबतायकैं
ऐसी वानी सार सोतौहृदयेंविचारिजीव, सुनतश्रवनसुखदाई सर्मपायकैं ५।

दोहा । जब धुनि श्रीजिनराजकी , सुनैजीव मन लाय ।
श्रवन सु इन्द्रीके निकट, अक्षर रूप सु गाय ॥ ६ ॥

पद्धड़ी छंद ।

सुनि समझैं जीव भले प्रकार । स्वयमेव सु जाने अर्थ सार ॥
मुख बोलैं जय जय बचन गाय । दृग देखि दरश आनंद पाय ॥७॥
जगमें जयवंते होहु देव । सुर नर इन्द्रादिक करैं सेव ॥
उपदेश पाय जगतैं सु पार । ते होत जीव आनंद धार ॥८॥

दोहा । समवशरण जिनराजके, श्रीमंडफके बीच ॥
दिव्यधुनि अतिसयकही, जान न पावैं नीच ॥९॥
ऐसे श्रीजिनराज पद, जग मग होत विशाल ॥
देखत शिवपद पाईये, 'लाल, नवावत भाल ॥१०॥

इति दिव्य धुनि समाप्त ।

अथ सभा नायक वर्णन प्रारभ्यते आद्दिल्ल ।

आदिनाथके भरथ सभा नायक भए बर्द्धमान जिनके श्रेणिक भूपति ठए
एक एक जिनवरके ऐसें जानियैं। प्रस्नोत्तरके करता परम प्रमानियैं ॥१॥

दोहा । एक एक जिनराजके, एक एक नृप जान ।
प्रश्न किये मनलायकें, साठि सहस परमान ॥ २ ॥
प्रस्नोत्तर जिनराज मुख, सुनिकें परमानंद ।
पायो सब जीवन भले, जय जय जय जिनचंद ॥ ३ ॥
ऐसे जिनपद कमलकूं, पूजत सबसुख हाल ।
तन मन बचन लगायकें, शीशनाय 'भविलाल, ॥ ४॥

अथ चौवीस जिन पूजा प्रारभ्यते सुंदरी छंद ।

फिरि सु इन्द्र प्रभू पूजा करैं। नाय शीश सु भक्ति हिये धरैं ॥
करत पूजा इन्द्र सु गायकें। हम यहां पूजत मनलायकें ॥१॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथ अष्टक कार्तिककी चालिमें ।

प्रानी चौवीसौ जिन पूजियै (इसे हरवेर पढ़ना होगा ।)
प्रानी पदम्द्रहको नीर लै , उज्वल ससिकी उनहार ।
प्रानी श्रीजिनचरन चढ़ायकैं , दुख जन्म जरा निरवार ॥
प्रानी इन्द्र सुरगतैं आयकैं , पूजत शिवनायक पांय ।
प्रानी चौवीसौ जिन पूजियै , प्रानी चौवीसौ जिन पूजियै॥ १ ॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनचरणोपरि जल धारा दारयामीति स्वाहा ।

प्रानी केशर अगरु कपूर लै , मलियागिरि गंध अपार ।
प्रानी श्रीजिनचरन चढ़ायकैं भवताप नाश निर्धार ॥ प्रानी० ॥

प्राणी इन्द्र सुरगतैं आयकैं पूजत शिव नायक पांय। प्रा०चौ० ॥ २॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्राय चंदनं चरचयामीति स्वाहा।

प्राणी अक्षत आछे लायकैं अनबीधे मोती आन।
प्राणी श्रीजिनचर्न चढ़ायकैं अक्षय पद पावै जान॥
प्रानी इन्द्र सुरगतैं आयकैं, पूजत शिवनायक पांय। प्रा०चौ०॥ ३॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्राय अक्षतपुंजामिकरोमीति स्वाहा।

प्राणी बेल चमेली केवरो इनआदिक फूल गुलाब।
प्राणी श्रीजिन चरन चढ़ायकैं कामवान मिटि जाय॥
प्राणी इन्द्र सुरगतैं आयकैं, पूजत शिवनायक पांय। प्रा०चौ० ॥४॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्राय पुष्पान् समर्पयामीति स्वाहा।

प्राणी फेनी घेवर आदि लै बहु भांतिनके पकवान।
प्राणी श्रीजिन चर्न चढ़ायकैं छुधा नशै दुखदानि॥

प्रानी इन्द्र सुरगतैं आयकैं, पूजत शिवनायक पांय। प्रा०चौ० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्राय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

प्राणी मनिमय दीप सुहावने सो जगमग जोति प्रमान।
प्राणी श्रीजिनचर्न चढ़ायकैं दीपै न मोह अज्ञान॥
प्राणी इन्द्र सुरगतैं आयकैं, पूजत शिवनायक पांय। प्रा०चौ० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्राय दीपं प्रज्वालयामीति स्वाहा।

प्राणी कृष्णागरु करपूरलै धरि धूप दशांग बनाय।
प्राणी श्रीजिनचर्न चढ़ायकैं वसु कर्म दए सु जराय॥
प्राणी इन्द्र सुरगतैं आयकैं, पूजत शिवनायक पांय। प्रा०चौ॥ ७॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्राय धूपं वह्नौ क्षेपयामीति स्वाहा।

प्राणी लौंग सुपारी लाइची बादम सु पिस्ता सार।
प्राणी श्रीजिनचर्न चढायकैं शिवफल पावैं सुखकार॥

प्राणी इंद्र सुरगतैं आयकैं, पूजत शिवनायक पांय। प्रा०चौ०॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्राय फलं समर्पयामीति स्वाहा।

प्रानी जल फल अर्घ बनायकैं जिनराज चढ़ावत लाय।
प्राणी आठौ कर्म विनाशिकैं 'भविलाल, सदां बलिजाय॥
प्राणी इंद्र सुरगतैं आयकैं, पूजत शिवनायक पांय। प्रा०चौ० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थचतुर्विंशतिजिनेंद्राय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा॥ ९ ॥

अथ जयमाल दोहा।

चौवीसो जिनराजकी, कही समुच्चय गाय।
जय जय जय जयमालयह, नित नित मंगलदाय॥ १॥

पद्धड़ी छंद।

जय चौवीसौ जिनराज देव। सुर नर इंद्रादिक करैं सेव॥
जय बलि बलि जाय नवाँय शीश। जय जय जय त्रिभुवन जगत ईश॥२॥

जय समवशरण तिनको रसाल । जय सुर निरमाप्यो बहु विशाल ॥ वि०
जय वृषभ आदि महवीर जान । क्रम हानि सु ऊपर कही मान ॥३॥
जय कर्मछार कीने जिनेश । सुरनर मुनि मिलि ध्यावत जिनेश॥
चौवीसौ जिन समवादि सर्न । सब संग विराजत सुनौ वर्न ॥ ४ ॥
जय गणधर चौदहसै विशाल । त्रेपन वानी झेलत त्रिकाल ॥
सब संगभेद गनि सात सार । अट्ठाइस लाख हृदयँ विचार ॥ ५ ॥
अरतालिस सहस कहे बखान । जो भिन्न भिन्न वर्नन सु जान ॥
जे नवसै सैंतिस सहस आन । पूरब धारी चालीस मान ॥ ६ ॥
जै वीसलाख सै पांच गाय । पचपन मुनि शिष्य हृदयँ सुलाय ॥
इक लाख सत्ताइस सहस गाय । धारैं जु अवधि छहसै सु लाय॥ ७ ॥
वसु सै पौने द्वै लाख जान । केवलज्ञानी जिनवर समान ॥ १३०

इक लाख सु पैंतालिस हजार। नवसै अरु पांच हृदयँ विचार॥ ८॥
परके मनकी जानत सु बात। जेधरैं विक्रिया सुनो गात॥
पैंतीस सहस द्वैलाख धार। नवसै जिनराज कहे निहार॥९॥
चौवीस सहस सै तीनि जान। इक लाख वाद जीतैं प्रमान॥
जे सात संघ भांषे सु गाय। जे सुनो अरजिका मन मिलाय॥१०॥
जे लाख चवालिस गनि हजार। चौरानवै जानि लिखौ सु धार॥
जे साढ़े छहसै धर्म लीन। जय लसैं अरजिका सुभ प्रवीन॥११॥
श्रावग अरतालिस लाख जान। जिन धर्म हृदयँ तिनके प्रमान॥
श्रावगनी छयानव लाख सार। मिथ्यात त्याग बैठीं निहार॥१२॥
जिनराज दरश देखैं विलोकि। उनहींके गुण मनमें सु धोकि॥
अनुबंध केवली लेहु जान। तेरहसै आठ कहे बखान॥ १३॥

ग्यारहसै व्यासी परम जान । गनि संत केवली हृदयँ आन ॥
गत सिद्धजती चौवीस लाख । चौंसठि हजार सै चार भांष ॥ १४ ॥
अनुउत्तर गति द्वै लाख जान । बसुसै सतहत्तरि सहस आन ॥
सौधर्म अनुत्तर गति मझार । इक लाख सहस गनि पंच सार ॥१५॥
वसुसै मुनि भांषि कहे जिनेश । चौवीस यक्ष भांषे मुनेश ॥
जे यक्षिनि चौबिस कहीं गाय । अबसिद्धक्षेत्र भाषूं बनाय ॥ १६ ॥
चंपापुरि पावापुरि निहार । गिरनार शिखर कैलाश धार ॥
सम्मेदशिखर जगमें महान । जे वीस जिनेश्वर मोक्षथान ॥ १७ ॥
जय एक वार बंदै जु कोय । तिर्यंच नरक गति तजै सोय ॥
चौवीसौ जिनसँग मोक्ष पाय । गनि ग्यारह सहस दए बताय ॥ १८ ॥
इक घाटि पांचसै कहै बीर । जिन संग मोक्ष पहुँचे सु धीर ॥

दिन चौदह वृषभ सु योग ध्यान । छह दिन श्रीवीर जिनेस मान ॥१६॥
वाइस जिन महिना वीस दोय । जिन जोग ध्यान जानो सु लोय ॥
सुभदिन जिन मोक्ष गए निहार । मोक्षासन सुनि मनमें विचार ॥ २० ॥
जय आदिनाथ जिन नेमिनाथ । जय वासुपूज्य भवि नमौ माथ ॥
पदमासन मोक्ष गए सु मान । जिन इकइस आसन ऊर्ध जान ॥२१॥
शिव जाय विराजे सुख अनंत । लोका अरु लोक विलोकि संत ॥
जय तिन गुण गावत हरष पाय । सुरनर थेइ थेइ मिलि करत जाय ॥२२॥
जय जय जयवंते होउ देव । इन्द्रादिक सब मिलि करैं सेव ॥
जय श्रावग सबसुखराय मान । गुणवान बड़े विरले सु जान ॥ २३ ॥
तिन मुखतैं वानी अर्थ पाय । सुभ छंद रचे अक्षर मिलाय ॥
पंडित पद सोधि धरौ बनाय । लखि तुच्छबुद्धि 'भविलाल, पाय ॥२४॥

दोहा—समवशरणको पाठ यह, जो बांचै मनलाय।
सम्यक सहित सु भावसों, सूधो शिवपुर जाय ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति जिन पूजा पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बांचै यह पाठ सरस मनलायकैं। सुनै भव्य दै कान सु मन हरषायकैं॥
धनधान्यादिकपुत्रपौत्रसंपतिकरै।नरसुरकेसुखभोगिवहुरिशिवतियवरै॥

इत्यासीर्वाद।

इतिसमवशरण पूजा विधान संपूर्ण।

अव समवशरण पूजापाठके बनावनेका कारण कहते हैं दोहा।

श्रीजिनराज जिनेशपद, जयवंतो जगमाहिं।
जे नर पूजैं भावसों 'लाल, सदां बलिजाहिं ॥ १ ॥

सवैया इकतीस।

समोशर्णपाठके बनावनेको कारन जो, सुनो भाई लोग हो बखानत विचारिकैं।
जैपुरसबाईमाहिं श्रावग पुनीत सोहैं, देखे जैन शास्त्र भलीभांति सो निहारिकैं॥

जातिके खँडेलवाल नाम टोड़रमल्लजानि देवगुरूशास्त्रकी विनय धरैं सह्यारिकैं।
देखिकें त्रिलोकसार गाथाको विचार कियो, कीनी देशभाषा बड़ीबुद्धिको सु पायकैं

दोहा। तीनलोक बर्नन करो, ग्रंथ विषैं सुखदाय।
समवशरण बरनन करो, ताके पीछैं गाय ॥ ३ ॥

सवया इकतीसा।

बानारसी दास सार श्रावग हिये निहार, तिनके सुपुत्रजान पुन्यके सु धाम जू।
सुखहीकी खानमानौ सर्बसुखनाम जानौ, श्रावगपुनीत बुद्धिपाय अभिराम जू॥
कोड़ाजिहानाबादके बसैया कर्म्मयोगपाय, आयकें सकूराबाद रहे प्रीति लायकैं।
देखि सभाशैली औरु धर्मको प्रकाश सार, रहैं प्रीतिलाय सोतौ आनँदकों पायकैं

दोहा। रहैं सकूराबादमें, पदमावति पुरवाल।
नाम गुलाब सु रायजी, धरैं दया सुखकार ॥ ५ ॥
पांच पुत्र तिनकों भए, बड़े चतुर गुणवान।

तिनमें एक सु लालजी, प्रघटे लाल समान ॥ ६॥

अड़िल्ल।

तिनसों सबसुखराय प्रीति बहुतै करैं। धर्मसनेह सुजान हरष हृदयें धरैं।
जिनमंदिरमें बैठि मतो कीनो जहाँ। समवशरण चित्राम नयन देखे तहां ॥७॥
बोले सबसुखराय सुनो तुमलालजी। समवशरणको पाठ बने सु विशालजी।
सब जीवन आनंद बढ़ै बहुतै सही। सुनो भव्य मनलाय हरष हृदयें लही ॥८॥

दोहा। तब सुनिकें सो लालजी, बोलत बचन विशाल।
तुम आज्ञातें काज यह, सफल होयगो हाल ॥ ९॥

अड़िल्ल।

बसैं सकूरावाद सु कन्हरदासजी। पदमावति पुरवाल रहैं सुखवासजी ॥
जुगलपुत्र तिनकें सु भए अभिरामजी। प्रथम लालजी जान केसरी नामजी ॥

दोहा। करैं लालजी सों अधिक प्रीति लालजी जानि।
बोले मन हरषायकें, सुनौ मित्र यह बानि ॥ ११॥

हम तुमसों यह कहत हैं, तुम दीषौ गुणवान ।
सबसुखराय पुनीतके, बचन करौ परवान ॥१२॥

पद्धड़ी छंद ।

ए बचन हृदयमें बहुविशाल । लागे तब बोले बचन 'लाल, ॥
धनि भाग्य हमारो भयो सार । तुम बचन भले भांषे सु धार ॥१३॥
श्रीसबसुखराय बड़े सु जान । तिनकी आज्ञा उरमें सु आन ॥
सब विधि हमकों दीनी बताय । हम छंद रचे सुंदर सुभाय ॥१४॥
श्री समवशरणको पाठ सार । कहिवेकौं काकी मति विचार ॥
पर भक्तिलीन भाषूं बनाय । श्रीपाठ सु पूरन कियो गाय ॥१५॥
दोहा । पूरन पाठ कियो जबै, तब बांचो भविलाल ।
सुनिकैं सबसुख रायजी, दई असीस विशाल ॥१६॥

सुखी होहु भव भव विषैं, लाल, लाल, जी दोय ॥
हम वांछा पूरन भई, सफल भए सुख होय ॥१७॥
सम्वत अष्टादश शतक, चौंतिस ऊपर जान ।
माघ अँधेरी अष्टमी, शुक्रवार परमान ॥ १८॥
पुस्तककी यह बीनती, ज्ञानीजन सुनिलेव ।
पावक पानीतैं बचै, मूरख हस्त न देव ॥ १९ ॥
कटि ग्रीवा अरु नैन कर, तन दुख सहत सु जान ।
लिखो जाय अति कठिनतैं, सठ जानत आसान ॥ २० ॥
जैसी पुस्तक मो मिली, तैसी दई छपाय ।
मोहि दोष मति दीजियो, लीजो शुद्ध कराय ॥ २१ ॥

कवि परिचय समाप्त ।

चारों कथा संग्रही भारामल्ल कृत, बड़े अक्षर मोटे कागज पर छपीं।

दानकथा...।≡) दर्शनकथा...।=) शीलकथा...।=) निशिभोजनकथा...≡)

पद्मनंदि पंचविंशतिका–वचनिकासहित.....५)
चारुदत्तचरित्र–भाषाचौपईबंधभारामल्लकृत...१)
भद्रबाहुचरित्र–भाषानुवाद सहित.....॥।=)
धन्यकुमारचरित्र–केवल भाषा वचनिका...॥।)
पंचमेरुनंदीश्वर-पूजनविधानभाषा टेकचंद कृत ॥=)
पंचकल्याणक-पाठ भाषा स्व०कमलनैन कृत ।≡)
पंचपरमेष्ठी-पूजनविधान भाषा टेकचंदकृत...।=)
सम्मेदशिखरमाहात्म्य–पूजनविधान सहित ।–)
ज्येष्ठजिनवरपूजा–और कथा समेत.....–)
मोक्षशास्त्र–(तत्वार्थसूत्र) भाषा छंद सहित पं० छोटेलाल कृत.....।–)
मोक्षशास्त्रमूल–आचार्य उमास्वामि कृत...–)॥
नेमिचंद्रिका–प्राचीन आसकरन कृत.....=)॥
राजुलपचीसी– विनोदीलाल कृत.....–)
बावुलपचीसी–विनोदीलाल कृत नेमिनाथ राजुलके प्रश्नोत्तरकी १२ मासी.....–)
नेमिनाथका – तेरहमासा और विवाह.....–)॥
बारहभावनासंग्रह- छै कवियोंके बनाई भावनाओं का संग्रह है.....–)॥
बारहभावना–मंगतराय कृत.....)॥
अष्टाह्निकाव्रतकथा–और रासो आराधना पाठ२४ भगवानके चिन्होंकीलावनी सहित–)।
भक्तामरस्तोत्र–संस्कृत और भाषा.....–।
पंचमंगल–रूपचंद कृत शुद्धपाठ.....–)
श्रीसम्मेदशिखर– पर्वतका फोटो तसवीरमे जड़वा कर दर्शन करिये.....–)
निर्वाणकांड–प्राकृत और भाषा महावीरस्वामीकी पूजा सहित.....)॥।
गुर्वावली–और मंगलाष्टक.....)॥।
शारदाअष्टक-औरसरस्वतीस्तवनशास्त्रभक्ति स०)॥
साधुवंदना–पं०बनारसीदास और भूदरदास कृत)॥
शिवपचीसी–और तेरहकाठिया.....)॥
ज्ञानपचीसी–और धर्मपचीसी.....)॥
बारहमासा–मुनिराज और नेमिनाथका.....)॥

वैराग्यभावना—और समाधिमरण............)॥
अहिक्षितविधान—पार्श्वनाथकी स्तुति २ तरहकी)॥
आदिपुराण—भगवज्जिनसेनाचार्य कृत मूल और पं० लालाराम कृत बचनिका सहित१६)
आदिपुराणसार—पं० बुद्धलाल कृत बचनिका ६)
उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य कृ० मूल पं० लाला रामजी कृ० बचनिका सहित................१०)
पद्मपुराण—पं० दौलतराम कृत बचनिका...१०)
हरिवंशपुराण—पं० दौलतराम कृत बचनिका...८)
शांतिनाथपुराण—सचित्र पं० लालाराम कृत बचनिका मोटे अक्षरोंमे संस्कृत सहित............६)
बृहद्विमलपुराण—ब्र० कृष्णदास कृ० मूल और पं० गजाधरलाल शास्त्रीय कृ० बचनिका सहित६)
रत्नकरण्डश्रावकाचार—स्व० पं० सदासुखलालजी कृ० बचनिका सहित............५॥)......५)

पार्श्वपुराण—भाषा बचनिका.............५॥)
मोक्षमार्गप्रकाश—भाषा टोडरमल्ल कृत......५)
पुण्याश्रवकथाकोष—भाषा बचनिका ५६ कथाओंका संग्रह..........................४)
प्रद्युम्नचरित्र—श्रीकृष्णनारायणके पुत्रकी कथा...३॥)
मल्लिनाथपुराण—भट्टारक सकलकीर्ति कृ० मूल पं० गजाधरलाल कृत बचनिका................४)
प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—भाषाकार..........३॥)
तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्ट अकलंकदेव कृ० मूल पं० गजाधरलाल कृ० बचनिका तीन खंडमे ४ अध्याय प्रत्येक खंडके.........४)
जैनागारप्रक्रिया—स्व० बाबा दुलीचंद कृ० सं० ३॥)
विद्वज्जनबोधक—प्र० भा० पं० पन्नालालजी दूनीवाले कृ०...............................२

पुस्तकें मिलने का पता—मालिक श्री जैन भारती भवन पो० बनारस सिटी।